ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)

फाल्गुन-चेत, संवत् नानकशाही ५४०-४१
मार्च 2009 वर्ष २ अंक ७

संपादक सिमरजीत सिंह *एम. ए., एम. एम. सी.*

सहायक संपादक सुरिंदर सिंह निमाणा *एम. ए. (हिंदी, पंजाबी), बी. एड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव
धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन : 0183-2553956-57-58-59

एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303
संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा ॥
संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥
जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा ॥
इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥
जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥
सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥
जिनी राविआ सो प्रभू तिंना भागु मणा ॥
हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥
चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥२॥ *(पन्ना १३३)*

पंचम सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में चेत्र मास की ऋतु और इसके साथ संबंधित क्रियाओं के बारे में संकेतक वर्णन करते हुए मनुष्य-मात्र को मनुष्य जीवन रूप वर्ष के इस कालखंड को, प्रभु-नाम-चिंतन-मनन द्वारा सफल करने का निर्मल उपदेश देते हुए गुरमति मार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि चेत्र मास में मालिक परमात्मा को स्मरण किया जाए तो बहुत ही गहरी प्रसन्नता मिलती है। इस समय यदि जिह्वा से अच्छे मनुष्यों की संगत करते हुए प्रभु-नाम जपा जाए तो मालिक स्वामी प्राप्त हो जाते हैं। जिसने ऐसा सुकर्म कर प्रभु को पा लिया है उसी मनुष्य का इस संसार में आया गणन किया जाए, चूंकि मनुष्य-जीवन का मूल प्रयोजन ही यही है :

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ *(पन्ना १२)*

गुरु पातशाह हरेक क्षण प्रभु-नाम को समर्पित करने का दिशा-निर्देश बख्शिश करते हुए फरमान करते हैं कि उस परमात्मा की पावन स्मृति के बगैर यदि एक पल भी जीया जाए तो सारा जीवन ही व्यर्थ हो जाता है। जो परमात्मा जल में, पुलाड़ में, आकाश में व्याप्त हो रहा है, यदि ऐसा मालिक मनुष्य को स्मरण ही न आए तो उसका कितना दुख होगा! दूसरी ओर जिन्होंने उस परमात्मा को स्मरण किया है उनके भाग्य बहुत ही भारी अथवा

महान हैं। ऐसे सुजनों को देखकर मन परमात्मा के दीदार की इच्छा-कामना करता है, मन में उसके दीदार की पियासा बनी है। चेत्र मास में जो मुझको उस मालिक से मिला दे मैं उसके चरण छू लूं!

बारह माहा मांझ की इससे पहली पावन पउड़ी जिससे इस पावन बाणी प्रारंभ होती है, यूं है :

किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥
चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥
धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥
जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥
हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥
जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥
स्रब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम ॥
प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥
नानक की बेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥
हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम ॥१॥ *(पन्ना १३३)*

अर्थात् हे परमात्मा! हम मनुष्य अपने कर्मों की कमाई के अनुसार अर्थात् सुकर्मों को निभाने में कुछ कमी रह जाने के कारण से आपसे बिछुड़े हुए हैं। सनम्र विनती है कि आप हमें अपनी मेहर करके अपने साथ मिला लो। चारों ओर तथा दसों ही दिशाओं में भटकने के उपरांत हम अंत में आपकी शरण में आये हैं। दूध देने से रहित गाय किसी काम नहीं आती। जल न मिल पाये तो वृक्ष अथवा पौधे की शाखा सिकुड़ जाती है। यदि असल मित्र प्रभु का नाम ही न मिल पाया तो आराम कहां? जिस घर अथवा हृदय में प्रभु-पति नहीं प्रकट होते वह घर अथवा हृदय भट्ठी जैसी दुखदायक प्रतीति देता है। प्रभु मालिक के बिना मनुष्य रूपी स्त्री का सारा शृंगार व्यर्थ है अथवा बाहरी दिखावे के सभी प्रयास निष्फल हैं, पान के बीड़े मनुष्य शरीर सहित झूठे हैं। मालिक के बिना बाहरी रूप से मित्र दीखने वाले सभी जन शत्रु हैं। ऐसी स्थिति में हृदय से एक ही विनती निकलती है कि हे स्वामी! कृपा करके अपना नाम बख्श दो। हे मालिक! मुझे अपने साथ मिला लेना, क्योंकि एक आप ही का नाम सदैव स्थिर है।

श्री अनंदपुर साहिब का होला महल्ला

हर पल अपने आप में नया है। जो प्रभु-नाम में मस्त है, जो इस शरीर को प्रभु-मिलन की बारी के रूप में लेता है, वह सारा जीवन ही हर्ष, चाव एवं उत्साह में सफल करेगा। चिंता, उदासी एवं निराशा के दुष्प्रभाव से वह बचा रहता है और जीवनयापन करता हुआ अपने जिम्मे लगा प्रत्येक आवश्यक कर्त्तव्य सही प्रकार से निभाता है। परंतु ऐसे कर्म-व्यवहार के धारक लोगों की इस संसार में संख्या किसी युग में भी अधिक नहीं रही। वे 'विरले केई केइ' के महाकथन के अनुसार बहुत ही चुनिंदा होते हैं। दूसरी प्रकार के जनसाधारण की जिंदगी में विशेष रूप से नवीनता, ताजगी, रंग और रस का संचार करने के उद्देश्य की पूर्ति करने हेतु हमारे बुद्धिमान अनुभवी पूर्वजों ने त्यौहारों का नियोजन किया। शायद हमारे देश भारतवर्ष के लोगों के जीवन में अधिक श्रम विद्यमान था जिसके परिणामस्वरूप यहां अन्य देशों-कौमों की तुलना में त्यौहारों की अधिकता हमारे दृष्टिगोचर होती है। हमारे अधिकतर त्यौहार जहां मौसम परिवर्तन के सूचक हैं वहां इनकी सांस्कृतिक या सभ्याचारक, ऐतिहासिक, लोकयानिक और नैतिक पृष्ठभूमि भी है। होली और होला महल्ला हमारे ऐसे ही त्यौहार हैं। होली देश में सदियों से मनायी जा रही है जिसका संबंध फाल्गुन मास की सुहानी ऋतु से है, जब हमारे इस भूखंड में अत्यंत कटु शीत हमसे विदाई पा लेती है और हम सुख-आराम का अनुभव करते हैं। होली के साथ प्रभु के सच्चे भक्त प्रहलाद की प्रभु द्वारा उसके अत्यंत दुष्ट व मनमुख पिता के क्रोधवश होकर दिये प्राणदण्ड से रक्षा का लोकयानिक प्रसंग जुड़ा हुआ है। बुराई की नौका भर कर ही डूबती है इसका स्पष्ट प्रमाण हमें होली से जुड़े हृण्यकश्यप और उसकी बहिन होलिका के प्रभु-इच्छा द्वारा संहार को स्मरण करते हुए मिलता है। होलिका की कुटिलता की पराजय का लोगों ने नाच-कूद कर और धूल आदि उड़ाकर जश्न मनाया जो होली कहलवाया। सही सोच के धारकों ने इसमें एक दूसरे पर रंग फेंकना शामिल किया तो होली रंगों के त्यौहार के रूप में विकसित हुआ। मानव वृत्ति में बुरी दिशा में जाने का जो रुझान है उसने रंगों के एक-दूसरे पर फेंकने में पूर्णत: खुशी के आदान-प्रदान के स्थान पर कई तरह की शरारतों की इसमें स्वीकृति करा दी और अत्यंत नुकसानदेय केमिकलों वाले रंग प्रयोग होने लगे। धूल उड़ाना, कीचड़ उछालना, टोलियां बनाकर बाजारों में खड़े होकर राहगीरों को कई तरह तंग करना होली का एक अभिन्न अंग ही मान लिया गया।

जब साहिबे-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने युग में लोगों को ऐसे अशोभनीय

ढंगों से होली मनाते हुए देखा-सुना तो अपने प्रिय सिख पंथ अथवा खालसा पंथ को होले महल्ले के रूप में खालिस खालसायी त्यौहार बख्शिश किया, जो जहां होली मानने के उस युग की कई प्रकार की गलत रीतियों से पूर्णत: रहित, स्वच्छ एवं निर्मल है वहां इसका मनाने का प्रचलित किया गया ढंग भी खालसा जी के बाहरी और अंतरीव वीर-रस संचारित करने वाली सूरत और सीरत के अनुकूल है।

होला महल्ला गुरु जी की अपनी देख-रेख एवं उनके नेतृत्व में खालसा पंथ की जन्मभूमि श्री अनंदपुर साहिब की पावन धरती पर सं. १७५७ बिक्रमी मुताबिक संवत् नानकशाही २३१ अथवा सन् १७०० ई में मनाया जाना प्रारंभ हुआ। अपनी खालसा फौजों को चुस्त-दुरुस्त, क्रियाशील रखने, उनमें प्रत्येक ललकार भरी परिस्थिति से निपटने के लिए तैयार-बर-तैयार रहने को और भी सुनिश्चित करने के उद्दश्य की पूर्ति करने हेतु गुरु जी ने सिंघों को दो दलों में विभाजित किया। एक को किला होलगढ़ पर रक्षक रूप में तैनात करके दूसरे दल को किले पर धावा बोलने का हुक्म किया। दोनों दलों को पहचान-चिन्ह के रूप में अलग खालसायी रंगों की वर्दियां प्रदान की गई थीं। इतिहास में उल्लेख मिलता है कि आक्रमणकारी निश्चित किया गया दल विजयी हुआ जिसको गुरु जी ने सम्मानित किया। दोनों दलों के सिंघों को कड़ाह प्रसाद जी भर छकाया गया। यह ज्ञात हो कि इसमें तीर कमान आदि शस्त्रों के प्रयोग पर गुरु जी की ओर से प्रतिबंध लागू किया गया था।

दशमेश पिता द्वारा बख्शिश किये गए खालसायी होले महल्ले की परंपरा को गुरु के साजे-निवाजे खालसा पंथ ने अनंदपुर की धरती पर एक अमूल्य धरोहर के रूप में संभालने हेतु हरेक संभव प्रयत्न किया है। प्रत्येक वर्ष मार्च मास में सिख संगतें अत्यंत तीव्र उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा करने लगती हैं कि कब होले महल्ले का दिन आये और वे श्री अनंदपुर साहिब पहुंच कर साहिबे-कमाल गुरु जी के पावन दरबार की हाजरियां भरें। इस होले महल्ले की छवि ऐसी निराली है जो देखने से ही अनुभव हो सकती है, इसको स्थूल शब्दों में बांधना मुश्किल है। तख्त श्री केसगढ़ साहिब से आरंभ किया जाता नगर कीर्तन किला होलगढ़ पहुंच कर संपूर्ण होता है। बहुत भाग्यशाली हैं वे संगतें जो इस नगर कीर्तन में शामिल होती हैं। हम सभी को भी होले महल्ले के अवसर पर श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर पहुंचने की शुभ इच्छा मन में उत्पन्न करनी चाहिए। इस वर्ष भी ११ मार्च के होला महल्ला बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस ऐतिहासिक एवं खालसायी त्यौहार में जो संगत पहुंच पाने में सक्षम होगी उनके जीवन में नयी उमंग, नयी तरंग, नया जोश एवं नया उत्साह संचारित होना सुनिश्चित है।

रहस्यवाद : गुरबाणी संदर्भ

*-स. दलजीत सिंघ**

विश्व की धार्मिक परंपरा में अनेक विचारधाराएं निर्मल झरणों की भांति अनुभवी महापुरुषों के हृदय से प्रवाहित हुईं। इन विचारधाराओं के प्रवाह से मानव-जाति कृत-कृत हुई। परन्तु समय के प्रवाह ने नई चुनौतियां पैदा करके मानव-जाति के आराम और मानसिक संतुलन को प्रभावित ही नहीं किया बल्कि अज्ञानता और अस्थिरता जैसी भयंकर बीमारियां इसकी झोली में डालकर दुख का कारण बनती रही हैं। जब अशान्ति और अस्थिरता अपने यौवन पर थी तो धरती की पुकार पर परमात्मा ने गुरु नानक साहिब जैसी पवित्र आत्मा को अपना तेज-प्रताप देकर मानव-कल्याण हेतु भेजा। गुरु नानक साहिब मानव-जाति की सभी समस्याओं का समाधान लेकर प्रकट हुए। धरती ने पाप के बोझ को समाप्त होते हुए महसूस किया और उस निरंकार के धन्यवाद में रुचित हुई।

आध्यात्मिक जगत में भी गुरु साहिब के आगमन से नई क्रान्ति हुई। समाज से सत्यवादी पुरुषों का वन व पहाड़ों की तरफ पलायन बाधित हुआ और गृहस्थ में परमेश्वर की प्राप्ति का रास्ता खुल गया। गुरु जी ने अपनी उदासियों (जीवन-यात्राएं) के दौरान विभिन्न धर्म-स्थलों पर सिद्धों, योगियों और अन्य धार्मिक नेताओं के साथ भेंट करके प्रभु के शुद्ध संदेश का प्रसार व प्रचार किया। गुरु जी ने संवाद का मार्ग चुना, किसी के साथ झगड़ा नहीं किया। उनकी बात सुनी और अपनी बात सहज उनको समझाकर आगे निकल गए। गुरु जी ने धरती पर संपूर्ण क्रांति का बिगुल बजाया, जिससे कोई भी हिस्सा अछूता नहीं रहा। हम अपनी चर्चा में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की रहस्य-अनुभूति को संक्षेप में विचारने का यत्न शामिल करके गुरमति रहस्यवाद से रूबरू होने का प्रयास करेंगे

रहस्यवाद बहुत गंभीर विषय है। यह वास्तव में अनुभव-आधारित है, परन्तु बौद्धिक चिंतन के माध्यम से इसको समझने का प्रयास लंबे समय से चिंतकों द्वारा होता रहा है और इसमें कोई शक नहीं है कि इसके सार्थक परिणाम भी निकले हैं। रहस्यवाद को परिभाषित करते हुए प्रो. दर्शन सिंघ लिखते हैं : "प्राभौतिक शास्त्र बुद्धि के माध्यम से सत्य का ज्ञान प्राप्त करने का यत्न है, जबकि रहस्यवाद बुद्धि से आगे अंतर-ज्ञान एवं अनुभूति के माध्यम से सत्य में विलीन होने की क्रिया है।"[१] बुद्धि स्थूल के ज्ञान को प्राप्त करने की सामर्थ्य तो रखती है परन्तु अनुभूति को जान पाना इसके वश में नहीं। इससे यह तात्पर्य भी नहीं कि रहस्यवाद को बौद्धिक चिंतन के माध्यम से समझने का प्रयत्न ही न किया जाए। परंतु इसके साथ ही यह स्पष्ट ज्ञात होना चाहिए कि यह आत्म-तत्व से संबंधित होने के कारण स्थूल ज्ञान से स्वाभाविक ही दूरी रखने वाला दिखाई पड़ता है। इसलिए श्री राम कुमार वर्मा का यह कथन सत्य से परिचय करवाता हुआ प्रतीत होता है : "रहस्यवाद जीवात्मा की उस अन्तरहित प्रवृत्ति

*लेक्चरार (धर्म अध्ययन), शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज, पुतलीघर, श्री अमृतसर। मो. ९८७८३-७१३४५

का प्रकाशन है जिसमें वह दिव्य एवं आलौकिक शक्ति में अपना शांत व निरछल संबंध जोड़ना चाहती है और वह संबंध इतना गहरा जाता है कि दोनों में कोई भेद नहीं रहता।"[२]

रहस्यवाद अपने मौलिक स्वरूप से कोई धर्म नहीं, परन्तु सूक्ष्म चिंतन वाली बुद्धि इसे धर्म से अलग नहीं मानती। वास्तव में रहस्यवाद धर्म की आधारशिला के समान है। बड़े अफसोस की बात है कि अल्प बुद्धि वालों ने इसे धर्म के लिए खतरा जानकर लम्बे समय तक इसका विरोध जारी रखा। इस्लामिक रहस्यवाद के रूप में उभरी सूफीयाना "तस्वूफ" की लहर का लम्बे समय तक चला विरोध इसका ज्वलंत उदाहरण है। मनसूर जैसे रहस्यवादी साधकों का सूली पर चढ़ाया जाना इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। कुछ विरोधाभास के बाद रहस्यवाद अपनी सार्थकता को स्थापित करने में कामयाब रहा है। यह कोई कल्पनात्मक विषय नहीं और न ही सूक्ष्म बौद्धिक चिन्तन की उपज है। इसका वास्तविक आधार अनुभूति-ज्ञान है। यह ज्ञान साधना के प्रतिफल के रूप में प्राप्त होता है। यह मानवी हृदय की करुणामयी संवेदना से फूटी वह निर्मल धारा है जिससे शान्ति व स्थिरता स्थापित होती है। मन निरविचार, निरविहार होकर सत्य से परिपूर्ण हो जाता है। आत्म-तत्व अपने मूल में समा जाता है। इसकी जन्मों-जन्मों की यात्रा विराम हासिल करती है। रहस्यवादी चाहे किसी धर्म-जाति या सम्प्रदाय से संबंधित क्यों न रहे हों वास्तव स्वाद सभी ने एक जैसा ही चखा है। जब भी कोई अपने अहं को परास्त करके सत्य तक पहुंचा तो वह आश्चर्यजनक नज़ारा सबके लिए एक जैसा ही रहा, जिसे रहस्य अनुभूति का नाम दिया जाता है। गुरबाणी के संदर्भ में रहस्यवाद का अध्ययन करते समय यह बात स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब रहस्यवाद की वे खान हैं जिसमें कभी कमी आने वाली नहीं। इस पावन ग्रंथ की यह सबसे बड़ी खासियत है कि इसमें भारत के सर्वोच्च संतों की बाणी को भी गुरु साहिबान की बाणी के साथ सुशोभित किया गया है। यह कार्य सिर्फ सबको एक समान वाली भावना की वजह से नहीं किया गया बल्कि इसका सर्वोत्तम सत्य इस बात से परिचित करवाने के लिए कि रहस्यवाद अपने असली रूप में एक अनुभूति के रूप में ही प्रकट होता है। प्रभु से मिलने वाले चाहे समाज के किसी वर्ग से संबंध रखते हों वास्तव में उनमें समानता होती है। वे कण-कण में प्रभु की उपस्थिति का अनुभव करके सर्वकल्याण के लिए यत्नशील होते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पूर्ण बाणी रहस्यवाद का वह विस्मयी चित्रण है जिसमें जीव-आत्मा आत्मविभोर होकर सत्य को प्राप्त करने योग्य बन जाती है। आत्मानुभूति मनुष्य जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है और इस अनुभूति से जो गुजर चुके हैं उनका उपदेश रहस्यवाद की बुनियाद है। भक्त कबीर जी का यह वचन कि प्रभु! तेरा नाम लेने से मैं तू (प्रभु) हो गया हूं। मेरे अंदर से अहं समाप्त हो गया है, जिसकी वजह से मैं तुझसे अलग अपनी हस्ती महसूस कर रहा था। अब आत्म-चिंतन से यह भ्रम दूर हो गया है और जिस तरफ भी मैं देखता हूं तू ही नज़र आता है :

कबीर तूं तूं करता तू हूआ मुझ महि रहा न हूं ॥
जब आपा पर का मिटि गइआ जत देखउ तत तू ॥ *(पन्ना १३७५)*

गुरबाणी रहस्यवाद की सम्पूर्ण परिभाषा पेश करती है। गुरु नानक साहिब यह बात दावे के साथ कहते हैं कि प्रभु की अनुभूति का स्वाद बयान करने योग्य नहीं, यह चखने वाला ही

जानता है। इसे संकेत मात्र समझाया जा सकता है, जैसे गूंगे ने गुड़ खाया तो वह बताएगा क्या?

जिन चाखिआ सेई सादु जाणनि जिउ गुंगे मिठिआई ॥ *(पन्ना ६३५)*

उसकी खुशी, स्वाद चखने के बाद वाली उसके चेहरे की रंगत देखकर ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि उसे क्या महसूस हुआ होगा। गुरबाणी जीव के सत्य से संबंधित सारे सवालों का समाधान करके उसे सत्य में विलीन होने की प्रेरणा से भर देती है। रहस्यवाद अनुभूति के माध्यम से प्रकट होकर शबद-रूप धारण करके प्रेरणा रूप में हृदय में प्रवेश करता है और एकरस चिंतन व मनन के माध्यम से सत्य में स्थिर होने का मार्गदर्शन करता है। गुरबाणी रहस्यवाद की तात्विक उपज है। इसकी गवाही श्री गुरु रामदास जी बयान करते हैं कि यह बाणी तात्विक ज्ञान से भरपूर अमर कर देने वाली है। इससे अमरत्व की प्राप्ति गुरु के सन्मुख होने से होती है। इस तात्विक बाणी के हृदय में बसने से हृदय-कमल प्रकाशमान हो जाता है, जिससे जीव-आत्मा परमतत्व में विलीन हो जाती है :

अंम्रित बाणी ततु है गुरमुखि वसै मनि आइ ॥
हिरदै कमलु परगासिआ जोती जोति मिलाइ ॥
(पन्ना १४२४)

आश्चर्यजनक बात यह है कि जीव अपने मूल से अलग होकर जिस खुशी को बटोरने में व्यस्त अपनी पूरी ताकत से यत्नशील है, यह क्षण-मात्र ही सकून उपलब्ध करवाने की योग्यता रखती है। वास्तिवकता तो यह है कि उससे सकून क्षण भर का और बेचैनी व अस्थिरता जन्मों की प्राप्त होती है। यही कारण है कि आदि से मनुष्य बेचैनी और आत्म-पीड़ा के इस बोझ को उतारने के लिए यत्नशील रहा है। उसने तप, साधना, हठ, योग, मनन, चिन्तन, सुमिरन आदि के माध्यम से तात्विकता को हासिल करने का प्रयत्न किया है। गुरबाणी जीव की इस खोज के लिए ताकत भी बनती है और मार्गदर्शक भी। गुरु वह मार्गदर्शक है जो अन्धकारमयी रास्ते को प्रकाश से भरकर भयंकर व कष्टदायक पीड़ा से बचा लेता है। जैसे गुरु साहिब कहते हैं कि इस संसार रूपी भयंकर जंगल में हरि का नाम साथी के रूप में मिला है। यह नाम जिस गुरु से प्राप्त हुआ है, जिसकी वजह से मेरी कामना पूरी हुई है, मैं उससे कुर्बान जाता हूं :

बनि भीहावलै हिकु साथी लधमु दुख हरता हरि नामा ॥
बलि बलि जाई संत पिआरे नानक पूरन कामां ॥ *(पन्ना ५१९)*

गुरबाणी के मार्गदर्शन से जीव दैवी ज्ञान को प्राप्त करके संसार की विषम दावाग्नि (सत्य प्रति अज्ञानता) को जीत सकता है। रहस्यवाद इसी जीत का प्रतिफल है। जब आत्मा परम सत्य से साक्षात्कार करती है तो उसी सत्य का रूप धारण कर लेती है। गुरबाणी में इस रहस्य को ज्योति में ज्योति के समा जाने की प्रक्रिया के माध्यम से समझाने का प्रयत्न किया गया है। गुरु साहिब का कथन है कि जब आत्म-तत्व (जीव) परमात्म-तत्व (परमात्मा) में विलीन हो जाता है तो वह सम्पूर्ण हो जाता है। इसका यह विलय ज्योति का ज्योति में समा जाना ही है। प्रभु प्रकाश का भंडार है। जीव उससे आंशिक प्रकाश (आत्मा) लेकर संसार की यात्रा पर निकलता है और उसके चिंतन से फिर उसी में समाकर सम्पूर्ण हो जाता है। यही रहस्यवाद की सूक्ष्म सच्चाई और अटल सत्य है :

जोती जोति रली संपूरनु थीआ राम ॥
(पन्ना ८४६)

जब मनुष्य संसार से निरंकार की ओर

उन्मुख होता है तो उसके जीवन व चिंतन में यह बदलाव एक असाधारण क्रिया के रूप में प्रवाहित होता है। यह उसके भाग्य के जागने का संकेत है। उस समय व घड़ी की कोई कीमत नहीं आंकी जा सकती। केवल उस कृपालु प्रभु के धन्यवाद में रुचित होने को मन उतावला हो जाता है। यह प्रभु की कृपा ही है कि उसने सच्चे गुरु की शरण में जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त करवाया। गुरबाणी में ऐसे शुभ अवसर को शुभ संकेत करार देते हुए उससे कुर्बान, बलिहार होने की प्रेरणा दी गई है। साथ में यह भी दृढ़ करवाया गया है कि प्रभु ने अपनी कृपा से ही पूर्ण गुरु से भेंट करवाई है :

कुरबाणु जाई उसु वेला सुहावी जितु तुमरै दुआरै आइआ ॥
नानक कउ प्रभ भए क्रिपाला सतिगुरु पूरा पाइआ ॥ (पन्ना ७४९)

साधक के लिए सच्चे गुरु की प्रेरणा से प्रभु-मिलन का सौभाग्य प्राप्त होना मंजिल की प्राप्ति है। इसमें साधक की अपनी कोई हस्ती नहीं रहती। यह बूंद का सागर में विलय, ज्योति का ज्योति में पूर्ण मिलाप है। गुरबाणी में इस तथ्य को इस रूप में परिभाषित किया गया है:

जिउ जल महि जलु आइ खटाना ॥
तिउ जोती संगि जोति समाना ॥ (पन्ना २७८)

रहस्यवाद का मूल लक्षण प्रभु-रूप हो जाना ही पूर्ण सार्थक है। इससे नीचे वाली किसी दर्जाबंदी को रहस्यवाद का नाम नहीं दिया जा सकता। श्री राम कुमार वर्मा के अनुसार "शुरुआती दौर में आत्मा और परमात्मा चाहे दो अलग-अलग हस्तियां प्रतीत होती हैं, परन्तु जब आत्मा का परमात्मा में विलय हो जाता है तो परमात्मा के गुणों का प्रवाह आत्मा में इतनी तेजी से होता है कि आत्मा के गुण लुप्त हो जाते हैं और परमात्मा के गुण प्रकट हो जाते हैं। वास्तव में यही संबंध रहस्यवादियों का परम लक्ष्य है।"[३]

गुरमति रहस्यवाद जीव-आत्मा की परमात्मा में सम्पूर्ण स्थापित को सर्वोपरि मानता है। यह जीवन की आत्म-चेतना को प्रकाशित करके सत्य में विलीन होने के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। रहस्यवादी इस अवस्था में सत्य के प्रति पूर्ण केंद्रित होने के कारण अडोल रहता है। दूसरी कोई भी वासना उसको छूने का साहस नहीं कर पाती। ऐसी चेतना को ही आध्यात्मिक शब्दावली में इंद्रियातीत कहा गया है। आधुनिक शब्दावली में इसे जागृत नाम दिया गया है। श्री परशुराम चतुर्वेदी के शब्दों में "ऐसी अवस्था में ही शुद्ध चेतना होती है और इसी की अनुभूति को ही रहस्यानुभूति, सवैनुभूति, ईश्वरानुभूति अथवा निरवाण जैसे नाम दिये जाते हैं।"[४] गुरबाणी रहस्यवादी गुण से परिपूर्ण वह परम सत्य है जिससे प्रेरणा लेकर जीव-आत्मा परमात्म-मिलन का आनंद प्राप्त कर सकती है। संसार की रहस्यवादी परंपरा में इसका महत्वपूर्ण योगदान कभी भी अस्वीकार्य नहीं होगा। धर्म-साधना के क्षेत्र में आशा की तलाश में भटकते हुए जीवों के लिए यह उस अमृतमयी झरने की तरह है जिसकी कण मात्र प्राप्ति से शान्ति मिल जाती है, अमरत्व की प्राप्ति हो जाती है।

संदर्भ सूची :

१. प्रो. दर्शन सिंघ, धर्म अध्ययन और सिक्ख अध्ययन, पंजाबी युनीवर्सिटी पटियाला, २०००, पन्ना ११.

२. श्री राम कुमार वर्मा, कबीर का रहस्यवाद, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, आठवां संस्करण, १९५५, पन्ना ८६७

३. श्री विजेन्द्र स्नातक (संपा.), संत कबीर, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९७०, पन्ना ७९

४. श्री परशुराम चतुर्वेदी, रहस्यवाद, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, प्रथम संस्करण, १९६३, पन्ना ९७

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का व्यवहारिक नीतिशास्त्र

-डॉ. वीना आनंद

नीतिशास्त्र मानव-व्यवहार का मानिकी अध्ययन है। यह मनुष्य को उन सिद्धांतों का ज्ञान प्रदान करता है जो सद्गुणों के रूप में धारण करने योग्य है। व्यवहारिक नीतिशास्त्र नैतिकता को व्यवहारिक जीवन में लागू करने का नाम है। व्यवहारिक नैतिकता समाज में बढ़ रहे अनैतिक संकट से उपजा विज्ञान है। यह मनुष्य को उसके चरित्र, व्यवहार, जीवन के परम उद्देश्य, उसके सामाजिक जीवन के पक्ष के बारे में चेतन करता है, मानव को जीवन के मूल्यों के बारे में जागृत करता है, क्योंकि इन मूल्यों के कारण ही मनुष्य महत्वपूर्ण है। नैतिकता के सैद्धांतिक पक्ष के साथ-साथ उसे व्यवहार में अपनाना भी अनिवार्य है। इसलिए मनुष्य का यह कर्त्तव्य बनता है कि वह इन मूल्यों को बनाए रखे और इनसे सम्बंधित हो रहे अनैतिकता के हमलों का डट कर मुकाबला करे। जब नीतिज्ञ इन मूल्यों को बचाने के लिए भरपूर प्रयास करते हैं तब उनकी क्रियाओं के उद्देश्य को व्यवहारिक नीतिशास्त्र कहा जाता है।

व्यवहारिक नीतिशास्त्र जीवन से सम्बंधित नीति विज्ञान है। सैम्युल गोरोविट्ज के अनुसार व्यवहारिक नीतिशास्त्र जीवन, विज्ञान और स्वास्थ्य विज्ञान के क्षेत्र में मानवीय आचरण का व्यवस्थित अध्ययन है। यह अध्ययन नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों के संदर्भ में किया जाता है। व्यवहारिक नीतिशास्त्र की समस्याओं का उदय, वैज्ञानिक उन्नति के कारण चिकित्सा विज्ञान और तकनीकी उन्नति मानवीय मूल्य तथा सिद्धांतों पर प्रभाव पड़ने से होती है। १६७० में अमेरिकन जीव विज्ञानी Van Renesseleor Potter ने Bio Ethics के प्रयोग के बारे में चर्चा करते हुए कहा है :

"New discipline that combines biological knowledge with a knowledge of human values."

यह एक ऐसा सिद्धांत है जो कि जैविक विज्ञान को मानवीय मूल्यों के विज्ञान से मिलाता है और विज्ञान तथा मानवता में गहरे सम्बंधों को सिद्ध करने में सहायक होता है। यह मानवता के अस्तित्व को बनाए रखने और उसको उचित विधि से विकास द्वारा सभ्य समाज की स्थापना के सपने देखता है।

चिकित्सा नीतिशास्त्र, पर्यावरण नीतिशास्त्र, विधि, नीति-शास्त्र, जैव नीतिशास्त्र भी अति महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। व्यवहारिक नीतिशास्त्र के अन्तर्गत स्वास्थ्य क्रिया ही नहीं, बल्कि रोजाना जीवन के चर्चित विषय, गर्भपात, मनुष्यों का जानवरों के प्रति व्यवहार, वातावरण से सम्बंधित विषय, जनसंख्या, प्रदूषण, प्राकृतिक समस्याओं के प्रति मनुष्य का व्यवहार आदि भी सम्मिलित हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब व्यवहारिक नीतिशास्त्र का अनमोल ग्रंथ है, गुरबाणी दिव्य अमृत है।

गुरबाणी की व्यवहारिक नैतिकता मनुष्य मनुष्य के बीच की दूरी मिटाती है, भय, शोक, ईर्ष्या उद्वेग की आग से तपे हुए मनुष्य को सुख एवं शांति, स्नेह और सहानुभूति, संयम और उत्साह, शौर्य तथा क्षमा जैसे दिव्य गुणों का खजाना देते हुए हृदय में अज्ञान-अंधकार को मिटाकर जीव को गुरमुख बना देती है; व्यवहार

में नैतिकता के मार्ग पर अग्रसर करके उन्हें संयम, समता, न्याय, उदारता, प्रसन्नता एवं सुख से सम्पन्न करने वाले संस्कार देती है ताकि परम सुख के अर्थ एवं परिवार का जीवन सार्थक हो, व्यवसाय एवं वातावरण शुद्ध हो। पतनग्रस्त मानवता के लिए नई चेतना, व्यापक दृष्टि और भावात्मक एकता की कल्याणकारी सेंध प्रदान करना गुरबाणी का व्यवहारिक नीति शास्त्र है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बाणीकार महापुरुषों ने आपसी प्रेम, शुद्ध सात्विक जीवन, निष्काम सेवा, परमात्मा के हुक्म में विश्वास रखने का ऐसा दिव्य मंत्र दिया, जिसने उस समय के समाज का संपूर्ण स्वरूप ही परिवर्तित कर दिया। आज की दुखी मानवता को गुरबाणी के ज्ञान की आवश्यकता है। Dr. Y.B. Chohan ने ठीक कहा है, "The synthesis of values which Guru Nanak Dev Ji symbolized is as relevant today as it was 500 years ago."

गुरबाणी का विषय केवल आध्यात्मिक ही नहीं है, बल्कि बाणीकार मनुष्य के प्रत्येक व्यवहार को सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, व्यवसायिक क्षेत्र में आदर्श बनाना चाहते हैं। उन्होंने मन की पवित्रता, जीवन की सार्थकता, परम सत्ता को प्राप्त करने के लिए, जीवन के हर क्षेत्र को कामयाब करने के लिए नैतिक गुणों को अपनाना आवश्यक माना है। उन्होंने अपने अनुभव रूपी खजाने द्वारा लोगों को आदर्श व्यवहार की प्रेरणा दी। दया, क्षमा, संयम, साहस, धैर्य, संतोष, सेवा, सत्य, प्रेम आदि गुणों को धारण करके अपना रहन-सहन तथा सांसारिक कर्म-व्यवहार करने के लिए प्रेरित किया। यह समझाया कि सद्‌गुण ही समाज में संतुलन ला सकते हैं। गुरबाणी द्वारा बताए गए सद्‌गुण जिन्दगी का वह अमृत-सत्य, प्रेम आदि गुणों को धारण करके अपना रहन-सहन तथा सांसारिक कर्म-व्यवहार करने के लिए प्रेरित किया। यह समझाया कि सद्‌गुण ही समाज में संतुलन ला सकते हैं। गुरबाणी द्वारा बताए गए सद्‌गुण जिन्दगी का वे अमृत-भोजन हैं जिनसे मनुष्यता सदा तृप्ति हासिल करती रही है और भविष्य में भी लाभान्वित होती रहेगी।

सद्‌गुण कर्त्तव्य-पालन के दृढ़ अभ्यास का नाम है जो हमारे चरित्र-निर्माण में प्रभाव डालते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सद्‌गुणों को जीवन में बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। दैनिक जीवन में भी हम देखते हैं कि सद्‌गुण ही व्यक्ति के चरित्र को उजागर करते हैं, चाहे व्यक्ति का व्यापार हो, दफ्तर हो, घर हो या वह किसी सेवा में हो। नैतिक गुण मनुष्य के व्यवहार में प्रकट होते हैं। गुरबाणी में मानव-कल्याण की भावना को सबसे ऊंचे स्थान पर रखा गया है। सद्‌गुणी होने के लिए आवश्यक है, एक परमात्मा में दृढ़ विश्वास, परमात्मा के प्रति गहरा प्रेम, परमात्मा की रजा में रहना। अपने आचार-व्यवहार में परमात्मा की रजा और भय में रहना ही उत्तम है। ईमानदारी से जीवन व्यतीत करना ही बाणीकारों के अनुसार ईमानदारी की किरत करना है। दूसरे के हक को मारने की भी निन्दा की गई है। गुरमति में 'सरबत्त का भला, मन नीवा मति उच्ची, देग तेग फतेह' आदि वाक्यांश मनुष्य के लिए भाईचारा एवं नैतिक भावना को उजागर करते हैं, इसी तरह 'नाम जपो, किरत करो, वंड छको', 'संगत और पंगत', 'दसवंध' आदि के आदेश मनुष्य के आर्थिक, सामाजिक, व्यवसायिक, आत्मिक उन्नति के लिए आवश्यक हैं। इस उद्देश्य के लिए गुरबाणी में 'गुरमुख रूपी आदर्श' मनुष्य का संकल्प बताया है।

सचियार होना व्यवसायिक मनुष्य का लक्ष्य माना है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों से मुक्त होना है। सामाजिक

कल्याण में नैतिक सद्गुण सामाजिक बराबरी और भाईचारा, मानवता की सेवा और स्वतंत्रता का महत्व दिया गया है।

निन्दा, चुगली, छल, कपट, पाखंड, आशा, तृष्णा, दुविधा आदि अवगुण मन को मलिन करते हैं, जीवन-विकास में बाधा बनते हैं। गुरबाणी में आदर्श व्यवसाय के लिए अवगुणों का त्याग आवश्यक है, अपने व्यवसाय में भी नैतिक ढंग से पालन करते हुए संसार में निर्लेप रहना है।

शिक्षा मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के साथ जुड़ी है। आज शिक्षा का व्यापारीकरण होता जा रहा है। गुरबाणी के अनुसार शिक्षा को व्यापार के रूप में नहीं, परोपकार की भावना के रूप में लेना चाहिए :
विदिआ वीचारी तां परउपकारी ॥ (पन्ना ३५६)

गुरबाणी के अनुसार असली ज्ञानी वह है जो ज्ञान को व्यवहार में लाता है। जिस व्यक्ति में लोभ, मोह, अहंकार की भावना है उसके द्वारा प्राप्त की गई शिक्षा व्यर्थ है। शिक्षक को नि:स्वार्थ होकर पढ़ाना चाहिए, उसे पैसों के लालच या अपने अतिरिक्त लोभ के प्रति स्वार्थी नहीं होना चाहिए। अच्छा शिक्षक वह है जो विद्यार्थियों को जीवन में सही दिशा दे, उनको जीवन की ऊंचाइयों तक ले जाये, अंधकार से रोशनी की तरफ ले जाए।

शिक्षा वह है जो सच-झूठ, भले-बुरे की पहचान करा सके। शिक्षा वह है जो मनुष्य को आंतरिक अनुशासन प्रदान करती है। शिक्षित व्यक्ति अपने जीवन के परम उद्देश्य को समझता है, जीवन को सही दिशा देता है। शिक्षा का आधार नैतिक होना चाहिए।

आज हमारे समाज में नैतिकता का हनन होता जा रहा है। लड़की के जन्म लेने से पहले ही भ्रूण रूप में हत्या कर दी जाती है। परिणामस्वरूप लैंगिक अनुपात का संतुलन असंतुलिन होता जा रहा है। श्री गुरु नानक देव जी ने आज से ५०० साल पहले ही औरत की महत्ता की चर्चा करते हुए कहा :
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
(पन्ना ४७३)

उन्होंने औरत को केवल जन्म देने वाली ही नहीं, समाज की सबसे बड़ी ताकत माना। वह समाज में नैतिकता के बीज संस्कार के रूप में आने वाली पीढ़ियों में डाल सकती है। श्री गुरु अरजन देव जी ने औरत को ३२ गुणों को धारण करने वाली सुलक्खणी कहा है। श्री गुरु अमरदास जी ने सती-प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई। गुरबाणी में औरतों के प्रति ऐसा वातावरण पैदा करने के लिए सीख दी गई है, जिसमें औरत अपनी सम्पूर्ण समर्थता को पहचान सके। सिख इतिहास माता खीवी जी, माई भागो जी, माता भानी जी तथा माता सुंदरी जी द्वारा श्रद्धा एवं प्यार से की सेवा उदाहरण के रूप में दुनिया में याद की जाती है।

आज सम्पूर्ण पृथ्वी, वातावरण और इस धरती पर विद्यमान हर वस्तु को पर्यावरण का हिस्सा माना जाता है। इस अनुशासन के बिगड़ने से सारी प्रकृति ही असंतुलित हो जाती है। आज विकास की जो शैली अपनाई जा रही है उसमें पर्यावरण चिन्ता का विषय बन चुका है। मनुष्य का जीवन और पर्यावरण आपस में अति घनिष्ठता से सम्बंधित हैं।

गुरु नानक साहिब ने जपु जी साहिब में इसकी महत्ता प्रकट की है :
पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥
(पन्ना ८)

अगर हम गंभीरता से विचार करें तो हवा, पानी, धरती के भंडार बड़े ही अनमोल हैं, जिनके कारण हर प्राणी का जीवन गतिशील है। इनकी कमी से सृष्टि में प्रलय आ सकती

है, मनुष्य जाति का विनाश हो सकता है। सब जानते हैं कि हम लोग शुद्ध हवा, शुद्ध पानी के सहारे जीवित रहते हैं :

पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥
(पन्ना ४७२)

आज का मनुष्य प्रकृति से छेड़छाड़ करके अपने पांव पर स्वयं ही कुल्हाड़ी मार रहा है। पृथ्वी पर बेशुमार ट्रक, स्कूटर, कार हवा को प्रदूषित कर रहे हैं। जंगलों की कटाई से आक्सीजन कम हो रही है। कार्बनडाईआक्साईड बढ़ रही है। गांवों का श्रृंगार त्रिवेणी—नीम, पीपल, बरोटे इत्यादि वृक्ष कम हो रहे हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कुदरत की महत्ता की चर्चा है। बारह माहा तुखारी और बारह माहा माझ बाणियां प्रकृति-चित्रण के माध्यम से आध्यात्मिक संदेश देती हैं। यहां आध्यात्मिक संदेश के साथ-साथ प्राकृतिक महत्ता भी देखी जा सकती है।

श्री गुरु नानक देव जी की अपनी रचना 'बारह माहा तुखारी' जिसमें बदलती ऋतुओं के साथ अपने मन की बदलती दशा को दर्शाया गया है। मन की अवस्था उस तरह की है जिस का पति प्रदेश गया हुआ है। कुदरत के वेशों को भाव-भरी उपमाओं से वर्णन किया गया है। हमें कुदरत की दात को गंदा नहीं करना है।

कानून स्पष्ट रूप से प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों, दायित्वों और कार्यों की व्याख्या करता है अर्थात् कानून वास्तव में संहिताबद्ध लोकाचार है। गुरबाणी के अनुसार श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनुसार न्याय, समानता पर आधारित होना चाहिए, क्योंकि सब व्यक्ति एक ही परमात्मा की संतान हैं। किसी से धर्म, जाति, नस्ल के आधार पर भेद-भाव नहीं करना चाहिए। बाणीकारों के अनुसार दूसरों के अधिकारों की पूरी इज्जत करनी चाहिए। हमें स्वार्थ की भावना छोड़कर सत्य के रास्ते पर चलना चाहिए। गुरबाणी में दूसरों का शोषण करने का विरोध किया गया है। न्यायशील जज वही है जो निष्पक्ष होकर न्याय करता है। वह मन की बुरी भावनाओं लोभ, काम, क्रोध, मोह, अहंकार को वश में करके न्याय करता है, तभी न्याय को सद्‌गुण कहा जायेगा।

व्यापारिक नैतिकता की अर्थ-व्यापार में ऐसी क्रियाएं हों जो समाज में सामाजिक मूल्य व मापदंड के अनुरूप हों। व्यवसायिक नैतिकता को बनाए रखने के लिए ऐसा वातावरण बनाना चाहिए जो कि समूह जन-जाति और मानव-कल्याण की भावना को बनाए रखे। व्यवसाय के नैतिक पहलुओं में ईमानदारी, सेवा-भावना, शुभ कार्य गुरबाणी के अनुसार विशेष स्थान रखते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गृहस्थ जीवन में रह कर नेक कमाई करना, बांट कर खाना, संसार के व्यवहारों को अच्छी रीति से करते हुए सर्वोच्च को याद रखना ही अच्छे व्यापार के गुण हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित है:

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥ (पन्ना १२४५)

कठिन परिश्रम से जीवन बिताने का संदेश इस ओर संकेत करता है कि मेहनत से अर्जित धन को ज़रूरतमंद लोगों के साथ बांटकर उपयोग में लाना चाहिए।

महत्वपूर्ण यह बात है कि प्रभु-नाम से व्यवहार की शुद्धि होती है, सतसंग से व्यवहार शुद्ध होता है।

गुरमुख प्रारब्ध वेग से जीवन व्यतीत करते हैं, किन्तु उनमें वासना नहीं होती। गुरबाणी में मनुष्य के लिए जो लक्ष्य रखा गया है तथा जिन मार्गों का विवेचन किया गया है, चाहे वे कर्म-मार्ग हैं या ज्ञान-मार्ग हैं, उनको जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए।

नैतिक शिक्षा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यवसाय में सफलता दिलाती है, नीति-विहीन शिक्षा मनुष्य को दोराहे पर ला देती है, समाज में असंतुलन पैदा करती है।

अच्छे वातावरण के निर्माण के लिए, प्राकृतिक सम्पदाओं की रक्षा करना आवश्यक है।

मनुष्य सदा नैतिक जीवन व्यतीत करे, अपनी इच्छाओं को कम करे। उसे सादा खाना, सादा पहनना, सादगी में रहना चाहिए।

गुरबाणी विचार समाज के प्रत्येक किस्म के पक्षपात के विरुद्ध संघर्ष, सामाजिक बराबरी, अन्याय और चुनौतियों का सामना करने की शक्ति देते हैं। आवश्यकता नैतिकता को जीवन में अपनाने और व्यवहार में लाने की है।

मन, वचन, कर्म और शरीर से नैतिकता को अपनाना व्यवहारिक ज्ञान है। अगर मन इंद्रियों के विकारों के सुखों में भटकता रहता है तो चौरासी लाख योनियों में युगांतर तक हमें भटकाता रहता है। अगर यह गुरबाणी द्वारा नैतिकता की तरफ मुड़ जाता है तो यह करोड़ों-करोड़ों जन्मों के पाप जला कर आत्मा-परमात्मा की मुलाकात करवा कर शक्ति को पहचानना होगा।

गुरबाणी के अनुसार बुराई मनुष्य का जन्म-संघाती लक्षण नहीं अहंकार की उपज है। गुरबाणी द्वारा मनुष्य के सांसारिक व्यवहार को नैतिकता के साथ जोड़ा गया है।

मनुष्य को उद्यम, दृढ़ता, अच्छा आचरण, आत्म-संयम, संतोष धारण कर परमात्मा की रजा में खुश रहना चाहिए, गुरमुख के गुणों को अपनाना चाहिए, गृहस्थ में रह कर परिवार व समाज के लिए कर्म करने चाहिए, अपने गुण-योग्यता के अनुसार अपनी आजीविका कमानी चाहिए, ईश्वरीय सद्गुणों को धारण कर दुष्ट प्रवृत्तियां व अवगुणों को त्यागना चाहिए। सिख व्यवहारिक नैतिकता एक ईश्वर पर आधारित है। सामाजिक सद्गुण, सबका विचार, निर्मल नैतिकता भेद-भाव रहित, निष्पक्ष जाति-रहित, आदर्श समाज की कल्पना है। यही श्री गुरु ग्रंथ साहिब का व्यवहारिक उद्देश्य है। आवश्यकता इस बात की है कि जीवन की वास्तविक सच्चाई और व्यवहार के बीच तालमेल बैठाया जाए।

सधन्यवाद : जीवन रश्मि, अक्तूबर-दिसंबर २००८

तखति बहै तखतै की लाइक ॥

*तखति बहै तखतै की लाइक ॥***
साच ज्योति साच शबद विधाइक।
सिद्धांत निपुन्न और विचार प्रवीन,
एक साथ प्राचीन और नवन नवीन।
महामहिमों की अमृत बाणी,
महामहिमों की महक नूरानी।
इसमें भक्त कबीर, फरीद भी हैं,
मानवता के सफीर मुरीद भी हैं।
कल भी नयी थी, आज भी है,
जिसको कभी होना नहीं पुरानी।
पंचम गुरदेव जी संचित किया,
हरिमंदर साहिब में मंचित किया।
दशम गुरदेव गहन गंभीर विचारी,
महामहिम परम पद प्रभारी।
युगीन निश्चय युगीन निर्णय लिया,
श्री गुरु ग्रंथ जी को परम पद दिया।
कोटन कोट सूरजों के सर्वोपरि सजाया,
सरब संसार को मार्ग उज्जवल दिखाया।

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, शाला पुराना, पत्तण वाली सड़क, जिला गुरदासपुर, मो ९४१७१-७५८४६

***पन्ना १०३९*

लासानी व्यक्तित्व : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-स. सुरजीत सिंघ**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का कथन है :

जो हम को परमेसर उचरिहैं ॥
ते सभ नरक कुंड महि परिहैं ॥
मो कौ दास तवन का जानो ॥
या मै भेद न रंच पछानो ॥३२॥
मै हो परम पुरख को दासा ॥
देखन आयो जगत तमासा ॥ (बचित्र नाटक)

अर्थात् मुझे परमेश्वर कहने वाला नर्क कुंड में पड़ेगा। मुझे सभी लोग परमात्मा का सेवक ही समझें। इसमें रंचक मात्र भी संदेह न समझें कि मैं ईश्वर क दास हूं और जगत का तमाशा देखने आया हूं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बचित्र नाटक में व्यक्त भावनाएं उनकी महानता का परिचायक हैं। पीड़ित कश्मीरी पंडितों की रक्षा हेतु ९ वर्ष के बालक श्री गोबिंद राय जी अपने पिता जी को स्वयं आत्मोत्सर्ग हेतु प्रेरित करते हुए कहते हैं—"बलिदान हेतु आपसे बढ़कर पवित्र आत्मा और कौन-सी हो सकती है?" वीरता और बलिदान का ऐसा आदर्श लासानी है। धर्म, संस्कृति व राष्ट्र की आन-बान और शान के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने वाले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को न तो सत्ता चाहिए थी और न ही सत्ता-सुख। उनका विषय तो शांति और समाज-कल्याण था। अपने पिता, चारों पुत्रों और हजारों सिखों के प्राणों की आहुति देने के बाद भी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी औरंगजेब को फारसी भाषा में लिखे अपने पत्र 'जफ़रनामा' में लिखते हैं—"औरंगजेब! तुझे प्रभु को पहचानना चाहिए तथा प्रजा को दुखी नहीं करना चाहिए। कुरान की कसम खाकर तूने कहा था कि मैं सुलह करूंगा, यह कसम तुम्हारे सिर पर भार है, तू अब इसे पूरा कर।"

वास्तव में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का किसी से बैर नहीं था। उनके सामने एक तरफ पहाड़ी राजाओं की ईर्ष्या पहाड़ जैसी ऊंची हो गयी थी तो दूसरी ओर औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता की आंधी लोगों के अस्तित्व को लील रही थी। ऐसे समय में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने समाज को एक नया दर्शन दिया—आध्यात्मिक स्वतंत्रता की प्राप्ति हेतु कृपाण धारण करना। भारतीय संस्कृति का आधार भी इसी बुनियाद पर ही टिका है। इसी का समर्थन करते हुए 'जफ़रनामा' में स्वयं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी लिखते हैं—"जब सारे साधन निष्फल हो जायें, तब तलवार उठाना न्यायोचित है।" धर्म एवं समाज की रक्षा हेतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १६९९ ई में खालसा पंथ की स्थापना की। खालसा यानि खालिस (शुद्ध), जो मन, वचन एवं कर्म से शुद्ध हो और समाज के प्रति समर्पण का भाव रखता तो।

उन्होंने सभी जातियों के वर्ग-विभेद को पूर्णत: समाप्त कर न सिर्फ समानता स्थापित की बल्कि उनमें आत्म-सम्मान और प्रतिष्ठा की भावना भी पैदा की। उन्होंने स्पष्ट मत व्यक्त किया—*"मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥" (अकाल उसतति पा: १०)* यह ज्ञात हो कि फ्रांस और रूस में क्रांतियां इस ऐतिहासिक घटना के सदियों बाद ही लाई जा सकीं।

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

**६१६/१, सैनिक कॉलोनी, रुड़की (हरिद्वार)-उत्तराखंड-२४७६६७ मो. ०९८३७२-५६००३*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज गुरु बाणीकार तथा उनका जीवन-वृत्त

*-डॉ. अंजुमन**

१. श्री गुरु नानक देव जी

श्री गुरु नानक देव जी सिख धर्म के संस्थापक हैं। इनके प्रगतिशील विचारों के द्वारा एक नये मार्ग का निर्माण हुआ। इस संदर्भ में डॉ. त्रिलोचन लिखते है :

"गुरु नानक देव जी का दिव्य व्यक्तित्व ऐसे दार्शनिक एवं अनुपम आत्मिक अनुभवों का प्रेरणा-स्थल बना जिसके आधार पर गुरुओं ने एक परिपूर्ण एवं सुसंगठित धर्म स्थापित किया।"[१] इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि गुरु नानक साहिब सिख धर्म के प्रवर्त्तक थे।

उपर्युक्त विचार को इस प्रकार भी दृढ़ किया जा सकता है कि गुरु नानक साहिब की चिंतनधारा और व्यवहारिक जीवन में अनेक ऐसी मौलिक अवधारणाएं थीं जिसके आधार पर परवर्ती गुरु साहिबान ने एक नये और अलग धर्म का निर्माण किया। उदाहरणस्वरूप पांचवें गुरु श्री गुरु अरजन देव जी ने नये धर्म के लिए, नये धर्म-स्थान के रूप में श्री हरिमंदर साहिब की संस्थापना की और नये धर्म-ग्रंथ के रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन आदि स्वरूप का सम्पादन कर, उसे श्री हरिमंदर साहिब में सुशोभित किया। दशम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इस पावन स्वरूप को गुरु-पद पर आसीन किया। इस प्रकार गुरु नानक साहिब के धार्मिक चिंतन को, श्री गुरु अरजन देव जी ने सुरक्षित किया और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उसे सम्पूर्ण किया।

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा संस्थापित गुरु-परम्परा में दूसरे स्थान पर श्री गुरु अंगद देव जी आते हैं। श्री गुरु अमरदास जी का स्थान तीसरा है। डॉ. रतन सिंघ (जग्गी) का कथन है कि सेवा और मानव-कल्याण में सदा ही दत-चित रहने वाले श्री गुरु अमरदास जी तीसरे गुरु थे, जिनकी आयु सभी गुरु साहिबान से अधिक थी। अपनी अद्वितीय सेवा-साधना और अन्य भक्ति के फलस्वरूप उन्हें गुरु नानक साहिब की दैवी गद्दी के तीसरे अधिकारी होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

श्री गुरु रामदास जी सिख धर्म के चौथे गुरु हैं। इन्होंने जगत-प्रसिद्ध श्री अमृतसर शहर का निर्माण किया। पांचवें गुरु श्री गुरु अरजन देव जी ने पावन श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रारंभिक पावन आदि स्वरूप का सम्पादन किया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी, श्री गुरु हरिराय जी, श्री गुरु हरिक्रिशन जी क्रमश: छठे, सातवें और आठवें गुरु साहिबान हैं। इन तीनों गुरु साहिबान ने बाणी की रचना नहीं की है, परन्तु सिख धर्म के विकास में उनका योगदान महत्वपूर्ण है। श्री गुरु तेग बहादर जी नवम गुरु साहिब के रूप में उपास्य हैं। सिख धर्म के दसवें और अन्तिम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी हैं जिन्होंने आदि श्री ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूप को श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में गुरु-पदवी पर आसीन किया। श्री गुरु नानक देव जी के अनुवर्ती गुरुओं, जिनकी बाणी श्री गुरु ग्रंथ

**W/o S. Baljit Singh, Vill. Dhoulpur, P/O Talwandi Lal Singh, Distt. Gurdaspur. M- 9888746355*

साहिब में संकलित है, के जीवन-वृत्त और रचनाओं को अग्रांकित पंक्तियों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

२. श्री गुरु अंगद देव जी का संक्षिप्त जीवन

श्री गुरु अंगद देव जी का जन्म सन् १५०४ ई में जिला फिरोजपुर में 'मत्ते दी सरां' नामक गांव में हुआ। इनके पिता बाबा फेरू जी गांव के पुरोहित और व्यापारी थे। इनकी माता का नाम माता सभराई था, जो कि धार्मिक स्वभाव की थी। इनका विवाह (माता) खीवी जी के साथ हुआ था। उनके दो पुत्र और एक पुत्री थी। इनका पहला नाम भाई लहणा जी था।

एक बार भाई लहणा जी अपने साथियों सहित ज्वाला देवी के दर्शन को जा रहे थे। रास्ते में एक व्यक्ति से श्री गुरु नानक देव जी विरचित "आसा दी वार" की पंक्तियों को सुनकर बहुत प्रभावित हुए। ज्वाला देवी के दर्शन की अभिलाषा अब उनके हृदय में नहीं रही। वे अपने साथियों को छोड़कर श्री गुरु नानक देव जी को मिलने करतारपुर चल पड़े। श्री गुरु नानक देव जी से मिलकर उन्हें आत्मिक शान्ति मिली। उन्होंने श्री गुरु नानक देव को अपना गुरु धारण किया और उनके सिख बन गये। अब भाई लहणा जी श्री गुरु नानक देव जी के परम भक्त बन गये और कठिन से कठिन सेवा से भी न कतराते थे। इनकी गुरु-भक्ति को देख-जांच कर श्री गुरु नानक देव जी ने इन्हें भाई लहणा जी से श्री गुरु अंगद देव जी बना दिया। ये सन् १५३९ से लेकर १५५२ ई तक करीब १३ वर्ष गुरुपदासीन रहे।[२]

श्री गुरु नानक देव जी के पश्चात इन्होंने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा संस्थापित सिख संगत को सुसंगठित करना आरंभ कर दिया। इसके लिए इन्होंने लंगर-प्रथा को अधिक विस्तार प्रदान किया। सब धर्मों के लोग गुरु के लंगर में आने लगे। यहीं पर गुरु जी दरबार सजाकर लोगों को प्रभु-भक्ति, मानव-सेवा आदि के उपदेश देते थे। इनके उपदेशों से लोग प्रभावित होते और सिख धर्म को अपनाते जाते। इन्होंने श्री गुरु नानक देव जी के जीवन-चरित्र एवं बाणी को संग्रहीत किया। इन्होंने ही गुरु नानक साहिब की बाणी 'पट्टी' के आधार पर अपने समय की प्रचलित देवनागरी आदि लिपियों से अक्षर लेकर गुरमुखी लिपि का निर्माण किया। गुरु जी द्वारा गुरमुखी के आविष्कार से सिख जाति में स्वाभिमान की भावना का निर्माण हुआ। इस समय से यह लिपि, गुरबाणी के लिए एकमात्र लिपि मानी जाने लगी।

३. श्री गुरु अमरदास जी

श्री गुरु अमरदास जी सिख धर्म के तृतीय गुरु थे। इनका जन्म गांव बासरके, जिला अमृतसर नामक गांव में सन् १४७९ ई में हुआ था। इनके पिता श्री तेजभान जी खेती तथा व्यापार करते थे। इनकी माता जी का नाम मनसादेवी था। पहले ये वैष्णव-भक्त थे, परन्तु गुरु नानक साहिब की बाणी से प्रभावित होकर इन्होंने श्री गुरु अंगद देव जी को अपना गुरु धारण किया। ये तब से श्री गुरु अंगद देव जी की सेवा में मग्न रहते थे।

इन्होंने गुरगद्दी पर बैठने के बाद सिख धर्म को संगठित करने के लिए अनेक कार्य किये। इन्होंने जात-पात के बंधनों को समाप्त करने के लिए गुरु के लंगर को अधिक व्यापकता प्रदान की। इन्होंने लोगों को आदेश दिया हुआ था कि वही व्यक्ति गुरु का दर्शन कर सकता

है जो गुरु के लंगर में लंगर छकेगा।

इन्होंने सिख धर्म में दीक्षित हो चुके लोगों को संगठित करने के लिए जन्म-मरण के नये रीति-रिवाजों का प्रचलन कराया। इन्होंने सिख धर्म के संगठन और प्रचार के लिए २२ मंजियों (प्रचार-केन्द्रों) की स्थापना की। इन्होंने महिलाओं की शिक्षा पर विशेष जोर दिया। इनके सादे और सुंदर उपदेशों से सिख धर्म का बहुत प्रचार और प्रसार हुआ। आप १५७४ ई में परम ज्योति में विलीन हुए। इन्होंने अपने दामाद और सच्चे शिष्य भाई जेठा जी की भक्ति तथा योग्यता से प्रसन्न होकर उन्हें गुरु-पद पर शोभायमान किया जो कि बाद में गुरु रामदास जी के नाम से प्रख्यात हुए।

बाणी-रचना

श्री गुरु अमरदास जी ने विपुल बाणी की रचना की है। इनकी सारी बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा संकलित और सम्पादित है। उनकी सारी बाणी अपने प्रमाणिक रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मिलती है। इनकी प्रसिद्ध बाणी का नाम "अनंदु साहिब" है। "अनंदु साहिब" को विशेष अवसरों पर गाया जाता है। इनकी कुछ वारें भी प्रसिद्ध हैं। उनकी बाणी की भावगत और भाषागत विशेषताओं को इंगित करते हुए डॉ. धर्मपाल मैणी उचित लिखते हैं—"उनका विस्तृत अनुभव बाणी की रचना से पूर्व उनके साथ था। अत: उनकी बाणी का उद्देश्य न केवल छूत-छात, जात-पात के भेदभाव को दूर कर जन-समाज में एकता स्थापित करना था, अपितु ऐसा संदेश देने वाली बाणी को सर्वोत्कृष्ट बताना भी था। इन्होंने ही सच्ची बाणी का महत्व बताकर श्री गुरु अरजन देव जी को श्री आदि ग्रंथ साहिब के संग्रह की प्रेरणा दी। इनकी स्पष्टवादिता इनके चरित्र का सबसे बड़ा गुण था। वह उसी रस में इनकी बाणी में उतर आया, इसलिए आवश्यकतानुसार इन्होंने भक्त फरीद जी आदि की बाणी की व्याख्या एवं आलोचना भी की है। "अनंदु" में प्रसन्नता तथा "सदु" (सुंदर रचित) में इनका मृत्यु को स्वाभाविक मानने का संदेश है। श्री गुरु नानक देव जी की ही भांति इनकी बाणी में भाषा में रूपक, उपमा आदि अलंकारों का पर्याप्त प्रयोग मिलता है। इनकी भाषा का प्रवाह भी भावानुसारिणी है, लोकोक्तियां एवं मुहावरों का प्रयोग भी पर्याप्त है।

अत: कहा जा सकता है कि श्री गुरु अमरदास जी ने अपने शिष्यों के लिए ऐसी बाणी का प्रणयन किया जिससे उनमें नवचेतना आदि नयी उमंग का संचार हुआ।

श्री गुरु रामदास जी

श्री गुरु रामदास जी श्री गुरु नानक देव जी द्वारा संस्थापित गुरु-परम्परा के चौथे गुरु हैं। श्री गुरु रामदास जी का गुरु-परम्परा में विशेष और महत्वपूर्ण स्थान है।

श्री गुरु रामदास जी का जन्म १५३४ ई में चूना मंडी (लाहौर) में हुआ था। इनका पहला नाम भाई जेठा जी था। इनकी अल्प आयु में ही इनकी माता का देहांत हो गया। इनकी सात वर्ष की आयु में इनके पिता भी चल बसे। ९ साल की अल्प आयु में ये श्री गुरु अमरदास जी की सेवा में उपस्थित हुए।

सन् १५५३ ई में श्री गुरु अमरदास जी की पुत्री बीबी भानी जी के साथ इनका विवाह हुआ। श्री गुरु रामदास जी परम गुरु-भक्त थे। श्री गुरु अमरदास जी के आदेशानुसार १५७० ई में इन्होंने 'श्री अमृतसर' बसाना प्रारंभ किया। इन्हें १५७४ ई में 'गोइंदवाल' नामक स्थान में गुरगद्दी प्राप्त हुई। ये गोइंदवाल

छोड़कर अमृतसर में आकर रहने लगे। बाबा प्रिथी चंद इनके ज्येष्ठ पुत्र थे, जो १५५७ ई में उत्पन्न हुए थे। इनके दूसरे पुत्र बाबा महादेव थे। इनका जन्म १५६० ई में हुआ था। तीसरे पुत्र श्री गुरु अरजन देव जी थे। इनका जन्म १५६३ ई हुआ था। आगे चलकर यही श्री गुरु अरजन देव जी सिखों के पांचवें गुरु बने।[३]

श्री गुरु रामदास जी का व्यक्तित्व बहुत महान था। उनके आकर्षक व्यक्तित्व और नम्रता से उदासी सम्प्रदाय के संस्थापक बाबा श्रीचंद जी बहुत प्रसन्न हुए।

श्री गुरु रामदास जी ने गुरु-घर को संचालित करने के लिए मसंदों की नियुक्ति की थी। इसके सम्बंध में आचार्य परशुराम चतुर्वेदी लिखते हैं कि "श्री गुरु रामदास जी ने सरोवर के निर्माण का कार्य पूर्ववत जारी रखा और उसके निमित्त द्रव्य संग्रह करने तथा धर्म प्रचार के लिए इन्होंने कई व्यक्तियों को नियुक्त किया। ये लोग 'मसंद' कहे जाते थे जो पूर्वकाल में प्रचलित 'मसनद' शब्द का विकृत रूप था। अफगान बादशाहों के समय में 'मसनदे अली' कुछ विशेष प्रकार के दरबारियों को पदवी थी और सिखों के सच्चे पातशाह होने के नाते श्री गुरु रामदास जी के उक्त कर्मचारियों का नाम भी उनके शब्दों में मसंद ही रखा गया। इनका काम भिन्न-भिन्न प्रदेशों के रहने वाले अनुयायियों तथा अन्य लोगों से भी द्रव्य लेकर उसे गुरु के पास व्यय करने के लिए भेजना था। सरोवर के खुदाने का कार्य चल ही रहा था कि उसके निकट अनेक मनुष्यों की घनी बस्ती जमने लगी और वह 'रामदासपुर' के नाम से प्रसिद्ध हो चली।[४] इस प्रकार श्री गुरु रामदास जी ने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा संस्थापित गुरगद्दी को और अधिक सुदृढ़ व सशक्त बनाया।

बाणी

श्री गुरु रामदास जी की सभी उपलब्ध बाणियां श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संग्रहीत हैं। इनमें भिन्न-भिन्न रागों के अन्तर्गत पाये जाने वाले अनेक पद व वारें हैं जो कतिपय श्लोकों के साथ महला ४ के अन्तर्गत दिए गए हैं और इनकी संख्या काफी बाड़ी है।

५. श्री गुरु अरजन देव जी

श्री गुरु अरजन देव जी का सिख धर्म के विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। इन्होंने ही विश्व-विख्यात श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण करवाया था। ये वही महान गुरु हैं जिन्होंने सिख अनुयायियों के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रथम संकलन किया था। उन्हें पंचम पातशाह के नाम से समादरित किया जाता है।

बादशाह जहांगीर श्री गुरु अरजन देव जी के धार्मिक कार्यों से पहले ही चिढ़ा हुआ था। वह इन कार्य को समाप्त करना चाहता था। बादशाह ने चंदूशाह के दोषों के आधार पर गुरु जी को दो लाख रुपए जुर्माना देने तथा "गुरु ग्रंथ साहिब" से आपत्तिजनक पंक्तियां निकाल देने का हुक्म दिया। गुरदेव ने ये बातें अस्वीकार कर दीं। इस पर बादशाह जहांगीर बहुत क्रोधित हुआ और उसने श्री गुरु अरजन देव जी को कैदी बनाकर यातनाएं देने का हुक्म दिया।[५] चंदूशाह अपने कुकृत्य में सफल हुआ। श्री गुरु अरजन देव जी को अनेक प्रकार की यातनाएं दी गईं। इन्हें गर्म तवी पर बैठाया गया और शीश पर गर्म रेत डाली गयी। परन्तु इन्होंने आलौकिक धैर्य दिखलाया और सब कुछ सहन किया और अन्तिम समय तक अपने विचार बदले नहीं। इन यातनाओं द्वारा श्री गुरु अरजन देव जी सन् १६०६ ई को परम ज्योति में विलीन हुए।

श्री गुरु अरजन देव जी ने अमृतसर और श्री हरिमंदर साहिब की संस्थापना के बाद तरनतारन नगर का निर्माण करवाया और वहीं एक बड़े सरोवर के किनारे एक भव्य गुरुद्वारे का निर्माण करवाया। गुरु जी का सबसे विशिष्ट कार्य था श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आदि स्वरूप का सम्पादन। इन्होंने अपने से पूर्ववर्ती गुरुओं की बाणी जो कि इनके पास विद्यमान थी, के साथ अपनी समस्त बाणी सम्मिलित कर इस ग्रंथ का निर्माण किया। श्री गुरु नानक देव जी का धर्म किसी से द्वेष या ईर्ष्या करने वाला नहीं था, अत: श्री गुरु अरजन देव जी ने सिख गुरु साहिबान के अतिरिक्त हिन्दू भक्तों, संतों एवं मुसलमान सूफी-संतों की बाणी का संग्रह भी किया। गुरु जी ने सिख धर्म के विचारानुसार मेल खाने वाली बाणी को ही केवल इस ग्रंथ के लिए चुना। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सम्पादन सन् १६०४ ई में सम्पूर्ण हुआ और इसे श्री हरिमंदर साहिब में महान धर्म-ग्रंथ के रूप में संस्थापित किया गया।

श्री गुरु अरजन देव जी ने सिख गुरु साहिबान में सबसे अधिक बाणी की रचना की। उनकी सर्वप्रसिद्ध बाणी "सुखमनी साहिब" है। इनके अतिरिक्त उन्होंने प्रभूत बाणी का प्रणयन किया है। इनकी बाणी को "महला ५" के माध्यम से चिन्हित किया गया है।

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी के दार्शनिक, धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विचारों को ही अपनाया है और उन्हीं की व्याख्या अपनी बाणी में की है। पंचम गुरु जी परमात्मा में पूर्ण विश्वास करने वाले थे। उनका परमात्मा तो प्रत्यक्ष है। प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की क्या आवश्यकता है? क्या सूर्य कहीं दीपक से देखा जा सकता है?

बेद कतेब संसार हभा हूं बाहरा ॥
नानक का पातिसाहु दिसै जाहरा ॥
(पन्ना ३९७)

नानक का पातशाह तो वेद, कुरान, संसार तथा अन्य सभी से परे है। वह प्रत्यक्ष है। ऐसे प्रत्यक्ष के लिए भला प्रमाणों की क्या आवश्यकता है?

श्री गुरु अरजन देव जी उस अकाल पुरख को "ੴ, सति नामु, करता पुरखु, निरभउ, निरवैरु, अकाल मूरति, अजूनी सैभं" के रूप में मानते हैं। इसी तरह इन्होंने ब्रह्म को अनेक रूपों में स्मरण किया है। वे राग सूही में उसी निर्गुण ब्रह्म को सगुण भी मानते हैं। उनके अनुसार स्वयंभू निर्गुण ब्रह्म सगुण रूप में दिखाई पड़ रहा है। निर्गुण हरि ही सगुण बन गया है:

निरगुन हरीआ सरगुन धरीआ अनिक कोठरीआ
भिंन भिंन भिंन करीआ ॥ (पन्ना ७४६)

श्री गुरु अरजन देव जी ने अवतारवाद और बहुदेववाद का भी खंडन किया है। इन्होंने श्री गुरु नानक देव जी महाराज के अनुरूप ब्रह्म को अजोनि माना है, उसे अजन्मा कहा है। इस संदर्भ में उनके शब्द अवलोकनीय हैं :

सो मुखु जलउ चितु कहहि ठाकुरु जोनी ॥
जनमि न मरै न आवै न जाइ ॥
नानक का प्रभु रहिओ समाइ ॥ (पन्ना ११३६)

अर्थात् वह मुख जल जाये जो चित्त से यह कहता है कि परमात्मा योनि के अंतर्गत आता है। वह न जन्म लेता है, न मरता है और न कहीं आता है, न जाता है। परमात्मा तो सर्वत्र समान रूप में व्याप्त है।

श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी में सृष्टि, माया, हउमै आदि श्री गुरु नानक देव जी के अनुरूप ही हैं। इन्होंने श्री गुरु नानक देव जी की भांति ही अपने सामाजिक चिंतन को

मानव को मानव आधारित माना है। वे जात-पात में विश्वास नहीं रखते, अपितु सभी लोगों को एक ही परमात्मा के पुत्र मानते हैं। वे लोगों में एकता, भ्रातृभाव और समता के पक्ष में हैं। उनकी बाणी का कला पक्ष भी विविधता लिए हुए है। उनकी काव्य-भाषा लोक-भाषा कही जा सकती है। उनके काव्य में संगीतात्मकता गुण पर्याप्त मात्रा में मिलता है।

६. *श्री गुरु तेग बहादर जी*

श्री गुरु तेग बहादर जी का समय १६२१ ई से १६७५ ई तक का है। वे श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रवर्तित आध्यात्मिक गुरगद्दी के नौंवे गुरु-पद के अधिकारी थे। श्री गुरु तेग बहादर जी ने भारतीय इतिहास को अपनी अद्वितीय शहादत देकर नया मोड़ दिया था। इन्होंने धर्म की रक्षा और धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया था। इन्हें "हिंद की चादर" के नाम से भी समादृत किया जाता है।

जीवन-वृत्त

श्री गुरु तेग बहादर जी छठे सतिगुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के सपुत्र थे। इनका जन्म सन् १६२१ ई में 'गुरु के महल' अमृतसर में हुआ था। ये बाल्यावस्था से ही वैराग्यवान थे। इनकी वृत्ति आरंभ से ही आध्यात्मिक थी। वे बकाला नामक स्थान पर अपना अधिकतर समय परमात्मा-चिंतन में व्यतीत करते थे। आठवें गुरु श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी ने "ज्योति जेति" समय गुरु-नियुक्ति के सम्बंध में केवल इतना ही संकेत दिया था—"बाबा बकाले"। भाई मक्खण शाह ने सच्चे गुरु श्री गुरु तेग बहादर जी का पता लगाया। श्री गुरु तेग बहादर जी को सन् १६६४ ई "बकाला" में गुरगद्दी सौंपी गयी। सन् १६६६ ई में पटना साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म हुआ। कालांतर में आप जी सिखों के दसवें गुरु हुए। सन् १६७५ ई में श्री गुरु तेग बहादर जी ने देश की कल्याण-भावना और धर्म-संस्थापना के निमित्त अपने को औरंगजेब की प्रचंड धार्मिक द्वेषाग्नि के विरोध में कुर्बान कर दिया। इनकी पावन बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में "महला ९" के नाम से संग्रहीत हैं।[६]

श्री गुरु तेग बहादर जी का व्यक्तित्व महान था। उनके व्यक्तित्व की अनेक विशेषताएं हैं। उनके स्वभाव को रेखांकित करते हुए, आचार्य परशुराम चतुर्वेदी लिखते हैं—"गुरु तेग बहादर एक बहुत वीर और साहसी पुरुष थे और अपने पिता की भांति इन्होंने भी पहले आखेटादि का अभ्यास किया था, किन्तु यह सब कुछ होते हुए भी इनका हृदय अत्यन्त कोमल था और ये स्वभावत: बड़े क्षमाशील थे। ये बहुधा कहा करते थे "क्षमा करना दान देने के समान है।" क्षमा के समान अन्य कोई पुन्य नहीं।[७]

श्री गुरु तेग बहादर जी की समस्त बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अपने प्रमाणिक रूप में संकलित है। इनकी समस्त बाणी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास थी। उन्होंने "आदि श्री ग्रंथ साहिब" को "गुरु-पद" पर सुशोभित करने से पूर्व इसे "आदि श्री ग्रंथ साहिब" में संग्रहीत कर दिया था। इनकी बाणी अन्य गुरुओं की तुलना में बहुत कम है। इन्होंने ५९ पदों एवं ५७ श्लोकों की रचना की है।

श्री गुरु तेग बहादर जी ने श्री गुरु नानक देव जी महाराज की भांति एक अकाल पुरख की उपासना पर बल दिया है। उन्होंने अपने युग के लोगों में बढ़ती हुई मोह-माया की प्रवृत्ति को रोकने के लिए वैराग्य की भावना

पर जोर दिया। उनका वैराग्य से अभिप्राय समाज से पलायन नहीं था सपितु समाज में रहकर परमात्मा-भक्ति करना था। उन्होंने अपनी सहज-साधना के प्रचार के समय इस प्रवृत्ति को दूर करने का भरसक प्रयत्न किया।[८]

श्री गुरु तेग बहादर जी ने प्रभु-प्राप्ति के लिए गुरु के महत्व का प्रतिपादन करते हुए गुरु के महत्व को सर्वोत्तम माना है। इन्होंने मानव-धर्म को श्रेष्ठ माना है। इन्होंने पाखंड तथा वाह्याडम्बर की आलोचना की और सरल जीवन-यापन का ढंग सिखाया। इसमें मन की शुद्धता की महत्ता प्रदान की गई है और सहज-भाव में नाम-भक्ति के महत्व को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है। नवम सतिगुरु जी ने आदर्श मनुष्य के लिए संयम, संतुलन, प्रभु-भक्ति आदि गुणों को धारण करने का उपदेश दिया है, जैसे कि :

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥१॥रहाउ॥
नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥
हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥१॥
आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥२॥ (पन्ना ६३३)

इसी तरह गुरु जी ने अपने अनुयायियों को निडर बनाने के लिए अपनी धार्मिक विचारधारा में एक ऐसे ज्ञानी पुरुष को आदर्श बतलाया है जो कि न किसी से भयभीत होता है और न ही किसी को भयभीत करता है :

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥ (पन्ना १४२७)

श्री गुरु तेग बहादर जी उत्तर-मध्ययुगीन साहित्य के महान कवि भी थे। इन्होंने अपने युग की सम्पर्क भाषा ब्रज को माध्यम बनाया। इस प्रकार ये पहले सिख गुरु थे जिन्होंने शुद्ध ब्रज भाषा में बाणी का प्रणयन किया। इनकी भाषा शुद्ध एवं साहित्यिक है।

संदर्भ सूची :

१. डॉ त्रिलोचन सिंघ, गुरु नानक दा सिख धरम (१९७२), पृ. ७.
२. डॉ पदम गुरचरन सिंघ : गुरु तेग बहादर : जीवन, चिन्तन व कला (१९७५), पृ. ५९.
३. डॉ जयराम मिश्र : श्री गुरु ग्रंथ-दर्शन (१९६०), पृ. २४.
४. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी : उत्तरी भारत की संत परम्परा (२००८ वि), पृ. ३०८.
५. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी (सम्पादक), हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास (चतुर्थ भाग), पृ. १६०.
६. डॉ जयराम मिश्र : श्री गुरु ग्रंथ दर्शन, प्रथम संस्करण, (१९६०) पृ. २६.
७. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, उत्तरी भारत की संत परम्परा, प्रथम संस्करण, (२००८ सम्वत्) पृ. ३२६.
८. डॉ पदम गुरचरण सिंघ, गुरु तेग बाहदर : जीवन, चिन्तन व कला (१९७५), पृ. १३१
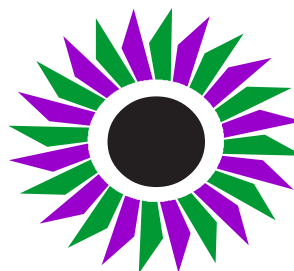
सुखमनी साहिब में ब्रह्मज्ञानी का स्वरूप

–डॉ. दीपशिखा*

पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी कृत 'सुखमनी साहिब' एक दार्शनिक बाणी है जो गउड़ी राग में निबद्ध है। इस बाणी को 'सुखमनी साहिब' संज्ञा इसलिए दी गई है क्योंकि यह सबके हृदय को सुख एवं शांति प्रदान करती है अर्थात् जो मानव श्रद्धापूर्वक इसका मनन, चिंतन करता है वह सभी सांसारिक बंधनों, मोह, सुख-दुख की अनचाही पकड़ से मुक्त हो परमानंद को प्राप्त करता है। सुखमनी साहिब दिव्य उपदेशों का भंडार है। यदि इन उपदेशों पर गहनता से विचार किया जाए तो मानव गूढ़ दर्शन का ज्ञान प्राप्त करता है। साथ ही इन उपदेशों का अनुसरण जीवन में किया जाए तो भौतिक सुखों में लिप्त मानव इस तृष्णा से मुक्त हो प्रेम-भक्ति एवं सहजावस्था को प्राप्त करता है। श्री गुरु अरजन देव जी ने सुखमनी साहिब में नाम की महिमा, सतसंगत का प्रभाव एवं संत-निदंक का अनिष्ट, सद्गुरु के स्वरूप का दिव्य बाणी में वर्णन किया है। गुरु जी के अनुसार वह मानव वास्तव में ब्रह्मज्ञानी, महात्म्य, निर्गुण एवं सगुण भक्ति में रत्त तथा ब्रह्मज्ञानी है जिसके हृदय, नेत्रादि पंचेन्द्रियों में उस निराकार परमात्मा का ही वास हो अर्थात् वह अहर्निश प्रभु-नाम-सुमिरन में ही रत रहता हो। जब मानव उस परमतत्त्व को जान लेता है तो वह ब्रह्मज्ञानी हो जाता है तथा मानव-जाति का उद्धार करना ही उसका मुख्य ध्येय होता है। गुरु जी ने अपनी बाणी में ब्रह्मज्ञानी के अनेक विशेषणों का वर्णन किया है, जिनका विवेचन प्रस्तुत है:

निर्लिप्त

ब्रहम गिआनी सदा निरलेप ॥
जैसे जल महि कमल अलेप ॥ (पन्ना २७२)

अर्थात् ब्रह्मज्ञानी सदा संसार से निर्लिप्त होता है भाव जगत में रहता हुआ भी वह सांसारिक बंधनों में बंधता तथा मोह-माया से असंग रहता है। यथा कीचड़ में प्रस्फुटित होने पर भी कमल के पुष्प को कीचड़ पंकिल नहीं कर पाता अपितु वह अपनी सुरभि से सभी को मुग्ध करता रहता है। उसी प्रकार ब्रह्मज्ञानी इस संसार के बंधन, दोष-अवगुणों से निर्लिप्त रहता हुआ अर्थात् सांसारिक वासनाएं, इच्छाएं आदि उसका स्पर्श भी नहीं कर पातीं और यूं ब्रह्मज्ञानी अपने सद्गुणों द्वारा समस्त जगत् को आकृष्ट भाव सुरभित करता रहता है।

धैर्यवान

ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक ॥
जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥

अर्थात् ब्रह्मज्ञानी का धैर्य दृढ़ होता है। कोई भी विपदा भाव सांसारिक विषय उसके सम्मुख आए उसे धैर्य विचलित नहीं कर पाते भाव वह अपने पथ से पीछे नहीं हटता। वह नि:शंक भाव से धैर्यपूर्वक उस परमात्मा का सुमिरन करता रहता है। जिस प्रकार पृथ्वी धैर्यपूर्वक अपने ऊपर असंख्य विपदाएं, भार आदि सहन करके भी समस्त सृष्टि का आधार बनी हुई है अर्थात् कोई मानव इस पृथ्वी को खोदता है तो कोई उस पर चंदन का लेप करता है, परन्तु पृथ्वी पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता, वह अचल ही रहती है, उसी प्रकार

***रिसर्च एसोसिएट, संस्कृत विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।**

ब्रह्मज्ञानी पर स्तुति-निन्दा रूपी सांसारिक विषयों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह धैर्य सहित उस परमात्मा के भक्ति-पथ पर अचल गति से बढ़ता जाता है।

अद्वैतवादी

ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि ॥
जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥
(पन्ना २७२)

जब मानव उस परमतत्त्व को जान लेता है तो वह ब्रह्मज्ञानी हो जाता है तथा उसकी दृष्टि अद्वैतवादी हो जाती है अर्थात् उसके हृदय में द्वैत (भेदभाव) रूपी भावना का शमन हो जाता है तथा वह समस्त जगत् को एकसमान देखता है। उसके लिए कोई उच्च या नीच जाति से उत्पन्न नहीं होता। वह सभी वर्णों को समान रूप से सम्मान देने वाला होता है। उसकी दृष्टि सकारात्मक होती है। जिस प्रकार वायु राजा एवं प्रजा को समरूप से शीतलता प्रदान करती है तथा सूर्य सभी को समान रूप से सुखाता है और अग्नि समस्त सृष्टि को समान रूप से ऊष्णता प्रदान कर जंग अथवा जंगाल को दूर करती है, उसी प्रकार ब्रह्मज्ञानी के लिए जगत् के सभी जीव समान ही होते हैं, उसके लिए मित्र-शत्रु में कोई भेद नहीं होता। वह श्रेष्ठ होते हुए भी स्वयं को निम्न ही मानता है। अहं का अंश मात्र भी उसके भीतर नहीं होता। वर्तमान समय में जहां आम मानव साधारणत: किंचित् यश-प्राप्ति के पश्चात् स्वयं को सबसे पृथक मानते हुए गर्वित हो उठता है वहीं ब्रह्मज्ञानी, जिसने परमतत्व को जाना है, वह मानव-जाति द्वारा पूज्य होते हुए भी स्वयं को नीचा ही मानता है।

उपदेशक

ब्रह्मज्ञानी के हृदय में स्थित भाव शुद्ध एवं पवित्र होते हैं। उसके उपदेश मानव को अज्ञानता के पथ से विमुख कर नाम-सुमिरन के प्रकाश-पथ की ओर प्रेरित करने वाले होते हैं भाव वह छल, कपट आदि दुर्गणों से मुक्त होता हुआ केवल सत्य-पथ का ही अनुसरण करने वाला होता है। उसकी जीवन-युक्ति जल के सदृश निर्मल होती है। वह समस्त मानव-जाति को समान मानते हुए अपने उपदेशों के माध्यम से उन पर नाम रूपी अमृत की वर्षा करता जाता है :

ब्रहम गिआनी सदा समदरसी ॥
ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अंम्रितु बरसी ॥

वह जीवों को मुक्ति देने वाले अर्थात् प्रत्येक साधक उस साध्य (परमात्मा) की प्राप्ति का उपाय बताने वाला होता है कि उस प्रभु को केवल नाम रूपी धन से ही प्राप्त किया जा सकता है।

जितेन्द्रिय

गुरु जी ने ब्रह्मज्ञानी को जितेन्द्रिय मानते हुए कहा है : *बहम गिआनी ले धावतु बंधा ॥* अर्थात् ब्रह्मज्ञानी का मन उसके वश में होता है। वह इन्द्रियों के वशीभूत होकर सांसारिक पदार्थों की प्राप्ति हेतु इधर-उधर नहीं भागता, न ही विषयों एवं इन्द्रियों के संयोग से व्यथित होता है। वह माया से सुचेत रहता हुआ अहर्निश प्रभु-प्रेम में अनुरक्त रहता है भाव वह अपने भागते हुए मन पर प्रभुत्व कायम कर लेता है। प्रभु का सुमिरन ही उसका परिवार होता है। वह काम, लोभ आदि विषयों से स्वयं को विमुख कर अपने सांसारिक अर्थात् पारिवारिक कर्त्तव्यों का पालन करता जाता है। वह स्वयं को विषय रूपी नदी में डुबोता नहीं, क्योंकि वह जानता है कि उस परमतत्त्व की प्राप्ति विषय रूपी नदी की धार के विपरीत रूप में बहने से होती है, भाव सांसारिक विषयों से स्वयं को निर्लिप्त रखने से ही उस प्रभु की प्राप्ति होती है। गुरु जी के अनुसार जितेन्द्रिय ही मोक्ष-पद को प्राप्त करने का अधिकारी है।

निरभिमानी

अहंबुद्धि का त्याग एवं सुबुद्धि को ग्रहण

करने का उपदेश देते हुए श्री गुरु अरजन देव जी का फरमान है :

ब्रहम गिआनी अहंबुधि तिआगत ॥

अर्थात् उस परमतत्त्व का बोध होने पर मानव-हृदय में अहंबुद्धि की भावना समाप्त हो जाती है तथा उस परमानंद परमात्मा का निवास उसके हृदय में हो जाता है और वह मानव-अहं से उत्पन्न होने वाले काम, तृष्णा आदि व्यसनों से स्वयं को विमुख कर सत्त्वगुण को धारण कर जीवन का सार समझ लेता है। यदि बुद्धि अहं-भाव से लिप्त है तो वह मानव-चेतना को अंधकार में ले जाती है जबकि यह परमानंद की जागृत चेतना का अनुभाव है। अत: यदि मानव उसको जान परमानन्द को प्राप्त करने का इच्छुक है तो उसे अहं से युक्त बुद्धि का त्याग करना ही होगा। अहं का निर्वासन होने पर व्यक्ति ब्रह्मज्ञानी हो जाता है तथा वह सहज सुख में जीने लगता है भाव सुख-प्राप्ति हेतु उसे किसी प्रयास या चेष्टा की आवश्यकता नहीं होती। सहज सुख उसके हृदय में निवास करता है :

ब्रहम गिआनी सुख सहज निवास ॥

परोपकारी

-ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥
-ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ॥

अर्थात् ब्रह्मज्ञानी के हाथों कभी किसी का अहित नहीं होता। उसका हृदय परोपकारी कान्ति से भासित होता है। जिस प्रकार वृक्ष नि:स्वार्थ हो फल एवं छाया प्रदान करते हैं, नदियां नि:स्वार्थ-भाव से सतत प्रवाहित होती हैं उसी प्रकार ब्रह्मज्ञानी नि:स्वार्थ-भाव से मानव-जाति को अपने उपदेशों से अलंकृत करता हुआ परसेवा में तत्पर रहता है। उसके हृदय में यह भावना नहीं होती कि उसके उपदेशों एवं कृत्यों से प्रभावित होकर लोग उसका सम्मान एवं पूजा करेंगे। उसका लक्ष्य होता है कि प्रत्येक मानव उस प्रभु के नाम-सुमिरन की कांति अथवा चमक से भासित हो इस जगत का कल्याण करता रहे। उसके हृदय में सर्वदा निर्धनता का भाव समाया रहता है अर्थात् उसके अन्तर्मन में संतोष एवं वाह्य रूप में दया की भावना निहित होती है। गुरु जी के अनुसार परोपकार की भावना से परिपूर्ण मानव ही ब्रह्मज्ञानी है। यही उसका वास्तविक स्वरूप है।

अविनाशी

ब्रहम गिआनी एक ऊपरि आस ॥
ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥

अर्थात् ब्रह्मज्ञानी का कभी विनाश नहीं होता भाव गुरु जी का मानना है कि जो व्यक्ति उस परमतत्त्व को जान लेता है वह ज्ञानी पुरुष कभी विनष्ट नहीं होता, क्योंकि उसे शरीर की नश्वरता एवं आत्मा के अविनाशी होने का बोध हो जाता है। इस प्रकार ब्रह्मज्ञानी जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो उस परम पद का अधिकारी बन जाता है।

अमूल्य

ब्रहम गिआनी की कीमति नाहि ॥

गुरु जी के अनुसार ब्रह्मज्ञानी अमूल्य है अर्थात् लौकिक सम्पत्ति, धन, रत्न आदि के द्वारा उसका मूल्य नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि सांसारिक मोह से निवृत्त हो उस परमतत्त्व का बोध होने के पश्चात् ही व्यक्ति ब्रह्मज्ञानी बनता है। ब्रह्मज्ञानी स्वयं निरंकार है। वह सभी का ठाकुर अर्थात् सभी जीवों द्वारा पूज्य है, क्योंकि वह समस्त जगत् को मुक्ति-पथ की ओर ले जाने वाला होता है।

अनिर्वचनीय

ब्रहम गिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यरु ॥

गुरु जी के अनुसार ब्रह्मज्ञानी अनिर्वचनीय है। उसकी महिमा का आधा अक्षर भी नहीं कहा जा सकता अर्थात् उसकी महिमा को

(शेष पृष्ठ ५२ पर)

सरदार बघेल सिंघ करोड़सिंघिया

*-स. कृपाल सिंघ**

गुरु साहिबान के इतिहास के बाद सिख इतिहास पर यदि साधारण दृष्टि डालें तो हमें बाबा बंदा सिंघ जी बहादुर से लेकर महाराजा रणजीत सिंघ के जमाने तक के वक्तों में से मिस्लों का दौर सिख कौम की बहादुरी तथा जांबाजी का सुनहरा दौर प्रतीत होता है। यूं तो सिख कौम की शूरवीरता का लोहा अंग्रेजों ने स्वयं स्वीकारा था जब उनका सामना प्रथम अंग्रेज-सिख जंग में सन् १९४५ में हुआ था। एक अंग्रेज सैनिक अधिकारी ने एक बंधिक सिख सैनिक को पूछा कि यदि वे (सिख) विजय प्राप्त कर जाते तो क्या करते? उत्तर में सिख सैनिक ने कहा कि फिर वे इंग्लैंड पर विजय-प्राप्त करते! इस पर अंग्रेज ने कहा कि वो तो सात समुद्र पार स्थित है। तब सिख सैनिक ने कहा कि हमने फिर कलकत्ते से लंदन तक पुल बना लेना था। वह अंग्रेज सिख कौम के उत्साह, आशावाद और कौम प्रति जज़्बे की भावना की विशालता से हैरान हो जाता है। इस कारण शिखर से लेकर जमीन तक और जमीं से लेकर शिखर तक सिख कौम के बारे में इस ऐतिहासिक सच्चाई को हम आंख से ओझल नहीं कर सकते। अब हम अपने गौरवमयी इतिहास की तरफ दृष्टिपात करते हैं तो देखते हैं कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सिख कौम की बहादुरी का सदका मात्र चार वर्षों के समय के दौरान ही दरिया रावी और गंगा दरिया के मध्यस्थ क्षेत्र में एक विशाल सिख हकूमत स्थापित कर ली थी। यह बात अलग है कि वह हकूमत अधिक देर तक टिक न सकी थी। उसके बाद सिख कौम के लिए सर्वाधिक गर्व महसूस करने वाली ऐतिहासिक घटना यह थी कि करोड़सिंघिया मिसल के स. बघेल सिंघ ने दिल्ली पर विजय पाई और उस पर नौ मास तक सम्मानपूर्वक राज्य भी किया। हिंदोस्तान और सिख इतिहास के सुनहरे पृष्ठों की यह दास्तान सन् १७८३ में घटित हुई। करोड़सिंघिया मिसल से पूर्व जत्थे का प्रथम लीडर सरदार शाम सिंघ माना जाता है, जो अमृतसर के नजदीक स्थित गांव नारली का रहने वाला था। जब वह बादशाह के आक्रमण का सामना करता हुआ शहीद हो गया तो इस जत्थे की कमान सरदार कर्म सिंघ के हाथ में आई, जो पंजगराईं, जिसको फैज़गढ़ नाम भी दिया जाता है, के एक खत्री परिवार से था। वह अहमदशाह अबदाली के प्रथम आक्रमण के दौरान सन् १७४८ में शहीद हो गया था। दल खालसा जब मिसलों में परिवर्तित हुआ तो सन् १७४८ में इस जत्थे का लीडर स. करोड़ा सिंघ बना, जो गांव बरकी जिला लाहौर का रहने वाला था। जब वह सन् १७६१ में कुंजपुरे के नवाब के साथ लड़ाई के दौरान शहीद हो गया तो उसके बाद मिसल ने उसका उत्तराधिकारी सरदार बघेल सिंघ को बना दिया। वह एक जांबाज एवं जोशीला और सियासत का धनी होने के साथ-साथ गुरु-घर की अथाह सेवा के लिए श्रद्धा वाला सिख था।

**रीसर्च स्कालर, सिख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शि: गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर*

अब हम उनके द्वारा गुरु-घर के प्रति की अमूल्य सेवा का ही ज़िक्र करते हैं।

सरदार बघेल सिंघ करोड़सिंघिया एक धनवान व्यक्ति था, जिसके पास करोड़ों रुपयों की नकद राशि और दूसरी संपत्ति थी, परंतु वह स्वयं को गुरु-घर का एक तुच्छ-सा सेवक ही समझता था। उसने दिल्ली में सात ऐतिहासिक सिख गुरुद्वारों की तामीर की सेवा करवाई।

यह मात्र उसकी ऊंची योग्यता और राजनैतिक सूझ-बूझ का सदका ही था कि मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय और समरू बेगम के साथ उसके दोस्ताना संबंध थे।

सरदार बघेल सिंघ करोड़सिंघिया गुरु की नगरी अमृतसर के नजदीक स्थित गांव झबाल के एक निर्धन जट्ट परिवार से संबंधित था। सारा परिवार अमृतधारी था और परिवार ने विदेशी आक्रमणकारी लुटेरों के विरुद्ध कई खालसाई संघर्षों में अपनी जानें तक कुर्बान की थीं। स. करोड़ा सिंघ का कोई उतराधिकारी न था, इस कारण से दल ने स. बघेल सिंघ को दल का नेता नियुक्त कर दिया। उस समय दिल्ली पर मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय का शासन था।

फरवरी, सन् १७८३ में बुड्ढा दल की ६०,००० खालसा फौजों ने स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया और स. बघेल सिंघ की अगुआई में दिल्ली पर फरूखाबाद की तरफ से आक्रमण किया। इस दल ने तीन ओर से आक्रमण करते हुए रास्ते में पड़ते गाजियाबाद, बुलंद शहर और खुर्जा, जो उस समय घी और आनाज की बड़ी मण्डी थी, पर अधिकार जमा लिया। इन सेनाओं ने दिल्ली की तरफ बढ़ते हुए अलीगढ़, हाथरस, टुंडला और शिकोराबाद पर भी अधिकार कायम कर लिया।

खालसे का यह दल ८ मार्च, १७८३ को दिल्ली पहुंच गया। यहां पहुंच कर इस दल को तीन भागों में विभाजित कर दिया गया। एक भाग अमूल्य सामान सहित पंजाब की ओर वापस भेज दिया गया और दूसरे दो भाग, एक स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया की कमान तले और दूसरा स. बघेल सिंघ की कमान तले दे दिये गए। स. बघेल सिंघ के जत्थे ने दिल्ली शहर के भीतर प्रविष्ट होने के लिए तीस हजारी द्वार से आक्रमण किया। उन्होंने मलिका गंज, सब्जी मण्डी और मुगलपुरा आदि दिल्ली शहर के उपक्षेत्र अपने अधिकार में ले लिये। स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया भी अजमेरी दरवाज़े की सुरक्षा को तोड़कर शहर के भीतर प्रवेश हो गया।

इसी समय स. जस्सा सिंघ रामगढ़िया भी अपना दल लेकर दिल्ली पहुंच गए। १२ मार्च, १७८३ के दिन खालसे की सभी फौजों ने दिल्ली के लाल किले पर कब्जा जमाकर, उस पर से मुगलई झंडा उतारकर खालसाई निशान झुला दिया। सभी खालसा दलों की तरफ से लाल किला के दीवान-ए-आम में एकत्रता की गई और स. जस्सा सिंघ आहलूवालीया को दिल्ली के तख्त पर बिठाकर उसको "सुलतान-उल-कौम" की उपाधि से निवाजा गया। कुछ ही दिनों के पश्चात दिल्ली शाही हकूमत की मुख्तार बेगम समरू भी दिल्ली पहुंच गई। उसने तीस हजारी में पहुंच कर स. बघेल सिंघ के साथ मुगलिया हकूमत और बुड्ढा दल के नेताओं के साथ वार्ता और शांतिसंधि की बात चलाई। पर्याप्त विचार के उपरांत निम्नांकित आठ मुद्दों पर दिल्ली की शाही हकूमत और बुड्ढा दल के नेताओं के बीच संधि हुई :-

१. दल खालसा दिल्ली खाली करके वापस चला

जाएगा।

२. स. बघेल सिंघ जी दिल्ली में अपने साथ ४००० खालसा सेनाओं के साथ एक वर्ष रहेंगे।

३. दिल्ली और इर्द-गिर्द की कानून-व्यवस्था की समस्त ज़िम्मेवारी उनके सिर होगी।

४. स. बघेल सिंघ की सेना का डेरा सब्ज़ी मण्डी में होगा।

५. राजधानी ठहरने के समय के मध्यस्थ सिख किसी के साथ भी नहीं उलझेंगे।

६. दिल्ली की कानून-व्यवस्था बनाए रखने के बदले स. बघेल सिंघ एक रुपये में से छ: आने (३७.५ प्रतिशत) हिस्सा महसूल चुंगी आय में से लेने के अधिकारी होंगे।

७. स. बघेल सिंघ को दिल्ली में स्थित सात ऐतिहासिक गुरुद्वारों के निर्माण का अधिकार होगा।

८. गुरुद्वारों के निर्माण की सेवा को एक वर्ष के भीतर सम्पूर्ण करना होगा।

इस प्रतिज्ञापत्र के बाद स. बघेल सिंघ ने दिल्ली की सभी महसूल चुंगियों और चांदनी चौक में स्थित ऐतिहासिक कोतवाली पर अधिकार जमा लिया। स. बघेल सिंघ जी ने सर्वप्रथम गुरुद्वारा साहिब माता सुंदरी जी और माता साहिब कौर जी की स्मृति में तेलीवाड़ा (दिल्ली) में निर्माण किया। दूसरा गुरुद्वारा जै सिंघपुरा में निर्माण कराया जो स्थान श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी के साथ संबंधित है। तीसरा, दरिया यमुना के किनारे उस स्थान पर चार समाधियां निर्माण कराईं जहां श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी, माता सुंदरी जी, माता साहिब कौर जी और माता सुंदरी जी के पालित पुत्र अजीत सिंघ का अंतिम संस्कार हुआ था। श्री गुरु तेग बहादर जी के साथ संबंधित दो ऐतिहासिक स्थानों रकाब गंज और चांदनी चौक में कोतवाली के स्थान पर भी गुरुद्वारों का निर्माण कराया।

इन दोनों यादगारी स्थानों पर मुसलमानों ने मस्जिदें तामीर कराई हुई थीं। स. बघेल सिंघ ने बहुत सूझ-बूझ के साथ मुसलमानों से इन स्थानों का कब्जा लिया। स. बघेल सिंघ ने गुरुद्वारा शीश गंज, चांदनी चौक के नाम पर हकूमत से जागीर भी लगवाई। छठा गुरुद्वारा मजनूं के टीले में निर्माण कराया गया और सातवां मोती बाग में निर्माण कराया, जहां श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज कुछ समय रुके थे। इन सभी गुरुद्वारा साहिबान का निर्माण मात्र आठ ही मासों में सम्पूर्ण कर लिया गया। दिल्ली के मुगल बादशाह ने इन गुरुद्वारों के नाम सदैव के लिए महसूल चुंगी का आठवां भाग लगा दिया। (ईस्ट इण्डिया कंपनी ने जब दिल्ली पर कब्जा किया तो उन्होंने यह व्यवस्था बंद कर दी थी।) स. बघेल सिंघ लगभग नौ मास दिल्ली में रहकर अपने मिशन को पूर्ण कर दिसंबर १७८३ को अपने दल सहित पंजाब आ गए।

जानकारी का मुख्य स्रोत:

हिस्टरी ऑफ दा सिखज़ (अंग्रेजी), चौथा संस्करण, लेखक डॉ. हरीराम गुप्ता।

साका सारागढ़ी

*-स. रावरणवीर सिंघ**

सवा लाख से एक लडाऊं,
चिड़ियों से मैं बाज तुड़ाऊं,
तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊं ॥

दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मुगलों द्वारा किये, दिल दहला देने वाले अत्याचारों के विरोध में, डंके की चोट उपरोक्त नारे की सिंघ-गर्जना करके सिख कौम की रग-रग में एक ऐसा जोश भर दिया जिसकी कोई मिसाल नहीं। उसी की वजह से कोई भी सिख भयंकर से भयंकर स्थिति में उससे जूझने से नहीं हिचकता।

लगभग १११ वर्ष पहले अर्थात् १२ सितंबर १८९७ के रोज तत्कालीन ३६ सिख रेजिमेंट के २१ सिख जवान, अफगानिस्तान के वजीरिस्तान इलाके में बने "लाकहार्ट" किले की सुरक्षा के लिये बनाई गई दो चौकियों गुलिस्तान और सारागढ़ी में से एक चौकी सारागढ़ी में तैनात थे।

उस रोज अलसुबह हजारों कबाइली पठानों ने धावा बोलकर गढ़ी को चारों ओर से घेर लिया। वक्त की नजाकत देखकर गढ़ी इंचार्ज हवलदार स. ईश्वर सिंघ ने सिगनल-मैन स. गुरमुख सिंघ द्वारा हैलीयोग्राफ के जरिये ३०-४० मील दूर अपने अंग्रेज कमाण्डर कर्नल नाइटन को तुरंत हमले की सूचना देकर आदेश और मदद के लिये फौरन कुमुक भेजने की प्रार्थना की। कर्नल ने कुमुक भेजने का विश्वास देकर दुश्मन का मुकाबला करने का आर्डर दे दिया।

फौजी का धर्म केवल आर्डर मानना होता है। "It is not to reason why but do and die." प्लाटून कमाण्डर ईश्वर सिंघ ने अपने मातहित जवानों से ऐसी स्थिति में क्या और कैसे करना चाहिए पूछा, क्योंकि उनके पास न ज्यादा गोला-बारूद और हथियार थे, न ही भरपूर रसद। बाहर से आने वाली जवानों की मदद की सम्भावना भी शंका भरी थी और सामने अनेकों पठानों के रूप में मौत मुंह फैलाए खड़ी थी।

हवलदार ने कहा कि हमारे पास केवल दो रास्ते हैं। या तो जान बचाने के लिये आत्म-समर्पण करके कैदी होकर इनकी जेलों में सड़ें और मरें और साथ-साथ कौम और खानदान के मान पर सदा के लिये कलंक लगवा लें या दूसरे रास्ते के मुताबिक वाहिगुरु का नाम लेकर शत्रु पर टूट पड़ें और मौत को गले लगाते हुये शहादत पायें।

सबने अपनी बंदूकें तानकर जोर का नारा बुलंद किया, "बोले सो निहाल, सति श्री अकाल"। उस्ताद! हम सब खालसा सिपाही हैं, सिंघनी माताओं ने हमें जन्मघुट्टी में वीर रस देकर कौम के लिये कुर्बान होने का पाठ पढ़ा दिया था :

सूरा सो पहिचानिऐ जु लरै दीन के हेत ॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥
(पन्ना ११०५)

ऐसी लोरियां हमें हमारी माताओं ने झोलियां भरकर बख्शी हैं। दुश्मन चाहे कितनी भी बड़ी तादाद में क्यों न हो, एक-एक खालसा में सवा लाख से लड़ने की कूवत है।

सुबह से चली गोलाबारी लगातार ७ घंटे तक चली, दो बजे सिगनलमैन स. गुरमुख सिंघ,

**मोहल्ला-पोस्ट मान्दी, नारनौल, हरियाणा।*

जो पूरी तरह जख्मी था, ने हैलियोग्राफी से फिर कर्नल से दम टूटती और लड़खड़ाती जुबान में सम्पर्क साधा—"१९ जवान शहीद हो गये, गोला-बारूद सब खत्म है, गढ़ी अभी तक हमारे कब्जे में . . .।" वाक्य पूरा भी नहीं हो पाया था कि सनसनाती गोली उसे भी गुरु का प्यारा कर गई।

हवलदार न जाने कितने जख्मों से लहू-लुहान, भूखा-प्यासा अपने मेन मोर्चे को संभाले हुए था। एक भी गोली बची नहीं। करे तो क्या करे? जुनून और जोश में भरा गढ़ी की दीवार से कूद कर बंदूक के बट और बोनट से अंधाधुंध मारने लगा। कई पठानों को धराशायी कर ही रहा था कि तभी पीछे से पीठ में चार-पांच गोलियां शरीर को पार कर गईं। गिरते-गिरते बुदबुदाया—"लख-लख शुक्र तेरा वाहिगुरु! लाज रख ली!" मरते दम तक फर्ज निभाया; गढ़ी पर कब्जा नहीं होने दिया। गुरु का सिंघ अपने २० साथियों सहित कर्त्तव्य पर न्यौछावर हो गया।

इन जवानों की शहादत पर उस समय के अंग्रेज गवर्नर जनरल ने कहा था, "इस तरह की बहादुराना वफादारी की मिसाल भारतीय सेना में और कोई नहीं मिलती।" और जब इस घटना की सूचना इंग्लैंड के हाऊस आफ कामंज़ में पहुंची तो हर सदस्य ने पूरी-पूरी प्रशंसा करते हुये, खड़े होकर इन शहीदों को सैल्यूट अर्पित किया।

इन २१ जवानों की याद में फिरोजपुर में २७११८ रुपये की लागत से एक गुरुद्वारा बनवाया गया, जिसका १९०४ में पंजाब के तत्कालीन लै. गवर्नर चार्ल्स रेज ने उद्घाटन किया।

१२ सितंबर १९९७ को इस महान घटना की प्रथम शताब्दी पर सिख रेजीमेंट के भूतपूर्व लै. जनरल स. के. एस. (रंधावा) ने इस दिन को सिख रेजीमेंट की महान उपलब्धि दिवस के रूप में मनाये जाने तथा उन शहीदों की याद को बनाये रखने का आह्वान किया।

आइये! हम सभी उन शूरवीरों योद्धाओं को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करें।

पंजाबी-काव्य

तस्वीर तेरे शहिर दी

आ बदलिए सज्जणां नुहार आपां शहिर दी।
रहिण देणी सोच नहीं बीमार आपां शहिर दी।
आपा वारू जज़्बे, मनां 'च पैदा करांगे।
डट्ट जांगे, पैर जित्थे आपणा धरांगे।
हर हीले जित्तणा, कदे ना बाजी हरांगे।
समें दी झनां नाल हिम्मतां तरांगे।
हर हीले लैणी हुण सार आपां शहिर दी।
आ बदलिए सज्जणां . . .।
कर देणे साफ दिल, पाणी ते हवा दे।
बणवांगे शिंगार रुक्ख, चप्पा चप्पा थां दे।
ना होण रोगी चंन एथे, किसे दुखी मां दे।
पैण झलकारे एथे, सुरगां दी छां दे।
रक्खांगे जिंद मददगार आपां शहिर दी।
आ बदलिए सज्जणां . . .।
समें दी कदर हर शख़्स नू सिखाणी है।
कामयाब है ओही जिहड़ा समिआं दा हाणी है।
अज्ज नूं संभालांगे, जो बीतिआ कहाणी है।
जीउणा सच्च लई, सतिपुरखां दी बाणी है।
रक्खांगे अणख खुद्दार आपां शहिर दी।
आ बदलिए सज्जणां . . .।

-स. सतनाम सिंघ कोमल, २४८, अरबन अस्टेट, लुधियाना-१४१०१०, मो. ९४१७३७२३४५

कैसी होली ?

*-भाई कृपाल सिंघ**

दुनिया में हमेशा एक दौर चलता रहता है। सच और झूठ की हमेशा लड़ाई होती है। सच को दबाने के लिए झूठ बड़ी कोशिश करता है कि वह किसी न किसी तरह से दरपरदा हो जाये, छुप जाए। मगर सच एक ऐसी चीज़ है जो कभी दरपरदा न हुई, न हो सकती है; आख़िर निकल आती है। तो यत्न इस बात का होना चाहिए कि सच क्या है, हम उसको जानें। किसी के कहे पर, सुने-सुनाये पर नहीं बल्कि अपनी आंखों से देखें, अपने कानों से सुनें।

भक्त प्रहलाद प्रभु-भक्ति में रत थे। उनका पिता हिरण्यकश्यप कहता था कि मैं ही परमात्मा हूं, मुझे सब पूजो। जो गर्ज़मंद लोग थे, जो असूलों से गिरे हुये लोग थे, उन्होंने मान लिया कि आवश्यकताओं के दौर में हिरण्यकश्यप खुदा है। सबको पेट की पूर्ति चाहिये, आवश्यकताओं की पूर्ति चाहिये। मगर जो असूल-प्रस्त था, प्रहलाद, उसने देखा, भई, मेरा राम, मेरा प्रभु परमात्मा तो सब में है। अकेला हिरण्यकश्यप खुदा कदापि नहीं हो सकता। यह हिरणकश्यप कैसा है जो कहता है उसको छोड़ो, मुझे पूजो! भक्त प्रहलाद ने इस बात की परवाह नहीं की। सच का पुजारी था। कितनी ही उस पर सख़्तियां की गईं, मगर उसने परवाह नहीं की। उसका कारण कि वह प्रभु का पुजारी था, दुनिया का पुजारी नहीं था, ज़रूरतों का पुजारी नहीं था। वह अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिये सच को दरपरदा नहीं करना चाहता था।

हमें इतिहास बतलाता है कि कितनी-कितनी तकलीफ़ें उसको दी गईं। एक वाक्या उनके जीवन में यही था जो कल आप पर भी है, वह क्या? होली! होली किसकी याद में है? सच तथा झूठ की लड़ाई है और सच की फ़तह (विजय) का ज़िक्र है। भक्त प्रहलाद का पिता यह चाहता था कि प्रहलाद मुझे पूजे। परंतु भक्त प्रहलाद कहता था, नहीं, मैं तो प्रभु का पुजारी हूं। वह प्रभु ज़र्रे-ज़र्रे में है। कई तरीकों से उसने भक्त प्रहलाद को दुख दिया, मगर उसने अडोलता कायम रखी। भक्त का यह स्वभाव होता है कि सारी दुनिया भी अगर मुख़ालिफ हो फिर भी भक्त प्रभु-भक्ति का मार्ग नहीं छोड़ता।

वह देखता है कि प्रभु उसका आधार है। बच्चा देखता है कि मेरी माता मेरे साथ है। हज़ार लोग डरायें, उसको ये कहें, वो कहें, मगर वह शेर है। वह शेर है, अपने आप नहीं, अपनी माता के आधार पर। इसी तरह जो अनुभवी पुरुष है, वह देखता है मेरा मालिक मेरे सिर पर है। मेरे सिर पर ही नहीं, मुझे निर्देश भी कर रहा है। उसके आधार पर वह जी रहा है। सारी दुनिया उसको मारने के लिये आये तो भी वह वेपरवाह है और फिर माता उसको मरने कैसे देगी? तो यह वाक्या है कि जब प्रहलाद किसी तरह से सत्य-मार्ग से पीछे नहीं हटा तो उन्होंने उसे मारने की एक नई तरकीब निकाली।

प्रहलाद की एक भुआ थी, होलिका। होलिका को यह वर प्राप्त था कि अगर वह आग में बैठे तो वह जल नहीं सकती। उसने सोचा

*२२१, सेक्टर १८, पंचकूला (हरियाणा)

कि वह बच्चे को गोद में लेकर आग में बैठ जायेगी। बच्चा जल जायेगा और वह बच जायेगी। ऐसा ही किया गया। बड़ी सी चिता तैयार की, बहुत सारी लकड़ियों का ढेर लगा उसमें आग लगा दी और होलिका प्रहलाद को गोद में लेकर बीच में बैठ गई। जब दिन चढ़ा, देखा तो प्रहलाद बचा हुआ था, होलिका जल गई थी।

उसकी याद में यह होली का दिन है। यह इसका महातम है कि आख़िर सच की जय है और झूठ की हार है। यह दिन हम सब को पूछता है कि हम सच के पुजारी हैं कि झूठ के? ज़ुबान से हम कुछ भी कहें, दिल तो जानता ही है कि हम सब सच के पुजारी हैं या झूठ के? सतसंग में जाते हैं, सत्य को तलाश करने के लिये। यह याद अवश्य रखें कि जो सच है वह कभी छुप नहीं सकता। हज़ार बादलों में भी वह अपनी चमक दे जाता है। सिर्फ देखने वालों की ज़रूरत है, यदि आंख हो तो।

प्रभु तो काल का भी काल है। काल की जो दुविधा है, उससे सावधान रहना है। बात बड़ी साफ़ है। साफ़गोई, साफ़दिली में तो कोई दुविधा है ही नहीं। मान जाता है कि जो सुनी-सुनाई पर नाच रहे हैं, वे रोते हैं।

कई भाई भाइयों पर रंग फेंकते हैं, कई तो दूसरों के मुंह भी कालिमा पोतकर काले कर देते हैं। होली का त्यौहार अच्छे ढंग से मनाना चाहिए।

यह तो हुई बाहर की होली। अब एक अन्य होली संतों की भी है। वह होली क्या है? वे देखते हैं कि सारी दुनिया होली खेल रही है। मगर जो होली ये खेल रहे हैं, वह कैसी होली है? यह होली खेलने से जन्म-मरण ख़त्म होता है। जो सच के पुजारी हैं, सिक्ख भाइयों में, आपको पता है, होला निकालते हैं, खुशी करते हैं कि सच की जय हो गई है।

जो अनुभवी पुरुष हैं वे सब एक हैं। वे सब मनुष्य-जाति के लिए होते हैं, सबका उद्धार करने के लिए। वे सत्य के पुजारी होते हैं और हकीकत की राह दिखाते हैं। वे आंख खोलते हैं, जिससे हम हक़ीकत को देखने वाले हो जाते हैं। वे सबको सब बंधनों से आज़ाद करने आते हैं, बंधन में डालने नहीं आते।

रूह, मन-इंद्रियों के घाट पर जकड़ी गई, अपने आप को भूल गई, प्रभु को भूल गई बाहर की रंगरलियां मना-मना कर, होली खेल-खेल कर। इस हालात में जीवों को दुखी देखकर, उस मालिक के दिल में दया की लहर उठती है। सब कोई कर सकता है। तो यह मिशन उनका है जो हमेशा होता है। होली के त्यौहार को सामने रखकर वे बताते हैं कि दुनिया कैसी होली खेल रही है और कैसी खेलनी चाहिए :

आजु हमारै बने फाग ॥
प्रभ संगी मिलि खेलन लाग ॥
होली कीनी संत सेव ॥
रंगु लागा अति लाल देव ॥ (पन्ना ११८०)

फ़ागुन में हर तरफ फूल खिल जाते हैं, बड़ी रंग-बिरंगी बहार होती है, बड़ा जी करता है बाहर घूमने को। घर बैठने को जी नहीं करता। शेख साअदी जी कहते हैं कि अब बैठने की बहार नहीं, बाहर चलो मर्ग़ज़ार में, वहां कुदरत अपना इज़हार कर रही है। उस प्रभु की कुदरत के नज़ारे लो! अब कोने में बैठने की ज़रूरत नहीं है।

यह ज़िंदगी जो मिली है, यह एक फ़ागुन मास है। हमारी आत्मा मन के अधीन होकर इंद्रियों के घाट पर फैलाव में जा रही है, बड़े नशे में जा रही है। इस नशे का हश्र क्या होगा? फैलाव में जो सुरति फैल रही है, बाहर के नशे और राग-रंग-खेल हो रहे हैं, कहीं

कुछ नाच-कूद हो रहे हैं, कई तरह की रंगरलियां मना रहे हैं दुनिया के लोग। यह एक ऐसी होली है जो सारा जहान खेल रहा है, यहां कौमों, मज़हबों, मुल्कों का ही सवाल नहीं। बाहर के भोगों-रसों और नशे में, यह होली है जो हर एक इंसान खेल रहा है। केवल गुरमुख-जन ही इस से मुक्त कहला सकते हैं।

बाहर लोग होली खेलते हैं, नाचते हैं, कूदते हैं, घर-घर में यही हो रहा है। इंसान बच्चों में बैठा मस्त है। इंसान दुनिया का रूप बना बैठा है, प्रभु को भूल रहा है। कहीं धूल (मिट्टी) उड़ा रहे हैं, कहीं मिट्टी सिर पर डाल रहे हैं; कहीं नशों में पांव जमीन पर टिकते नहीं हैं। घर-घर में ऐसी होली खेली जा रही है। सब इंद्रियों के भोगों-रसों में मस्त हो रहे हैं, इस नशे में चूर हो रहे हैं।

जैसे लोग होली बाहर खेल रहे हैं, रंग-तमाशे, नाच-रंग कर रहे हैं, इसी तरह यह मनुष्य-देह हमें मिली है, हमारी सुरति भी ऐसी ही होली खेल रही है। इंद्रियों के भोगों-रसों में लम्पट हो रही है, नाच-नचा रही है, इंद्रियों के भोगों-रसों में। 'काम' आया तो देखो उसकी शक्ल क्या बन जाती है! 'मोह' आया तो उसकी शक्ल कुछ और ही नज़र आती है। कहते हैं, यह मनुष्य-देही मिली है। हमारी आत्मा, जो सुरति है, मन और इंद्रियों के घाट पर यह अजीब होली खेल रही है। अपने आप की होश नहीं है। जो नाचते होते हैं, वे अपना मुंह भी काला करते हैं, दूसरों का भी करते हैं। आप भी अशोभनीय रंगे जाते हैं, दूसरों को भी इन्हीं से रंग कर खुश होते हैं। जिस रंग में आप रंगा है, कोई कामी है, जो लोगों को काम के नशे में फंसा रहा है। जो क्रोधी है, ईर्ष्यालु है, वह क्रोध और ईर्ष्या का प्रसार कर रहा है। यह सच्चा असूल नहीं है। सच का उसूल तो मिलकर बैठना है।

वैसे आत्मा परमात्मा से कभी जुदा नहीं है, न हुई, न है, न हो सकती है।

एका सेज विछी धन कंता ॥
धन सूती पिरु सद जागंता ॥ (पन्ना ७३७)

एक ही सेज पर, आत्मा और परमात्मा दोनों ही विराजमान हैं। एक ही सेज बिछी हुई है, मगर हमारी सुरति मन-इंद्रियों के घाट पर बाहर फैलाव में जा रही है। हमें चाहिए कि हम बाहरी रंगरलियों से हटें, अंतरमुखी होवें। आत्मा का पीया हमेशा इसके साथ है, न कभी इससे जुदा हुआ है और न हो सकता है। श्री गुरु अरजन देव जी ने फ़रमाया है:

उठि वंञु वटाऊड़िआ तै किआ चिरु लाइआ ॥
(पन्ना ४५९)

हे रास्ते के मुसाफिर! उठ! जाग! तू क्यों देर कर रहा है? मनुष्य-जीवन हाथों से जा रहा है। हर दिन, हर घंटा, हर घड़ी तुम्हें उस आख़िरी परिवर्तन के, जिसको मौत कहते हैं, नज़दीक ला रहे हैं। तू अब भी सो रहा है! कब जागेगा? कितनी हमदर्दी के लफ़्ज़ हैं!

जगत क्या है? एक खेल है, संयोगों का काम है, लेने-देने का सामान है। जब ख़त्म होता है, सब कुछ चला जाता है।

कहा सु भाई मीत है देखु नैन पसारि ॥
इकि चाले इकि चालसहि सभि अपनी वार ॥
(पन्ना ८०८)

न कोई भाई है, न कोई बंधु, न माता, न पिता, न स्त्री, न पति, न बच्चा, सब लेने-देने का सामान हैं, सब सो रहे हैं। इसमें जो जाग उठा, हक़ीकत को पा गया। फिर कहां के बंधु, कहां के रिश्तेदार रह जाते हैं?

गुरु नानक साहिब का जपु जी साहिब में फरमान है :

संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि

भाग ॥ *(पन्ना ६)*

संयोग और वियोग दोनों असूल हैं। संयोग के ज़रिये मिलता है, वियोग के ज़रिये ख़त्म होता है, यहां से जाता है। ये दो असूल सारी दुनिया को चला रहे हैं। जो लेना-देना है, उसके मुताबिक भाग्य बन रहे हैं। दुनिया का सिलसिला इसी तरीके से चल रहा है। सौ सियाने एक ही मत। उनका नज़रिया है दुनिया को देखने का, घर को भी और बाहर को भी। वहां तो आत्मा की नज़र से देखा जाता है। उनको कभी भूल कर भी यह ख़्याल नहीं आता कि यह मेरा रिश्तेदार है।

दुनिया की चाल इस तरह से चल रही है, कोई यहां उतरा कोई अगले स्टेशन पर उतरा। कोई चढ़ बैठे, कोई उतर गये। रात का समय हुआ, पेड़ के नीचे कई पक्षी आ बैठे। दिन चढ़ा, सब अपनी-अपनी राह चल पड़े। कौन किसका मीत? एक ही मित्र है, परमात्मा, प्रभु, गुरु।

जिनकी वो आंख खुलती है, वे सभी काम करते नज़र तो आते हैं, मगर वे उन बंधनों में नहीं हैं। एक सपेरा है, वह सांपों में रहता है, मगर ज़हर के असर को कबूल नहीं करता। गले से भी लिपटाता है, मगर उसके ज़हर को नहीं लेता। दूसरा, जो सपेरा नहीं है, वह पास से गुज़रे और सांप फुंकारा मारे तो ज़हर चढ़ जाती है। जैसा-जैसा इंसान, जिस-जिस रंग में रंगा है, उसकी सोहबत का वैसा ही असर होगा। "जैसी सोहबत वैसा रंग।" जो चीज़ें हमें बरतने के लिए मिली थीं, यह शरीर, इंद्रियां, बाल-बच्चे, रुपया-पैसा, जायदादें, हम उन्हें भोगने लग गये। ऐसी होली किस काम की है जिसने हमको प्रभु से जुदा कर रखा है? हम आत्मा हैं, हमने प्रभु के सच्चे नाम का रस लेना है, प्रभु के पुजारी बनना है। वही हमारा बंधु है, वही भाई है:

मेरे हरि प्रीतम की कोई बात सुनावै सो भाई सो मेरा बीर ॥ *(पन्ना ८६१-६२)*

कबीर जी कहते हैं:

इंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥ *(पन्ना २७४)*

जो इंद्रियों को प्रभु-नाम के चिंतन से वश में कर ले, वह पांचों दुखों से, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के हमलों से बच जाता है। गुरबाणी का निर्मल कथन है :

दस इंद्री करि राखै वासि ॥
ता कै आतमै होइ परगासु ॥ *(पन्ना २३६)*

कुछ चुनिंदा गुरमुखों को छोड़कर हमारी यह हालत है:

मनि मैलै सभु किछु मैला तनि धोतै मनु हछा न होइ ॥ *(पन्ना ५५८)*

जिसका मन मैला है, उसका सब कुछ मैला है। मात्र तन के धोने से मन साफ़ नहीं होगा। इच्छा से दुनिया में फंस रहे हैं। दिनों-दिन ख़्वाहिश बढ़ रही है। जो सौ के पीछे था, वह हज़ार के पीछे है, हज़ार वाला, लाख के पीछे है:

सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥
त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥
(पन्ना २७८)

इस हाल में दुनिया जा रही है। झोंपड़ी वाला कहता है, हमारा महल हो! महल वाला कहता है, हमारा शीशमहल हो, शीशमहल के साथ फिर मोटर हो, हवाई जहाज़ हो! ख़्वाहिश तो बढ़ती ही जाती है। फ़लाना इतना ऊँचा है। हमें संतुष्टि चाहिए। नीचे वालों को देखें, तब हमें संतुष्टि आये। लेकिन हम ऊपर ही ऊपर देखते चले जाते हैं। इच्छा के सबब से हम दुनिया में बंध रहे हैं। इच्छा को दूर करो, इससे मैल बढ़ रही है।

गुरि दिखलाई मोरी ॥
जितु मिरग पड़त है चोरी ॥ *(पन्ना ६५६)*

गुरु हमें वह मोरियां दिखलाता है, इंद्रियों के घाट, जहां से ये हमले होते हैं, वहां पर मैल चढ़ती है।

मूंदि लीए दरवाजे ॥
बाजीअले अनहद बाजे ॥ (वही)

जब हम दरवाज़ों को व्यवस्थित कर लेंगे तो जो अनहद की ध्वनि अंतर में हो रही है उसको सुनने वाले हो जाएंगे, हक़ीकत को देखने वाले हो जाएंगे।

अगर गंदगी का ढेर हो, ऊपर रेशमी कपड़ा भी डाल दो, इत्र भी डाल दो, तो भी उससे बदबू आयेगी। बर्फ़ हो, उस पर काला कम्बल डाल दो, ठंडक तो फिर भी आयेगी। जो अंतर की हालत है, वह असर देगी। हमें अंतर से सफ़ाई चाहिये। यह नहीं कि बाहर की सफाई अनावश्यक है। बाहर की सफ़ाई भी हो क्योंकि Cleanliness is next to Godliness. मगर जब तक अंतर की सफाई नहीं, तब तक काम नहीं बनता। गुरबणी हमें झकझोरती है :

मनहु कुसुधा कालीआ बाहरि चिटवीआह ॥
रीसा करिह तिनाड़ीआ जो सेवहि दरु खड़ीआह ॥
(पन्ना ८५)

कौन-सी चीज़ है जिसके पाने से सब कुछ पाया हुआ हो जाता है?

नामु मिलै मनु त्रिपतीऐ . . . ॥ (पन्ना ४०)

नाम प्रभु के इज़हार में आई सुरति ही है। वह महाचेतन प्रभु है। हमारी आत्मा चेतन स्वरूप है, conscious entity है। जब मन-इंद्रियों के घाट से आज़ाद होकर उसमें लगती है, यह संतुष्ट हो जाती है। कोई ख़्वाहिश नहीं रहती, उस महारस को पाकर। यही अर्थ है होली मनाने का, होला खेलने का, मन में जमी मैल को धोकर प्रभु-रंग में रंगा जाए।

कविता

. . . ऐसे होला-होली

हमें प्यार से हैं मनाना, ऐसे होला-होली।
कौमी एकता में बंध जाए, छिन्न-भिन्न हर टोली।
धर्म-जाति-भाषा-भेदों की, दृढ़ प्राचीर ढहाएं।
जन-मन में अवरुद्ध एकता, सरिता पुनः बहाएं।
नई शती के स्वागत की, मिल अरुणिम ऊषा लाएं।
बरसाएं प्रेमामृत भू पर, घिर-घिर भाव घटाएं।
मानवता का वक्ष न छेदे, दानवता की गोली।
सदी इक्कीसवीं में हम खेलें, ऐसे होला-होली।
सत्य-अहिंसा-त्याग-दया की, भर-भर कर पिचकारी।
एक-दूसरे को रंग डालें, दुनियां रचें प्यारी।
अनाचार-आतंक-घोटालों की हो दूर बीमारी।
वर्ण-वर्ण के सुमनों से फिर, महक उठे फुलवारी।
कोई भी जयचन्द देश की, लगा न पाए बोली।
सदी इक्कीसवीं में हम खेलें, ऐसे होला-होली।
जमा-मिलावट-रिश्वतखोरी की, होली जल जाए।
जीवन-मूल्य प्रहलाद प्रफुल्लित, सकुशल बाहर आए।
मोह-खम्भ को भेद ज्ञान, नर सिंघ प्रकट हो जाए।
अपसंस्कृति के असुर राज का, उर विदीर्ण कर जाए।
गूंजें गली-गली हंसगुल्ले, ले सूरतें भोली।
सदी इक्कीसवीं में हम खेलें, ऐसे होला-होली।
घर-घर में अनुराग-त्याग की बन्दनवार सजाएं।
विश्वबंधुता की फहराएं, जग में धवल ध्वजाएं।
भू का नव-श्रृंगार देखकर, परियां भी लजाएं।
बरसा-बरसा सुमन खुशी में, ढोली ढोल बजाएं।
उतरी है नवशती-वधू की, इस आंगन में डोली।
सदी इक्कीसवीं में हम खेलें, ऐसे होला-होली।

-डॉ. दादूराम शर्मा, प्राध्यापक, महाराज बाग, भैरोगंज, सिवनी (म. प्र.)-४८०६६१

सिख समाज में औरतों का स्थान

*-स. अवतार सिंघ**

कहते हैं कि अगर किसी समाज की ऊंचाई को मापना हो तो देखिये कि वहां औरतों को क्या स्थान मिलता है। वैसे तो सारा संसार औरत के पीछे भाग रहा है या औरत से भागता है, इसीलिए समाज आज बीमार चल रहा है। समाज की इस बीमारी का कारण औरतों को तुच्छ, नीच, बेकार, लाचार, गुलाम, अबला, नासमझ, कठपुतली आदि समझना है।

मानव-समाज का आधा भाग औरत है। परन्तु कुछ एक पश्चिमी चिन्तकों ने औरत को एक मजेदार गलती कहकर स्त्री जाति की बुराई कर उसको दुत्कारा है। अरस्तू जैसे फिलास्फरों ने औरत को 'नामुकम्मल वस्तु' तक कहा है। हिन्दोस्तान में भी तुलसीदास जैसे विद्वान कवियों ने इसको आधा जहर और आधा अमृत कहा है। मुस्लिम भाईचारे में दो औरतों (स्त्रियों) की गवाही को एक पुरुष की गवाही के बराबर समझा गया है, महात्मा बुद्ध जी ने कहा कि स्त्री में रूह ही नहीं होती।

हिन्दोस्तान में सिख-समाज ऐसा समाज है जहां औरतों को पुरुषों के बराबर अधिकार प्राप्त हैं। सिख धर्म के प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी ने औरतों की बुराई करने वालों को कहा, "स्त्री से ही जीव जन्म लेता है, उससे ही प्राणी के शरीर की रचना होती है, स्त्री से ही सगाई और विवाह होता है। स्त्री से ही समाज के रिश्ते कायम होते हैं। फिर स्त्री को जिससे बड़े-बड़े लोग, भाव पीर, पैगम्बर, अवतार, राजा आदि पैदा होते हैं, नीच या गंदा कैसे कहा जा सकता है?

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥
(पन्ना ४७३)

श्री गुरु नानक देव जी ने स्त्रियों का सम्मान करते हुए भंगरनाथ योगी से संवाद में गृहस्थ जीवन को ऊंचा बताया। भाई गुरदास जी के शब्दों में भंगरनाथ योगी ने संवाद किया:

पुछे जोगी भंगरनाथु, तुहि दुध विचि किउ कांजी पाई ?
फिटिआ चाटा दुध दा रिड़किआ मखणु हथि न आई।
भेख उतारि उदासि दा, वति किउ संसारी रीति चलाई? (वार १:४०)

योगी भंगरनाथ ने श्री गुरु नानक देव जी से प्रश्न किया कि जैसे कोई दूध में खटास डाल दे तो उसमें से माखन निकालना कितना कठिन है, बल्कि सम्भव ही नहीं है। आप ने उदासी वस्त्र उतार कर संसारी वेश (गृहस्थ) को क्यों धारण किया? गुरु जी उसे समुचित उत्तर देते हुए व्यंग्य करते हैं कि आप लोग जिस गृहस्थ को त्याग कर आते हो फिर उन्हीं गृहस्थियों के पास भिक्षा मांगने उनके घर जाते हो, जब कि अपने साधनों अथवा हाथों से कुछ देने से ही फल मिलता है :

**सस्ता वस्त्र भंडार, नाका रामनगर रोड, फैजाबाद (यू. पी.)। मो. ९२३६०-६५७२९*

नानक आखे, 'भंगरिनाथ! तेरी माउ कुचजी आही।
भांडा धोइ न जातिओनि भाइ कुचजे फुलु सड़ाई।
होइ अतीतु ग्रिहसति तजि फिरि उनहु के घरि मंगणि जाई।
बिनु दिते कछु हथि न आई ॥४०॥' (वार १:४०)

स्त्री में एक गुण नहीं बल्कि गुणों की खान है। जो स्त्री घर में मां के रूप में, पत्नी के रूप में, बहन के रूप में, बेटी के रूप में, बहू के रूप में अपने को ढालती है, बेटी बन अपने पिता के घर पलती है, फिर ससुराल में अपने पति के साथ रहकर दो परिवारों को जोड़ती है; मां के रूप में अपने बच्चे को नौ महीने तक अपने शरीर में पालती है और नौ माह बाद उससे ममता की चाह में अपना दुलार लुटाती है, वह औरत महान है। इसीलिए गुरु साहिबान ने औरत को "बत्ती सुलखणी" कहकर सम्मान दिया। "औरत यकीना" श्री गुरु अरजन देव जी का फरमान है। छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने एक प्रश्न के उत्तर में "औरत ईमान" शब्दों का उपयोग किया था।

जिस औरत को पर्दे में रखने का रिवाज था उसे तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी ने हुक्म किया था कि वो उजला कपड़ा पहन कर बगैर परदे के, घूंघट न निकाल कर, गुरु-दरबार संगत में आये और किसी प्रकार का संकोच न करे :

सोलहवीं शताब्दी में स्त्रियों के प्रति हो रहे अन्याय के विरुद्ध गुरु पातशाहों ने उपदेश दिये। उस समय के समाज में स्त्रीजाति की किसी प्रकार की कोई इज्जत नहीं थी। देश के हाकिमों के अलावा विदेशी हमलावर भी स्त्रियों को अपने जुल्म का शिकार बनाते थे। समाज में स्त्रियों को हवस की वस्तु समझा जाता था, जबकि स्त्री-पुरुष दोनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं और मिल-जुलकर समाज की उत्पत्ति और विकास करते हैं। उस समय का समाज स्त्रियों के विरुद्ध था। सती-प्रथा अपने जोरों पर थी। लोग पति के मरने के बाद उसके शरीर के साथ उसकी पत्नी को बैठा कर सती के नाम पर जला देते थे, जबकि गुरु साहिबान ने इस प्रथा का खुलकर विरोध किया और कहा कि चिता में जल मरने से किसी का सती धर्म नहीं माना जाता जबकि सती वह है जो स्त्री शील और संतोष से अपना जीवन जीये :

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥
नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥
भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंन्हि ॥
सेवनि साई आपणा नित उठि संम्हालंन्हि ॥
(पन्ना ७८७)

दहेज की बीमारी ने समाज को आज इस तरीके से जकड़ा हुआ है कि छोड़ने का नाम ही नहीं लेती। इस दहेज की बीमारी का शिकार औरत चिरकाल से ही होती आ रही है। गुरु साहिबान ने दहेज की प्रथा के बारे में उपदेश दिया और कहा कि वो लड़कियों को दिखावे का सामान दहेज देने के हक में नहीं हैं बल्कि उनके अनुसार भक्ति का दहेज ऐसा दहेज है जो लड़कियों के काम आता है :

हरि प्रभु मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ॥
हरि कपड़ो हरि सोभा देवहु जितु सवरै मेरा काजो ॥ (पन्ना ७८)

सेवा के मामले में देखा जाए तो सिख स्त्रियां सेवा-भाव में कम नहीं थीं। दूसरे गुरु पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी के महल (सुपत्नी) माता खीवी जी ने तो लंगर की सेवा में विशेष नाम कमाया। उन्होंने लंगर में इस प्रकार का प्रबंध किया था कि उस समय खीर

देसी घी में बनाकर बांटी जाती थी और उस समय लंगर में आये जिज्ञासुओं तथा सेवकों को उनकी जरूरत के अनुसार धन एवं वस्त्र भी दिये जाते थे। इसलिए रामकली की वार जिसकी हजूरी रागी भाई सत्ता जी एवं भाई बलवंड जी ने रचना की, में लिखा है:

बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥
लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रितु खीरि घिआली ॥
(पन्ना ९६७)

सिख समाज में स्त्रियों का दर्जा मर्दों के बराबर है। माता साहिब कौर को "खालसे की माता" कहना भी औरतों को बराबरी का स्थान देना ही है। अमृत छकाते समय जब माता जीतो जी ने अमृत में बताशे डाले ताकि सिंघों में वीरता के साथ-साथ मिठास (नम्रता) भी बनी रहे।

लड़ाई के मैदान में देखा जाए तो सिख स्त्रियों का योगदान बहुत ऊंचा है। विलियम फरैंक्लिन ने लिखा है कि कितने उदाहरण हैं कि जब सिख बीबियों ने हथियार उठा शत्रुओं को पछाड़ा है। अरदास के समय यह वाक्य "जिनां सिंघां सिघनियां ने धर्म हेत सीस दित्ते" इस बात का परिचायक है कि औरत के जुर्रत भरे करतबों का नित्य बखान है।

लैपट ग्रिफन ने यह लिखा है सिख औरतें सूझ और प्रबंध के मामले में मर्दों से किसी बात में कम नहीं थीं। अट्ठारहवीं सदी में बाबा बंदा सिंघ बहादर की शहीदी के बाद सिखों पर दमनचक्र बहुत बढ़ चुका था। उस समय भाई तारू सिंघ जी (जिनको केश उतरवाने के विरोध में उनकी खोपड़ी उतार कर शहीद किया गया था) के माता जी और बहन जी अपने घर आने वाले सिंघों को भोजन छकाती थीं। भाई साहिब की माता जी और बहन जी अनाज पीसकर स्वयं आटा तैयार करती थीं। यह बात वर्णनयोग्य है कि उस समय आटा ज्यादातर हाथ से चक्की चलाकर बनाया जाता था जो कि एक कड़ी मेहनत का काम था। उस समय जब भाई तारू सिंघ जी की शिकायत जकरिया खान के पास मुखबिर निरंजनिए ने की थी तब उन्होंने कहा था : "है तारू सिंघ की ईक, भैण और माई।"

धन्य हैं ये सिंघनियां जो अपने हाथों से चक्की चलाकर, आटा पीसकर अपने परिवार के सदस्यों को ही नहीं बल्कि गुरु के सिंघों को भी लंगर छकाकर संतुष्टि महसूस करती थीं। ऐसी सेवा कड़ी मेहनत करके उस युग की माताओं-बहनों के सिदक की दाद देनी बनती है।

एक उदाहरण नहीं बल्कि ऐसे अनगिणत उदाहरण मौजूद हैं जब सिख बीबियों ने मोर्चे संभाले हैं। शहजादा बेदार बख्त को बीबी राजिंदर कौर (पटियाला) ने ही भगाया था। स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया द्वारा किए गए युद्धों में मां का बहुत बड़ा हाथ था। माता भागो जी ने भी मैदाने-जंग में मुगल सेनाओं से टक्कर ली थी।

आज हमारा समाज किस ओर जा रहा है? जिस स्त्री से संसार चलता है हम उसे संसार में आने से पहले ही मार डालते हैं। सोचते भी नहीं हैं कि अगर हम यही तरीके अपनाते रहे और लड़कियों को मारते रहे तो क्या एक दिन बहू मिलनी मुश्किल नहीं हो जायेगी? जो वंश हम लड़के से चलाना चाहते हैं क्या वो बगैर बहू के आगे बढ़ेगा? जी नहीं। सोचने की जरूरत है, स्त्री का सम्मान, आत्मविश्वास बढ़ाने की जरूरत है, क्योंकि उसी से हमारा समाज है और गुरु साहिबान का दिखाया गुरमति मार्ग भी हमें यही शुभ संदेश देता है।

सो किउ मंदा आखीऐ . . .

*-बीबी अमरजीत कौर**

श्री गुरु नानक देव जी ने अपने इस पावन पवित्र शबद में संसार को जागृत करते हुए समझाया है कि उस स्त्री को क्यों नकारा जाए, क्यों फिटकारा जाए जो इस संसार में राजाओं, महाराजाओं, शूरवीरों, योद्धाओं, पीरों-फकीरों को जन्म देती है?

श्री गुरु नानक देव जी के इस संसार में आगमन से पहले समाज बहुत-सी बुराइयों में फंसा हुआ था। सारा संसार ऊंच-नीच, छुआ-छूत, गरीब-अमीर आदि के भेद-भाव में बंटा हुआ था। सामाजिक ताना-बाना बुरी तरह से बिखरा पड़ा था। स्त्री जाति को इस समाज में योग्य स्थान नहीं मिला था। उसे दुरकारा, फिटकारा और पांव की जूती तक समझा जाता था। समाज ने स्त्री को पर्दे में रखकर घर की चारदीवारी में कैद कर रखा था।

श्री गुरु नानक देव जी ने समाज को सही दिशा देने के लिए, समाज में फैले कर्मकांडों, छुआ-छूत, जात-पात के भेदभावों को दूर करने के साथ-साथ स्त्री को उसका योग्य स्थान देने के लिए फरमाया है कि सभी जीव एक परमात्मा के पैदा किए हुए हैं, कोई छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब नहीं है, सभी में परमात्मा ने अपनी ज्योति का प्रकाश किया हुआ है। श्री गुरु अरजन देव जी ने भी अपनी बाणी में मां को गुरु तुल्य सम्मान दिया है। उनका फरमान है:

गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥ *(पन्ना २६२)*

गुरु साहिब फरमान करते हैं कि एक मां ही है जो समाज को सही दिशा दे सकती है, एक स्त्री ही है जो समाज के सही ताने-बाने का सृजन कर सकती है, लेकिन आज हम इसे इसका बनता सम्मान नहीं दे रहे। आज हम इसे जन्म देने से पहले ही खत्म कर रहे हैं।

कुदरत की समूची रचना नर और मादा के सहयोग से ही आगे बढ़ती है। नर और मादा के कुदरती मेल से ही बच्चे की पैदाइश होती है। लेकिन आज हम विज्ञान की बढ़ रही तकनीकों के गलत इस्तेमाल से इस संसार को आगे बढ़ने से रोक रहे हैं।

पुत्र-मोह की लालसा ने हमारे देश में औरत को पीछे छोड़ दिया है। विज्ञान की आधुनिक तकनीकों से हम गर्भ में पल रहे बच्चे की जांच कर उसके नर या मादा होने का पता लगा लेते हैं। मादा होने पर उसे इस संसार में जन्म लेने से पहले ही खत्म कर देते हैं और मादा भ्रूण-हत्या के भागीदार बन रहे हैं। आज हम गुरु साहिबान द्वारा दर्शाए मार्ग से कोसों दूर जा रहे हैं। उनके द्वारा दिए औरत के सत्कार को खत्म कर पाप के भागीदार बन रहे हैं।

गुरु साहिबान ने समाज में स्त्री पर हो रहे अत्याचार, मानसिक दबाव और दमन को नकारा और उसको अलग-अलग क्षेत्रों में विचार-प्रगटावे तथा भागीदारी के मौके दिए, ताकि वह भी पुरुष के समान सम्मान भरी ज़िंदगी व्यतीत कर सके।

गुरु-काल से पहले नारी की दशा अत्यंत बुरी थी। औरत का दर्जा आदमी से कम समझा जाता था। इस मर्द-प्रधान समाज में औरत को उसके बुनियादी अधिकारों से वंचित रखा जाता था। उसे पर्दे में रखना, पति के मरने पर

**प्रिंसीपल, न्यू अमृतसर मॉडल स्कूल, गोबिंद नगर, भुल्लर रोड, बटाला (गुरदासपुर)-१४३५०५*

चिता में सती होना, लड़की के जन्म लेते ही उसे मार डालना आदि अति शर्मनाक सामाजिक बुराइयों में फंसा दिया गया था। गुरु साहिबान ने स्त्री की इस दशा को देखकर केवल इसकी निंदा ही नहीं की, बल्कि इस लाहनत को दूर करने की ताकीद भी की। गुरु साहिबान ने इस संसार को समझाया कि औरत से ही इस संसार का पासार हुआ है, औरत के बिना मनुष्य अधूरा है। राजे-महाराजे सभी इसकी कोख से जन्म लेते हैं, फिर इसे हम बुरी कैसे कह सकते हैं? फरमान है :

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
(पन्ना ४७३)

श्री गुरु नानक देव जी के समय से औरत ने समाज में बराबर का योगदान देते हुए अलग-अलग रूपों और सम्बंधों के द्वारा एक आदर्श भूमिका अदा की। बेबे नानकी जी, माता सुलक्खणी जी, माता खीवी जी, बीबी अमरो जी, बीबी भानी जी, माता गुजरी जी, माता सुंदरी जी, माता साहिब कौर जी, माता भागो जी तथा कई अन्य स्त्रियां सिख कौम के लिए प्रेरणास्रोत बनीं।

गुरबाणी में कई स्थानों पर प्रमाणित किया गया है कि सिख मत स्त्री को केवल बराबरी का दर्जा ही नहीं देता बल्कि वह उसको धार्मिक रास्ते पर भी मनुष्य के लिए पथ-प्रदर्शक मानता है और उसको धार्मिक तथा परमार्थिक रास्ते पर चलने के बराबर अधिकार हैं। गुरु साहिबान ने औरत को प्रभु-प्राप्ति में एक रुकावट नहीं माना बल्कि सहायक स्वीकारा है। श्री गुरु रामदास जी भी कथन करते हैं कि माता, पिता और पुत्र, बेटी सब करतार की रचना हैं और इन सब जीवों का सम्बंध परमात्मा आप बनाता है। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी भी स्त्री को 'औरत ईमान' कह कर सम्मान देते हैं। इसी तरह भक्त धन्ना जी ने भी *'घर की गीहनि चंगी'* की मांग की है। कलगीधर पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज ने भी पुत्री का दर्जा पुत्र के बराबर रखा है और जो लड़की को मारने वाले दुराचारी हैं उनके साथ मेल-मिलाप और कार-व्यवहार करने का निषेध किया है। भाई गुरदास जी भी अपनी रचना में स्त्री के बारे में फरमाते हैं :

देखि पराईआं चंगीआं मावां भैणा धीआं जाणै।
(वार २९:११)

लेकिन अफसोस! स्त्री को मंदा कहने की रुचि आज के जमाने में भी चल रही है। आज भी लड़की को जन्म से ही अच्छा नहीं समझा जाता। आज भी हमारे संसार में लड़कियों के हत्यारों की कमी नहीं है जो जन्म लेने से पहले ही मां के गर्भ में लड़की का कत्ल कर देते हैं। इस प्रकार कुछ लड़कियों को संसार देखना भी नसीब नहीं होता। लड़की के जन्म लेने पर कोई खुशी नहीं की जाती, उसका पालन-पोषण भी लड़के की तरह चाव से नहीं किया जाता। बहुत से परिवारों में आज भी खासकर गांवों के परिवारों में लड़की को ज्यादा पढ़ाना अच्छा नहीं समझा जाता। कहने का भाव है कि स्त्री का मान-सम्मान आज भी पूरी तरह से नहीं किया जाता। ऐसी स्थिति में गुरु नानक साहिब की ओर से अपने युग में स्त्री के पक्ष में मारा गया 'हाअ' का नारा आज भी उसी तरह प्रासंगिक है जिस तरह पांच सदियां पहले था। सारी मानवता और विशेषकर भारत के लोग श्री गुरु नानक देव जी के ऋणी हैं। गुरु जी के नानक नाम लेवा सिख कहलवाने वालों को आज के दिवस पर आत्म-विश्लेषण करना चाहिए कि हमारा अपना व्यवहार गुरु-आशय के अनुसार है या नहीं?

कविताएं

बेटी जल रही है

-काशीपुरी कुंदन*

वह निरीह है लाचार है
दहेज के बाजार में दामाद का खरीददार है।
ऊंची-ऊंची बोलियों के वार से
नारकीय यंत्रणा भोग रहा है।
क्योंकि उसकी बेटी की किस्मत में
कोई वर नहीं, वियोग रहा है।
उसके लिए समूचा जीवन महज इसलिए अभिशाप है
कि वह एक जवान बेटी का बाप है।
वैसे तो समाज के भूखे जवान भेड़िये
हमेशा उसकी जवान बेटी का हाथ मांगते हैं।
मगर दहेज का सवाल खड़ा होते ही दूम दबाकर भागते हैं।
उसका सिर्फ एक ही सपना है
कि किसी तरह बेटी के हाथ पीले हो जाएं।
भले ही भविष्य के सारे अरमान आंसुओं से भीग जाएं।
मगर उसके दरवाजे पर जो भी युवक आता है।
घर की चिर सुहागिन गरीबी को देखकर
उसकी बेटी को कुंवारी ही छोड़ जाता है।
हालात ने उसे ऐसे झंझावातों में पाला है
कि अन्तत: उसने बेटी का हाथ
अपने हमउम्र विधुर को दे डाला है।
लेकिन दूल्हे के रूप में वह भी आस्तीन का सांप निकलता है।
ऐन फेरे के वक्त दहेज के लिए बच्चों-सा मचलता है।
बेटी का बाप अपना स्वाभिमान बेचकर
शादी की विपदा टाल रहा है।
उस दहेज के लोभी, शैतान के चरणों में
अपनी पगड़ी तक डाल रहा है।
अपना अस्तित्व गिरवी रखकर भी
वह मांग पूरी करने का आश्वासन दे रहा है।
इधर अपना सब कुछ बेचकर वचन पूरा करने की चिंता उसे खाए जाती है।
उधर खाना बनाते वक्त स्टोव से
बेटी के जलने की दारुण खबर आती है।
पता नहीं कितनी सदियों से
यह अग्नि-कथा चल रही है!
इधर बाप सुलग रहा है, उधर बेटी जल रही है।

*मातृछाया, मेला मैदान राजिम, रायपुर (म. प्र.)-४९३८८५

कैसे जलें ?

लौ भले ही तिलमिलाए पर बुझने न पाए।
रोशनी लुटाने की सद्भावना मिटने न पाए।
चाहे महल में जलें
चाहे कुटिया में जलें
चाहे कतारों में जलें
चाहे वीरानों में जलें
मगर रास्तों में रोशनी फैलाना न छोड़ें।
धर्म-स्थल में जलें या काल-कोठरी में
पर हम पूजा के आडम्बर में प्रभावित न हों।
चाहे घर में जलें या कब्रिस्तान में जलें
पर मानवता-विरोधी हवाओं के बहकावे में आकर
जलने की प्रक्रिया को बदनाम न करें।
आओ! हम सब जलें,
मगर एक दूसरे से नहीं,
एक दूसरे की ज्योति से जलें।
आओ! हम सब जलें।

सधन्यवाद : 'पंजाब सौरभ', फरवरी १९९९

मादा-भ्रूण-हत्या : एक कलंक

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

वर्तमान वैज्ञानिक शैक्षिक युग में मनुष्य ने जीवन के हर क्षेत्र में विकास किया है। आदि काल से मर्द-प्रधान समाज में औरत को निम्न दृष्टि से ही देखा जाता रहा है। लड़की पैदा होने से इसको समाज पर बोझ समझ कर, इसको जन्म के समय ही मार देने की प्रवृत्ति रही है। इस कार्य के लिए समय-समय पर विभिन्न ढंग अपनाए जाते रहे हैं। अब वैज्ञानिक सोच और शिक्षा से लोग और भी बुद्धिमान हो गए हैं। अब लड़की का अल्ट्रासाउंड स्कैन द्वारा मां के गर्भ में पता लगा कर, उसको जन्म से पहले ही मार देने का रुझान पैदा हो गया है, जिसके फलस्वरूप औरत-पुरुष के अनुपात में बहुत अंतर आ गया है। अगर गर्भ में ही लड़की को मार देने की यह चाल इसी प्रकार रही तो भारत के पुरुष प्रधान समाज में, औरतों का अकाल पड़ जाएगा। समाज में ज्यादातर पुरुष ही दिखाई देंगे, औरतें कम हो जाएंगी। बहुत से पुरुष बिना विवाह के ही रह जाएंगे। औरत-पुरुष के पवित्र गृहस्थ-सम्बंधों की शुद्धता का रह सकना बहुत ही कठिन बात हो जाएगी। प्रकृति द्वारा बनाया गया पूरा समतोल बिगड़ जाएगा। अगर औरत ही नहीं, तो कुछ भी नहीं होगा। औरत के बिना मर्द भी कहां से आएंगे? इसका पूरा प्रभाव विश्व और पूरे ब्रह्मांड पर पड़ेगा। भविष्य में इस मंदी सोच के भयंकर नतीजे निकलेंगे। वैसे भारतीय समाज की कन्या-मार सोच बहुत पुरानी है। तब अनपढ़ता और गलत सामाजिक रीति-रिवाज इसके प्रमुख कारण थे। बदलते समय में अब जबकि औरत पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिला कर चल रही है तो इस मंदी सोच को बदलना वर्तमान समय की ज़रूरत बन गया है।

इस घृणात्मक सोच के विरुद्ध विश्व के महान क्रांतिकारी, महान समाज-सुधारक श्री गुरु नानक देव जी ने ऊंची आवाज से नारा लगाया। उन्होंने निर्मल उपदेश किया कि सभी लोग औरत का सत्कार करें। औरत सभी की जन्म-दाती है, मां है। औरत से ही तो सभी राजा-महाराजा, साधू-संत आदि पैदा होते हैं :

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
(पन्ना ४७३)

गुरमति मार्ग अर्थात् सिख धर्म में औरत को पुरुष के बराबर सम्मान प्राप्त है। श्री गुरु अमरदास जी ने गुरमति प्रचार के लिए २२ मंजियों (प्रचार-केन्द्रों) की जो स्थापना की, उसमें दो मंजियां स्त्री प्रचारकों के लिए थीं। गुरु साहिब ने औरतों में से पर्दे का रिवाज खत्म करने का उपदेश दिया, विधवा विवाह को उत्साहित किया, सती होने की अर्थहीन मंदी रसम को खत्म करने का आदेश दिया। सिख रहत मर्यादा में भी औरत-पुरुष को बराबर दर्जा प्राप्त है। सरकार ने मादा-भ्रूण-हत्या रोकने के लिए कानून तो बना दिया, जो कि अच्छी बात है परंतु फिर भी चिंता की बात यह है कि इस पर पूर्णत: अमल नहीं हो रहा। अत: औरतों की

**पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केन्द्र, गुरदासपुर-१४३५२१ (पंजाब)*

संख्या प्रतिदिन कम होती जा रही है।

गुरमति की शिक्षा ही मादा-भ्रूण-हत्या की वास्तविक रूप में रोकथाम कर सकती है। हम सभी को बिना किसी भेदभाव, ऊंच-नीच, जाति-बरादरी के गुरमति की शिक्षा ग्रहण करनी होगी। इस पक्ष में सामूहिक रूप से प्रयत्न किए जाने चाहिए। गांव-गांव, शहर-शहर के हर गली-मोहल्ले में गुरमति सभाएं स्थापित की जानी चाहिए। इन सभाओं में मादा-भ्रूण-हत्या की जोरदार निंदा की जानी चाहिए। इस प्रकार वातावरण की सृजना हो, जिसमें लड़के वाले एक जलूस की शक्ल में नहीं बल्कि कम से कम संख्या में बारात के रूप में (सुशील मनुष्यों की तरह) लड़की वालों के घर पर जाएं। "दहेज न लेना और न देना" के आदर्श पर अमल किया व कराया जाए।

मनुष्य जीवन का कौन-सा क्षेत्र है जहां औरत को मौका प्राप्त हुआ हो और उसने पुरुष के मुकाबले कमजोरी दिखाई हो? बीबी भानी जी का नाम गुरु-सुपत्नी और गुरु-माता के रूप में सत्कारा जाता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दादी जी, श्री गुरु तेग बहादर जी के माता जी और छठम सतिगुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के महिल माता नानकी जी की महानता किसी से भी छिपी हुई नहीं है। श्री गुरु तेग बहादर जी के महिल और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के माता, माता गुजरी जी के विशाल हृदय, प्यार और बलिदान की उदाहरण विश्व भर में कहीं नहीं मिलती। पहली औरत सिख शहीद माता गुजरी जी ही हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बाद, सिख पंथ की बागडोर माता सुंदरी जी ने संभाली थी। माता साहिब कौर जी को समूह खालसा पंथ की माता होने का गौरव प्राप्त है। इससे बढ़कर औरत का सत्कार और क्या हो सकता है? माई भागो जी सिख इतिहास की प्रसिद्ध बहादुर सिंघनी हैं। आधुनिक युग में मदर टरेसा और श्रीमती सरोजनी नायडू के नाम भारत के उच्चतम दर्जे की महान औरतों की सूची में शामिल हैं।

आज साइकिल से लेकर हवाई जहाज तक और धरती पर सरकारी अथवा गैर-सरकारी कौन-सा क्षेत्र है जहां औरतों ने सफलता प्राप्त नहीं की? तो फिर औरत निदंनीय कैसे हुई?

औरत कोई निदंनीय वस्तु नहीं है। कन्या-मार समस्या आधुनिक वैज्ञानिक युग की एक गंभीर समस्या बन गई है। अगर इस पर रोक न लगाई गई तो भविष्य में पूरी दुनिया का समतोल बहुत बिगड़ जाएगा। लड़का और लड़की बराबर सम्मान के अधिकारी हैं। मादा-भ्रूण-हत्या भारतीय समाज पर बहुत बड़ा कलंक है। इस पर पूर्ण रूप में रोक लगनी चाहिए। गुरु साहिब की शिक्षा और गुरबाणी का प्रचार इस पक्ष में सार्थक भूमिका निभा सकता है। अकेला कोई भी व्यक्ति इस कार्य में सफल नहीं हो सकता। इस महान कार्य में सरकारों, समाज-सुधारक सभाओं, धार्मिक जत्थेबंदियों, प्रचारकों और पढ़े-लिखे भाई-बहनों को एक साथ मिल कर प्रयत्न करने की जरूरत है। श्री अकाल तख्त साहिब, श्री अमृतसर की तरफ से इस संदर्भ में पहले से ही हुक्मनामा जारी हो चुका है।

नि:संदेह गुरमति शिक्षा ही मादा-भ्रूण-हत्या की रोकथाम में वास्तविक भूमिका निभा सकती है। सिख इतिहास और महान गुरु साहिबान के पवित्र जीवन और शिक्षा से इस पक्ष में और भी रोशनी प्राप्त की जा सकती है।

बहू-बेटी में अंतर क्यों?

-श्री सुरिंदर कुमार अग्रवाल*

अक्सर परिवारों में बहू-बेटी में अंतर होता है। लोग बहू-बेटी में भेद नहीं भुला पाते। माता-पिता जो प्रेम अपनी बेटी से करते हैं वही प्रेम दूसरे घर से आई बहू को क्यों नहीं देते? सोचने की बात है कि तुम भेद कर रहे हो दूसरे के घर से आई बेटी के साथ, तुम्हारी लाडली बेटी दूसरे घर जाएगी, दूसरे लोग जब भेद करेंगे, तो क्या तुम सहन कर लोगे? अगर नहीं तो फिर भेद करना छोड़ो, सभी के साथ अच्छा व्यवहार करना सीखो।

जब तुम (सास) इस घर में बहू बनकर आई थी, तुम्हारे साथ भेदभाव होता था, मारपीट/अत्याचार होता था, तब तुम सोचती थी, मैं सास बनूंगी तो यह सब भेद और प्रताड़ना के क्षण समाप्त कर दूंगी। "जब विचार अच्छे थे, अच्छी कल्पना थी, फिर सास बनते ही क्या हो गया कि बहू-बेटी में भेद करने लगी, बहू को ताना मारने लगी, प्रताड़ना देने लगी? जो व्यवहार तुम्हें अपने लिये पसंद नहीं है भला वह दूसरों के साथ करना ठीक है?

अगर हम बेवजह दूसरों को सतायेंगे, परेशान करेंगे तो निश्चित ही उसका प्रतिफल हमें भोगना पड़ेगा। अत: आज से ही हम शुभ कार्य करें, सबको अपना आत्मीय समझकर अच्छा आचरण-व्यवहार करें। हम बेटी के प्रति जो उदार-भाव रखते हैं, वही उदार-भाव दूसरे के घर से आई बेटी के साथ रखें। सास-ससुर बनते ही उदारता, आत्मीयता, स्नेह की भावना समाप्त न करें। तुम अपनी बेटी के लिये जो सुख-सुविधायें और आजादी जुटाना चाहते हो वही कल्पना दूसरों ने भी तो की होगी जिनकी बेटी तुम्हारे यहां बहू बनकर आई है! अत: ऐसा भेदभाव और कठोरता ठीक नहीं है।

माता-पिता की इच्छा होती है कि घर के हर छोटे-बड़े कार्य, खुशी उत्सव में बेटी शामिल होती रहे। यही इच्छा दूसरे माता-पिता ने भी तो की होगी! फिर क्यों बहू को मायके जाने पर रोक लगाते हो? आखिर आपकी बहू भी तो किसी की बेटी है, उसकी भी तो अपनी इच्छा है। अत: उस पर अंकुश लगाना ठीक नहीं है। सोचें कि यदि यही व्यवहार कोई तुम्हारी बेटी के साथ कर रहा हो तो क्या तुम उसे सहन कर लोगे?

जब बेटी और बहू दोनों मां बनने वाली होती हैं तो लोग बेटी को प्राथमिकता देते हैं और बहू के मामले में लापरवाही करते हैं। बेटी को जितना आराम करने देते हैं उतना बहू को नहीं और लड़का हुआ तो ठीक, अगर बेटी हो गई तो घर में मातम छा जाता है। आखिर क्यों? कई जगह तो बहू को लावारिस समझ छोड़ दिया जाता है। बहू को सताओगे तो संस्कारवान, सुयोग्य संतति कहां से पाओगे? सोचने की बात है, एक शिल्पकार को रोज सताओ, मारो, पीटो, डांटो, भूखा रखो फिर उससे आशा रखो कि वह तुम्हारे लिये एक सुंदर कलाकृति का निर्माण कर देगा, यह संभव नहीं है। उस निर्माण में अपने साथ लिये व्यवहार, अभाव, प्रताड़ना का दुख,

*अग्रवाल न्यूज ऐजेन्सी, हटा, दमोह (मध्य प्रदेश)-४७०७७५

कुंठा छिपी रहेगी। यही कुछ भावी संतति में होता है। यही वजह है कि संतान सुयोग्य व संस्कारवान नहीं होती। वह प्राय: जिद्दी, हठी और बौद्धिक रूप से कमजोर होती है।

जहां नारियों का सम्मान होता है वहां सभी बरकतें निवास करती हैं, लेकिन जहां नारियों का तिरस्कार होता है, उन्हें दुख दिया जाता है, वहां पूर्व प्राप्त सुख भी हवा होने आरंभ हो जाते हैं। जहां कलह, कलेश और झगड़े रहते हैं वहां श्रेष्ठ गुणवान संतति की कल्पना करना संभव नहीं है। अत: घर में स्वर्ग जैसे वातावरण का निर्माण चाहते हो तो पहले अपने आचरण-व्यवहार को सुधारो, अपना लालच, लोभ, तृष्णा और दुर्व्यवहार की आदत सुधारो, गुस्सा छोड़ो, दहेज का लालच मत करो, बहू के खाने-पीने पर रोक मत लगाओ, बहू के साथ दुर्व्यवहार मत करो। रही बात पुत्र-पुत्री होना, यह न बहू के हाथ में है न स्वयं तुम्हारे हाथ में, यह तो भगवान की इच्छा साकार होनी होती है। लड़की होने पर जो बहू के साथ दुर्व्यवहार करते हैं वे सुखों, खुशियों की इच्छा कैसे कर सकते हैं?

जो भी पुत्र/पुत्री हुई है उसे ईश्वर की दात मानकर आनंद-प्रसन्न रहना चाहिए, उसकी उपेक्षा करना कदापि ठीक नहीं है। इस देश में कई लोग ऐसे हैं जो मूर्तियों के रूपों में तो देवियों की तथाकथित पूजा करते हैं लेकिन घर में आई कन्या का मातम मनाते हैं। हमने तो यहां तक देखा है 'लड़का लड़की एक समान' का नारा लगाने वाले भी अपनी बहू के घर लड़की हो तो उसकी अच्छी परवरिश नहीं करते बल्कि उसे ताने मारते रहते हैं। ऐसे लोग मंच से तो कुछ और कहते हैं लेकिन व्यवहार में कुछ और करते हैं। ऐसे लोगों ने ही धर्म एवं समाज को बहुत नुकसान पहुंचाया है।

जो घरों में बहू-बेटी में अंतर करते हैं, वे कैसे समाज को सुधार पायेंगे, जब वे स्वयं सुधर नहीं पाए? दुखी और सताई हुई मां के आंसू की वेदना (टीस) भावी संतान में रोग, शोक और बुद्धिगत कमियों के रूप में स्पष्ट देखी जा सकती है।

कभी-कभी लोग बहू को यूं ही शक की नजर से देखते हैं। ऐसा करना बहुत बार अत्यंत नुकसानदेय परिणाम दिखलाता है। भावी जीवन सुखी, समृद्ध, शानदार, नैतिक और मर्यादित रहे इसके लिए पूर्ण ध्यान रखना आवश्यक है। इसी में समझदारी है। वरन् जीवन नरक बन जाता है।

जो भेदभाव हमें स्वयं पसंद नहीं है वह भेदभाव दूसरों के साथ करना किसी तरह भी ठीक नहीं है। बहू की छोटी भूल के लिये हाय-तौबा करना, उसे सताना, प्रताड़ित करना ठीक नहीं है। जो इस तरह का दो-मुंहा व्यवहार करते हैं वे जीवन भर स्वयं दुखी रहते हैं और दूसरों को भी दुख देते हैं। उनका समाज में कोई मान-सम्मान व प्रतिष्ठा नहीं रहती है, चाहे वे कैसे भी रंग के कपड़े पहन लें, चाहे जैसा रूप रख लें, चाहे कितने भी बड़े पद पर रहें, चाहे उनके घर में कितनी भी सम्पन्नता क्यों न हो, लोग उठते-बैठते उनकी चर्चा करेंगे, उन्हें तुच्छ बताकर कहेंगे, अरे! उनकी बात छोड़ो! अत: सिद्धांतवादी बनें। जो कहो उसे जीवन में करके दिखाओ। बड़ी-बड़ी बातें न करो। जितना कर सको उतना ही कहो। यह उन लोगों की बात है जो कहते ज्यादा हैं परंतु करते कम हैं। कोरे शंख बजाने से कुछ नहीं होगा, जब तक जीवन में सच्चा त्याग और आचरण-व्यवहार की एकरूपता नहीं होगी। एकरूपता की पहली शर्त यही है कि घर में बहू-बेटी में अंतर करना छोड़ो। बहू को बेटी के

समान लाड-प्यार देकर उसे सच्चे अर्थों में सम्मान दो। लक्ष्मी की पूजा-उपासना करने से कुछ नहीं होगा। कई प्रकार के रत्न, मणि, माणिक्य आदि पहनने पर भी कुछ नहीं होगा जब तक व्यक्तिगत आचरण-व्यवहार न सुधरे, जब तक कथनी और करनी में समानता न आये।

भूल करना मानव की सहज प्रवृत्ति है। अगर अब तक हम से भूल हो गई है तो उसे सुधार लेना समझदारी है। हम अपनी भूल सुधारें, कथनी-करनी में समानता लायें! अच्छे कार्य दूसरों के घर से नहीं बल्कि अपने घर से आरंभ कीजिए। यदि हम अपना बुरा व्यवहार सुधारें तो घर स्वर्ग बन सकता हैं। सुधारो अपनी भूल! घर को स्वर्ग बनाओ! सुधारो अपने आचरण-व्यवहार को! आत्म-सुधार ही संसार की सबसे बड़ी सेवा है। बहू-बेटी का अंतर मिटाने से घर की अधिकांश कलह तो तत्काल ही समाप्त हो सकती है। पीछे जो हुआ सो हुआ। आओ! आज से ऐसा सोचना आरंभ करें कि बहू भी किसी परिवार की बेटी है। उसे अपनी बेटी मानकर व्यवहार करना सीखें। यदि हम ऐसा करने लगें तो हमारे घरों में स्वर्ग जैसा सुख आ सकता है।

लासानी व्यक्तित्व : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

(पृष्ठ १५ का शेष)

धर्म की रक्षा हेतु खालसा पंथ की स्थापना की गयी, जिसमें वे सिख थे जिनमें समाज एवं धर्म की रक्षा हेतु स्वयं को बलिदान करने का ऊंचा जज़्बा विद्यमान था। गुरु जी का कहना है: *"सवा लाख से एक लड़ाऊं। चिड़ियों से मैं बाज तुड़ाऊं। तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊं।"*

गुरु जी ने सेनानायक के रूप में पहाड़ी राजाओं एवं मुगलों से जीवन भर संघर्ष किया। युद्ध के मैदान में उनकी उपस्थिति-मात्र से सैनिकों में उत्साह एवं स्फूर्ति पैदा हो जाती थी। यह सवैया शूरवीरों का मंत्र बन गया :

देह सिवा बरु मोहि इहै सुभ करमन ते कबहूं न टरों ॥
न डरो अरि सो जब जाइ लरो, निसचै करि अपुनी जीत करों ॥२३३॥ (चंडी चरित्र पा: १०)

श्री गोबिंद सिंघ जी ने ज्योति जोति समाने से पूर्व श्री आदि ग्रंथ साहिब को गुरु-पद प्रदान किया। भारत के इतिहास में यह एक अनोखी एवं अद्‌भुत मिसाल है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का एक और उदाहरण उनके व्यक्तित्व को अनोखा साबित करता है। गुरु जी पांच प्यारे बनाकर उन्हें गुरु का दर्जा देते हुए स्वयं उनके शिष्य बन जाते हैं और कहते हैं :

खालसा मेरो रूप है खास।
खालसे में हौं करों निवास।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी आध्यात्मिक गुरु के साथ-साथ एक महान विद्वान भी थे। पाउंटा साहिब में उनके दरबार में ५२ कवि भी थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी संत और सिपाही दोनों रूपों मे दिखाई देते हैं। इन्हीं भावनाओं का पोषण उन्होंने अपने सिखों में भी किया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने राष्ट्र की उदासीनता, निर्बलता, तुच्छता और पतन के भाव को दूर करके निर्बल हो चुके भारतीयों में नया साहस एवं बल संचारित किया। गुरु जी ने आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता का संदेश दिया और मात्र ४१ वर्ष की आयु में प्रभु द्वारा सौंपे गये महान कार्य को सम्पन्न कर आप सन् १७०८ में ज्योति जोति समा गये।

कविताएं

सरदार भगत सिंघ शहीद

भगत सिंघ सरदार को है जानता संसार।
जीवन देकर कर दिया भारत का उपकार।
परिवार ने जिसका नाम था रखा 'भागां वाला'।
वही बना क्रान्तिकारी, देशभक्त और रखवाला।
ऐसे दिए दादा अरजन सिंघ ने बचपन में संस्कार।
भगत सिंघ सरदार को है जानता संसार।
डी. ए. वी. स्कूल में पढ़े, स्थित है जो लाहौर।
लेकिन लगन लगी उनकी देशभक्ति की ओर।
भगत सिंघ के रूप में मानो, वीरता का अवतार।
भगत सिंघ सरदार को है जानता संसार।
बहरे कानों तक बम-धमाकों ने, जन-क्रंदन पहुंचाया।
आजादी भीख नहीं, अधिकार, अंग्रेजों को बतलाया।
इंकलाब ही लक्ष्य था, उनका संघर्ष पारावार।
भगत सिंघ सरदार को है जानता संसार।
सिंघ था हुंकार से, चिंतन से था भक्त।
उसे भगत सिंघ के नाम से जानता है जगत।
पिता, दादा और चाचा देश-भक्त परिवार।
भगत सिंघ सरदार को है जानता संसार।
मां विद्यावती ने उसे दिया था आशीर्वाद।
जब तक सूर्य-चांद रहेगा, लोग करेंगे याद।
भारत मां के जो थे, सदा सजग पहरेदार।
भगत सिंघ सरदार को है जानता संसार।
हैं खटखड़ कलां पंजाब का गांव अलबेला।
२३ मार्च को लगता हर वर्ष शहीदी मेला।
आजादी ही थी जिनके जीवन का आधार।
भगत सिंघ सरदार को है जानता संसार।
समय पूर्व ही कायर ने तुझे फांसी दे दी।
जेल बनी थी, शहीदों की बलिवेदी।
नहीं भूलेंगे वीर शहीदों! आपका यह उपकार।
भगत सिंघ सरदार को है जानता संसार।
गहरा चिंतन किया जिन्होंने, फिर था बांटा ज्ञान।
जनसाधारण की आजादी, जिनका था अरमान।
अमर शहादत पाकर बना, शहीदों का सरदार।
भगत सिंघ सरदार को है जानता संसार।

नारी नारी की अगर दुश्मन न होती

नारी नारी की अगर दुश्मन न होती,
सास-बहू की भी कभी अनबन न होती।
नारी-जगत में न होती इतनी अवाजारी,
न होती संसार में बदनाम इतनी नारी।
नारी नारी की शुभचिन्तक होती अगर,
दहेज की कब्र में भी दफन न होती।
कभी माया है कभी छाया है नारी,
किसी के लिए कटारी, दोधारी।
सभी नारियां होतीं प्यार की मूरत,
अगर इनमें आपसी जलन न होती।
पुरुष तो फिर भी सम्मान करता है,
विरह में ठंडी आहें भी भरता है।
नारी काश! समझ पाती दर्द नारी का तो,
नारी-जगत में इतनी उलझन न होती।
कभी सास थी बहू, क्यों भूल जाती?
उसकी बेटी बनेगी बहू, समझ न पाती।
अगर होती हमदर्दी नारी को नारी से,
कोई भी शादी अपशकुन न होती।
नारी है शक्ति नारी ही सबला है,
आज की नारी नहीं, कोई अबला है।
अगर होती सभी नारियां उदारमन,
किसी को किसी से जलन न होती।
नारी ही बेटी है, मां है, अर्द्धांगिनी है,
हर रिश्ते में नारी प्रेम से सनी है।
अगर नारी समझ पाती निज स्वरूप को,
दुखिया आज कोई दुल्हन न होती।
जब बेटी को जन्म देती है नारी,
तब नारी उसे कहती है, 'हाय बेचारी!'
यूं तो बहुत कुछ करे बर्दाश्त नारी,
फिर नारी से नारी क्यों सहन न होती?
ईर्ष्या नाम की एक भयानक बीमारी,
जिसकी शिकार है हरेक नारी।
नारी-मन को अगर समझ पाती यह,
नारी जीवन में इतनी भटकन न होती।

-डॉ. निर्मल कौशिक, १६३, आदर्श नगर, पुरानी छावनी रोड, फरीदकोट-१५१२०३

सरदार भगत सिंघ की विचारधारा एवं लक्ष्य

*-डॉ. विभा सिंह**

अमर शहीद सरदार भगत सिंघ भारत के उन सपूतों में एक थे जिन्होंने देश की आजादी और खुशहाली में अनेक सपने संजोए थे। उनका उद्देश्य था गरीबों, मजदूरों और किसानों के लिए एक स्वस्थ समाज की स्थापना करना। शायद इसलिए देश की आजादी उनका साध्य नहीं साधन था और साध्य था आर्थिक विषमताओं का अंत।

पाकिस्तान स्थित लायलपुर जिले के बंगा नामक ग्राम में २८ सितंबर १९०६ को एक देश-भक्त सिख परिवार में सरदार भगत सिंघ का जन्म हुआ था। जिस परिवार में वे पैदा हुए उसमें सब कुछ था, आस्तिकता, पारिवारिक एकजुटता, शिष्टाचार और समृद्धि। इस सबसे ऊपर राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। परिवार के अच्छे संस्कारों ने बालक भगत सिंघ को पहले क्रांतिकारी, फिर एक लेखक, संपादक, चिंतक और अंत में एक शहीद बना दिया।

साढ़े तेईस वर्ष की छोटी-सी ज़िंदगी में देश-कौम के इस शुभचिंतक ने समाज, राष्ट्र और उसमें व्याप्त गुणों-दोषों को दूर करने के उपायों पर स्पष्ट रूप से विचार किया। धर्म रहा हो या भाषा, गांधी रहे हों या सुभाष, उन्होंने उनसे सहमति और असहमति को भी अपने तर्कपूर्ण विचारों द्वारा स्पष्ट किया। उनके साहित्य को पढ़कर उनके विचारों की प्रभावशाली झलक मिलती है। छोटी-सी उम्र में उन्होंने एक लंबी यात्रा की। एक रूढ़िवादी आर्यसमाजी से वे मनुष्य-मात्र की वास्तविक स्वतंत्रता के समर्थक हो गए। उनका जीवन-उद्देश्य ऊंचा और निर्मल था। उनका कहना था: "मैं यह कहना चाहूंगा कि न तो मैं आतंकवादी था और न ही हूं।" जिन लोगों का मानना है कि सरदार भगत सिंघ खूनी क्रांति में विश्वास करते थे, उन्हें सरदार भगत सिंघ के पत्रों, लेखों और सम्पादकीय टिप्पणियों के साथ सेशन जज लियोनाई मिडिल के न्यायालय में और फिर लाहौर उच्च न्यायालय में दिए गए उनके बयान पढ़ने चाहिएं।

सरदार भगत सिंघ पर आतंकवादी होने के जो आरोप लगाए गए थे वे आरोप प्राय: उस समय के प्रतिक्रियावादियों की ओर से ही लगाए गए थे। उसी का खुलासा करते हुए सरदार भगत सिंघ ने लिखा था—"वास्तव में मैं आतंकवादी नहीं हूं, एक क्रांतिकारी हूं, जिसके कुछ निश्चित विचार, आदर्श हैं, जिसके सामने लंबा कार्यक्रम है। मुझे दोष दिया जायेगा जैसा कि लोग रामप्रसाद बिस्मल को भी देते थे कि फांसी की काल कोठरी में पड़े रहने से मेरे विचारों में परिवर्तन आ गया है। परंतु ऐसी बातें नहीं हैं, मेरे विचार अब भी वही हैं। मेरे हृदय में अब भी उतना ही और वैसा ही उत्साह है, वही लक्ष्य है जो जेल से बाहर था। मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम मात्र बम से कोई भी लाभ प्राप्त नहीं कर सकते। यह बात हिन्दुस्तान

*'विभावरी', जी-९, सूर्यपुरम, नन्दनपुरा, झांसी (उ. प्र.)-२८४००३ मो: ०९४१५०-५५६५५

"सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी" के इतिहास से आसानी से मालूम हो जाती है। केवल बम फेंकना न सिर्फ व्यर्थ है बल्कि बहुत बार हानिकारक भी है।"

सरदार भगत सिंघ का यह कथन आज देश में फैले आतंकवाद के परिपेक्ष्य में बहुत ही सार्थक है। डॉ. सम्पूर्णानंद ने भी कहा था: "बिना खून-खराबे के हमें आजादी इतनी आसानी से मिल गयी कि हम आज उसकी कीमत भूल बैठे हैं। यदि यह सत्य है तो मानना होगा कि फोकट का माल यूं ही उड़ जाता है, वही उड़ाया जा रहा है। देश की सम्पत्ति को लूटकर स्विस बैंकों में भरा जा रहा है। अब भगत सिंघ पैदा हो, इसकी कोई ज़रूरत ही महसूस नहीं की जा रही।"

कुछ लोगों ने सरदार भगत सिंघ को मात्र आजादी का दीवाना माना है जो एक भ्रामक और संकुचित मानसिकता का परिचायक है। भारत की आजादी उनके लिए साध्य नहीं, साधन मात्र थी और यही विचार उन्हें कांग्रेस की विचारधारा से अलग करता है। उन्हें अपनी लड़ाई मात्र भारत की आजादी तक ही नहीं लड़नी थी, बल्कि तब तक लड़नी थी जब तक समाज के शोषित और गरीबों को आर्थिक आजादी न मिल जाए। साम्यवादी विचारधारा पर विश्वास करते हुए भी वे उनमें गुण-दोषों को अपने विवेक की कसौटी पर ही परखते थे। दुनिया के इतिहास, विभिन्न क्रांतियों और क्रांतिकारियों के बारे में उनका अध्ययन काफी गहरा था।

सरदार भगत सिंघ ने जेल में अपनी रिहाई के लिए कोई समझौता नहीं किया, न ही कभी भागने का प्रयास किया, हालांकि उन्होंने अपने मुकद्दमे के सिलसिले में पंजाब के गवर्नर तक को आवेदन किया। ऐसा उन्होंने अपने ऊपर थोपे गए आरोपों का खंडन करने के तहत किया। आवेदनों में उन्होंने स्पष्ट किया कि उनका उद्देश्य किसी की हत्या करना नहीं था। जो असेम्बली में बम फेंका गया था उससे लोगों के बीच दहशत पैदा करना और क्रांतिकारियों की ओर जनता और सरकार का ध्यान आकृष्ट करना था। उनके इस कार्य को हत्या के प्रयास का नाम दिए जाने से उन्हें चिढ़ थी।

इस प्रकार दो वर्ष तक उन पर असेम्बली बम केस, सांडर्स की हत्या और रामलीला जुलूस पर बम फेंकने के आरोपों के मुकद्दमे चलते रहे और वे जेल में बंद रहे। इस दौरान उन्होंने खूब अध्ययन किया। अंत में सात अक्तूबर १९३० को उन्हें सांडर्स की हत्या के आरोप में फांसी की सजा सुना दी गई।

२४ मार्च १९३१ को उनकी फांसी की तारीख तय की गयी। किंतु इनकी फांसी से इनके साथियों में भड़कने वाली क्रांति का इतना गहरा आतंक अंग्रेजों के दिलों पर छाया हुआ था कि २३ मार्च १९३१ की शाम ही उन्हें फांसी पर चढ़ा दिया गया। सही अर्थों में शहीद सरदार भगत सिंघ एक क्रांतिकारी, सच्चे देश-भक्त, विचारक तथा चिंतक थे।

संपत हरखु न आपत दूखा

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ**

सम्पत्ति एवं विपत्ति

सम्पत्ति एवं विपत्ति, मानव-जीवन की दो भिन्न अवस्थाएं हैं। सम्पत्ति का अर्थ है- संपदा, वैभव या ऐश्वर्य अर्थात जब मनुष्य को धन, वैभव, ऐश्वर्य और सुख उपलब्ध हो रहा हो तो वह अवस्था संपत्ति अथवा संपदा की अवस्था कहलाती है। दूसरी ओर विपत्ति की अवस्था है। विपत्ति को विपदा, संकट, आफत, मुसीबत या दुख भी कहा जाता है। आम तौर पर धन, वैभव, ऐश्वर्य, संपदा या सुख आदि के अभाव को ही विपत्ति या विपदा कह दिया जाता है।

धूप-छांव जैसा रिश्ता

सम्पत्ति एवं विपत्ति में धूप-छांव जैसा विपरीत संबंध होता है। ये दिन-रात की तरह एक-दूसरे के बाद निरंतर आती और जाती रहती हैं। भारतीय दर्शन-परंपरा में मानव-जीवन की उपमा रथ-चक्र से दी गई है। जिस प्रकार घूमते हुए रथ-चक्र का एक हिस्सा ऊपर और नीचे आता-जाता रहता है उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में भी सम्पत्ति और विपत्ति की अवस्थाएं क्रम से आती और जाती रहती हैं। लोक मानस में मनुष्य को प्राप्त होने वाली सम्पत्ति और विपत्ति को पूर्व जन्मों के कर्मों का फल माना जाता है। प्राचीन काल से ही यह विश्वास बना आ रहा है कि सत्कर्म सुख और दुष्कर्म दुख मिलने का कारण बनते हैं। भक्त-जनों ने मनुष्य की सुमति और दुर्मति को उसके सुख-दुख की वजह माना है। उनके अनुसार स्वच्छ एवं सच्ची मति वाला व्यक्ति सदैव सम्पत्ति भोगता है और दुर्मति वाला व्यक्ति हमेशा विपत्ति से ग्रस्त रहता है।

गुरबाणी में सम्पत्ति-विपत्ति की अवधारणा

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्पत्ति-विपत्ति और सुख-दुख के विषय में बड़ा स्पष्ट और गहन चिंतन मिलता है। गुरबाणी सम्पत्ति एवं विपत्ति में जीवन जीने की बड़ी कारगर युक्ति सुझाती है। आम तौर पर मनुष्य हमेशा सम्पत्ति अर्थात् सुख की अवस्था में ही रहना चाहता है। वह विपत्ति आने के ख्याल से ही घबरा जाता है और भय अनुभव करने लगता है। परंतु साथ ही यह और भी आश्चर्य वाली बात है कि जिस व्यक्ति को अपने सौभाग्य के कारण लगातार सुख की अवस्था प्राप्त होती रहती है, उस मनुष्य में 'हउमै', 'अहंकार' और 'लोभ' की उत्पत्ति हो जाती है। वह दुनिया के भोग-विलास में ऐसा डूब जाता है कि उसे फिर कुछ और याद ही नहीं रहता। मनुष्य की ऐसी हालत का खुलासा करते हुए नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी तिलंग राग में फरमाते हैं :

संपति रथ धन राज सिउ अति नेहु लगाइओ ॥
काल फास जब गलि परी सभ भइओ पराइओ ॥
जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ ॥
पाप करत सुकचिओ नही नह गरबु निवारिओ ॥

(पन्ना ७२७)

संपत हरखु न आपत दूखा

एक ओर तो मनुष्य सुख-सम्पत्ति की अवस्था में 'हउमै' और 'अहंकार' का शिकार हो जाता है, वहीं दूसरी ओर विपत्ति की अवस्था

१/३३८ 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना)। मो. ०९४१७२-७६२७१

आने पर दुख से घबरा कर विलाप करने लग जाता है। इसीलिए गुरमति मनुष्य को सुख और दुख दोनों में समान बने रहने की प्रेरणा देती है। गुरु साहिबान समझाते हैं कि सम्पत्ति में खुशी से पागल नहीं होना है और दुख की हालत में आत्म-विश्वास खोकर निराशा में नहीं डूबना है। कष्ट में भी 'ढहंदी कला' (साहसहीन होना) में नहीं जाना है वरन् सदैव 'चढ़दी कला' (साहस भरा रहना) में रहना है। मनुष्य सुख में परमात्मा को याद रखे और दुख में उसका शुक्र करे। पंचम पातशाह साहिब श्री गुरु अरजन देव जी इसी लिए गउड़ी राग में समझाते हैं कि सम्पत्ति में खुश और विपत्ति में दुखी नहीं होना चाहिए :

संपत हरखु न आपत दूखा रंगु ठांकुरै लागिओ ॥ *(पन्ना २१५)*

साथ ही पंचम पातशाह यह भी समझाते हैं कि सुख-दुख को भूल कर मनुष्य को अकाल पुरख के रंग में रंगे रहना चाहिए। धन-पदार्थ मिलने की खुशी और गंवाने का दुख न करें तो मन को रोग व्याप्त नहीं होते। रामकली राग में गुरु जी कथन करते हैं :

आवत हरख न जावत दूखा नह बिआपै मन रोगनी ॥ *(पन्ना ८८३)*

भक्त कबीर भी इस संदर्भ में अति सुंदर तर्क देते हैं। आपका कथन है कि न संपत्ति देखकर खुश होना चाहिए और न विपत्ति देख कर रोना चाहिए क्योंकि संपत्ति और विपत्ति दोनों समान होती हैं। होता सिर्फ वही है जो अकाल पुरख की इच्छा हो :

संपै देखि न हरखीऐ बिपति देखि न रोइ ॥
जिउ संपै तिउ बिपति है बिध ने रचिआ सो होइ ॥ *(पन्ना ३३७)*

भले-बुरे की पहचान

जब किसी मनुष्य को सम्पत्ति प्राप्त होती है तब उस समय उसके सगे-संबंधी आ बन बैठते हैं, पर मनुष्य पर जब विपत्ति का प्रहार होता है तब सभी उसका साथ छोड़ जाते हैं, सिर्फ सच्चे मित्र ही उसके पास बचते हैं। इसलिए मानव-जीवन के लिए विपत्ति को सम्पत्ति से ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया है क्योंकि वह मनुष्य को भले-बुरे और सच्चे-झूठे मित्रों की पहचान करवाती है। नवम पातशाह का श्लोक है :

सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥
कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होइ ॥
(पन्ना १४२८)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब हमें समझाते हैं कि असली सुख हरि के भजन में है।

सच्चा सुख—हरि का सुमिरन

साधारणतः दुनियावी सुख, वैभव और ऐश्वर्य आदि की प्राप्ति को ही सम्पत्ति की अवस्था मान लिया जाता है और इन सबके अभाव को विपत्ति की अवस्था कह दिया जाता है। परन्तु यह सम्पत्ति या सुख सच्चा नहीं, झूठा है। असली सम्पदा और सुख तो तब प्राप्त होता है जब हरि-नाम का सुमिरन और गुणगान किया जाये। जहां 'हरि' का सुमिरन और भक्ति नहीं है, वहां भले लाखों दुनियावी दौलतें मौजूद हों फिर भी विपत्ति ही मानी जायेगी। पंचम पातशाह फरमाते हैं :

बिपति तहा जहा हरि सिमरनु नाही ॥
कोटि अनंद जह हरि गुन गाही ॥ (पन्ना १९७)

अक्सर मनुष्य विपदा में फंस कर ही अकाल पुरख को याद करता है और सम्पत्ति-सुख प्राप्त होते ही उसे भूल जाता है। दरअसल सुख में अकाल पुरख को भूल जाने के कारण ही उसे दुख और कष्ट भोगने पड़ते हैं। यदि मनुष्य सुख के समय भी अकाल पुरख को याद रखे, उसका सुमिरन एवं उसकी सिफत-सालाह

करता रहे तो विपत्ति आने अथवा उसका प्रभाव पड़ने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। इसलिए श्री गुरु अरजन देव जी हर समय प्रभु को मन में बसाये रखने के लिए प्रेरित करते हैं :

जिह प्रसादि छतीह अंम्रित खाहि ॥
तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥ (पन्ना २६९)

गुरबाणी का स्पष्ट फरमान है कि 'नाम-सुमिरन' हर प्रकार की विपत्ति और दुख को समाप्त कर देता है :

हरि जन सिमरहु हिरदै राम ॥
हरि जन कउ अपदा निकटि न आवै पूरन दास के काम ॥ (पन्ना ७०२)

अकाल पुरख का जाप करके उसकी शरण में चले जाने पर शोक, रोग और भारी से भारी विपत्ति भी दूर हो जाती है :

सोग रोग बिपति अति भारी ॥
दूरि भई जपि नामु मुरारी ॥ (पन्ना ७४२)

मनुष्य का कर्त्तव्य

गुरमति के अनुसार मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह दुनियावी धन-दौलत, भोग-वैभव के पीछे भाग कर झूठी संपदा हासिल करने के बजाय अकाल पुरख की भक्ति और सुमिरन के द्वारा सच्ची सम्पत्ति प्राप्त करने की कोशिश करे और निरंतर सुमिरन-भक्ति के द्वारा उसे स्थाई बनाने का प्रयास करे ताकि विपत्ति, दुख, कष्ट, क्लेश आदि से सदा के लिए मुक्त हुआ जा सके।

सुखमनी साहिब में ब्रह्मज्ञानी का स्वरूप

(पृष्ठ २५ का शेष)

भाषागत शब्दों की सीमा में बांधा नहीं जा सकता। उसे तो केवल अनुभव ही किया जा सकता है। ज्ञानी पुरुष की अवस्था को ज्ञानी पुरुष ही जान सकता है अर्थात् ब्रह्मज्ञानी की महिमा का वर्णन वही कर सकता है जो स्वयं ब्रह्मज्ञानी हो जाए। ब्रह्मज्ञानी की अध्यात्म प्राप्ति कहां तक है, यह ब्रह्मज्ञानी ही जान सकता है। उसकी महिमा अनन्त है, उसका न तो अंत है, न ही पार। गुरु जी का कथन है कि ऐसे ब्रह्मज्ञानी भाव सद्गुणी व्यक्ति को सदा नमस्कार है :

ब्रहम गिआनी का अंतु न पारु ॥
नानक ब्रहम गिआनी कउ सदा नमसकारु ॥

उद्धारक

ब्रहम गिआनी संगि सगल उधारु ॥

ब्रह्मज्ञानी की संगत को जो ग्रहण करता है उसका उद्धार हो जाता है भाव ब्रह्मज्ञानी द्वारा दिए गए उपदेश से समस्त जगत् उस प्रभु का नाम जपने लगता है तथा मानव जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो परम पद को प्राप्त करता है। ब्रह्मज्ञानी इस सृष्टि का कर्त्ता एवं सभी जीवों का आश्रय है। ब्रह्मज्ञानी का विश्वास केवल प्रभु पर ही होता है। उसने आत्मरस का अनुभव किया होता है। इसी कारण वह उस परमानंद को समस्त जगत् को प्रदान करना चाहता है। उसकी अभिलाषा होती है कि सभी मानव उसी के समान ज्ञानी हों, उस परमानंद को प्राप्त करें भाव ब्रह्मज्ञानी की संगति को जो ग्रहण करता है वह मानव भी ब्रह्मज्ञानी हो जाता है।

उक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि गुरु जी ने ब्रह्मज्ञानी के माध्यम से सामान्य मानव को यह संदेश दिया है कि वह भी परोपकार, अहं का त्याग, सुबुद्धि, धैर्य आदि गुणों का निज जीवन में पालन करे। उक्त गुणों को धारण करने वाला व्यक्ति मानवता के लिए एक आदर्श सिद्ध होता है।

जनपद लखीमपुर खीरी का सिख समुदाय

*-डॉ. रामपाल सिंघ**

इस देश के सबसे बड़े प्रांत उत्तर प्रदेश के अधिकतम क्षेत्रफल वाले जनपद खीरी को लखीमपुर-खीरी के नाम से भी जाना जाता है। जनपद प्राकृतिक एवं भौगोलिक दृष्टि से अत्यधिक समृद्ध पर यातायात के साधनों के अभाव और विकास की धीमी गति के कारण आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से अत्यधिक पिछड़ा हुआ क्षेत्र माना जाता रहा है, क्योंकि नदियों और वनों की अधिकता से इसका बहुत-सा भाग सैकड़ों वर्षों तक कृषि कार्य के लिए अनुपयुक्त रहा। पर १९४७ ई में देश के विभाजन के पश्चात् जनपद में आये सिख समुदाय ने इसकी प्रगति में नये आयाम जोड़े, जिससे आज स्थिति यह है कि राजकीय अथवा सार्वजनिक क्षेत्र में जो लोग एक बार यहां आ जाते हैं इसकी समृद्धता के वशीभूत होकर यहीं रह जाते हैं। अन्यथा देश की स्वाधीनता के पूर्व बनाच्छादित नदियों की बाढ़ एवं आवागमन के दुर्लभ साधनों से युक्त, मलेरिया से परिपूर्ण इस जनपद में कोई बाहरी व्यक्ति आना ही नहीं चाहता था। इसका उदाहरण है, सन् १९३२ ई में स्थापित की गई शूगर फैक्टरी गोला गोकर्णनाथ। जब शूगर फैक्टरी स्थापित हुई तब कर्मचारियों के लिए मिल के अधिकारियों को अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा था, जबकि गोला मात्र लखीमपुर नगर से ३५ कि. मी. की दूरी पर स्थित है।

इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि प्रत्येक जाति एवं समुदाय की पहचान अपनी विशिष्ट विशेषता के आधार पर ही हुई है। ठीक ऐसा ही तथ्य इस जनपद के सिख समुदाय के साथ जुड़ा हुआ है। यद्यपि जनपद में इस समुदाय के लोग स्वतंत्रता के पूर्व ही आ गये थे पर ये गिने-चुने लोग ही थे। इनका मूल ध्येय ब्याज पर धन देना और व्यापार करना था अथवा नाम मात्र के लिए कुछ लोग सरकारी नौकरी में होने के कारण जनपद से सम्बंधित थे।

सन् १९४७ ई में जब अखण्ड भारत, हिंदुस्तान और पाकिस्तान दो भागों में खण्डित हो गया तथा पाकिस्तान में जो त्रासदीपूर्ण घटनायें हुईं उससे बहुत ही भारी संख्या में इस समुदाय के लोग निर्वासित कर दिये गये। तब ये पर-स्वार्थीजन शरणार्थी की स्थिति में वहां के बर्बता-क्रूरता से परिपूर्ण अत्याचारों और यातनाओं से त्राण पाने के लिए अपना सब कुछ खोकर इस देश के विभिन्न अंचलों में आ बसे। इसी तारतथ्य में इस समुदाय के लोगों में से जिनके सम्बंध कुछ पहले से भी जनपद में थे, वे लोग यहां आकर बसे या भारत सरकार की ओर से जिन्हें बसाया गया, जनपद के नागरिक बने।

स्वाधीनता से पूर्व जनपद के ऐरा, मड़वा, समदहा, रमिया बेहड़, मैलानी, गोला आदि स्थानों में इस समुदाय के लोग आ चुके थे, क्योंकि प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद ब्रिटिश सरकार ने जिन भारतीय सैनिकों को उनकी अमूल्य सेवाओं के लिए पुरस्कृत किया उनमें पंजाब के सैनिकों की बहुलता थी। इन्हें जागीरें दी गईं तथा 'सर' और 'राय बहादुर'

**गुरु नानक इंटर कॉलेज, लखीमपुर-खीरी (उ. प्र.)-२६२७०१ फोन- ०५८७२-२६२७२१*

जैसी उपाधियों से भी विभूषित किया गया। इसी शृंखला की एक कड़ी के रूप में जनपद खीरी के अन्तर्गत रमिया बेहड़, ऐरा, मड़वा और समदहा जैसी रियासतें इस समुदाय को भी दी गईं। उदाहरणार्थ मड़वा रियासत के ताल्लुके-दार स. पृथ्वीपाल सिंघ के पूर्वज स. पंजाब सिंघ जी १८४९ ई. में सेकेण्ड पंजाब एररेगुलर कैवलरी में रिसालदार मेजर के पद पर थे। सन् १८५९ ई. से १८६१ ई. तक अवध की पांचवीं माऊण्टेड पुलिस रेजीमेंट के कमांडर रहे तथा १८६१ से १८६९ ई. तक मध्य भारत की द्वितीय घुड़सवार रेजीमेंट के कमांडर रहे थे।

इस प्रकार नेपाल सीमा से लगे और सघन वनों से घिरे जनपद के भू-भाग पर व्यापार के साथ-साथ खेती करने हेतु इस समुदाय के लोगों ने सस्ती दर पर जमीनें लीं और यहीं बस गये। इनमें सबसे पहले सरदार जोगिंदर सिंघ रमिया बेहड़ में, सरदार इकबाल सिंघ ने एरा खमरिया में, जनरल चरन सिंघ व स. सुरजीत सिंघ यैलानी के निकट, सेठ चुन्नीलाल व केदारनाथ साहनी और लाम्बा (भट्ठेवाले) ने गोला में, स. अरजन सिंघ ने समदहा-रैनी में, सरदार लाभ सिंघ कुफारा के निकट तथा स. सरदूल सिंघ खमरिया में अपनी खेती एवं व्यापारिक प्रतिष्ठान स्थापित कर चुके थे। इसके अतिरिक्त स. संता सिंघ, स. बुद्ध सिंघ, स. नंद सिंघ, स. पूरन सिंघ, स. दसवंदा सिंघ आदि प्रमुख लोग यहां आकर स्थाई रूप से निवास करने लगे। इनमें से चुन्नीलाल गोबा नगर पालिका के अध्यक्ष स. सरदूल सिंघ ऐरा स्टेट के मैनेजर तथा बी. बी. एल. सी. इण्टर कॉलेज, खमरिया के वर्षों तक प्रबंधक रहे। जो लोग सरकारी नौकरियों में थे उनमें स. गुरबख्श सिंघ जी प्रमुख हैं। सरदार गुरबख्श सिंघ जी १९४५ ई. में मिलेटरी एकाउण्ट सेक्शन लखनऊ में लिपिक पद पर थे, जो १९४७-४८ ई. में सप्लाई इंस्पेक्टर नियुक्त किये गये तथा इसी पद पर शाहजहांपुर, लखीमपुर, सीतापुर में कार्यरत रहे। लखीमपुर में जब सप्लाई आफिस बना तब सबसे पहले सप्लाई आफिसर पद पर कुछ दिनों तक नियुक्त किये गये। इसके बाद अवकाश ग्रहण करने पर आज लखीमपुर नगर की बाजपेयी कालोनी में रह रहे हैं। आप युवराज दत्त महाविद्यालय, लखीमपुर की प्रबंध समिति के सम्मानित सदस्य हैं।

इस समुदाय की स्वाधीनता से पूर्व सबसे समृद्ध और सशक्त रियासत ऐरा खमरिया, सर इकबाल सिंघ और स. पृथ्वीपाल सिंघ के समय रही। ऐरा स्टेट की प्रगति के लिए हर संभव प्रयास इन्होंने किये तथा इस नितान्त गौजरी क्षेत्र में कई जनकल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन किया, जिससे इनकी यशोगाथा में वृद्धि हुई। खमरिया में एक शूगर फैक्ट्री के लिए सर इकबाल सिंघ ने भूमि उपलब्ध कराई, जहां स. बलदेव सिंघ जी ने शूगर फैक्ट्री लगाई। कुछ समयोपरांत यह शूगर फैक्ट्री पं. गोबिन्द बल्लभ पंत के नाम पर गोबिन्द शूगर फैक्ट्री खमरिया के नाम से प्रसिद्ध हुई। वर्तमान में यह खीरी जनपद की दूसरी सबसे बड़ी फैक्ट्री है। स. प्रिथीपाल सिंघ ने खमरिया से लखीमपुर तक एक कच्ची सड़क बनवाई, शारदा नदी पर नावों की व्यवस्था करवाई, क्योंकि तब नदी पर पुल नहीं था। स. प्रिथीपाल सिंघ की भांति उनकी पत्नी भी काफी दयालु, प्रजापालक महिला थीं। उन्होंने कई निर्धन बालिकाओं का विवाह करवाया तथा अन्न व गायें उपहार में दीं। वे सम्पूर्ण ऐरा स्टेट में ठकुराइन बीबी साहिबा के नाम से आदरपूर्वक जानी जाती थीं। एरा स्टेट से समदहा, मड़वा दो और छोटी रियासतें बनीं, पर ये दोनों शारदा नदी के गर्भ में समा गई

हैं, केवल ऐरा ही बची है। सरदार साहिब के सम्बंध महाराजा फरीदकोट से थे। इस परिवार के कुछ सदस्य भारतीय सेना में शीर्षस्थ पदों पर रह कर अवकाश प्राप्त कर चुके हैं।

स्वाधीनता से पूर्व ही नगर लखीमपुर के दो संभ्रांत परिवारों के पूर्वज भी इस जनपद में स्थाई रूप से आ चुके थे। इनमें एक परिवार स. लाभ सिंघ राणा जी का था जिनका निजी व्यवसाय रमिया बेहण और कफारा के निकट था। सरदार लाभ सिंघ जी के परिवार का अपना ट्रांसपोर्ट और शूगर इंडस्ट्री का कारोबार बड़े पैमाने पर जनपद में है। इसी परिवार के सदस्य स. इन्द्रपाल सिंघ राणा, वर्तमान में गुरु नानक इंजीनियरिंग कॉलेज लखीमपुर के प्रबंधक हैं। दूसरा परिवार स. अरजन सिंघ जी का है, जिनकी छोटी सी जागीर समदहा के पास रैनी थी। आधुनिक समय में स. हरपाल सिंघ स्थानीय 'सरदार होटल' के मालिक एवं नगर के प्रतिष्ठि वकील स. तेजपाल सिंघ आदि हैं। इस परिवार के कई व्यापारिक प्रतिष्ठान भी हैं।

सन् १९४७ का वर्ष और देश-विभाजन की प्रक्रिया, पर्याप्त मात्रा में व्याप्त हिंसा एवं प्रतिशोध की भावना तथा धार्मिक उन्माद से धधकता देश का पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्र, परिणामत: इस समुदाय को पाकिस्तान से पलायन करते हुये अपना सब कुछ त्यागना पड़ा। ये लोग किसी प्रकार अपने प्राण बचा कर वहां से भागे। कहीं पैदल चलकर, कहीं तांगे पर और कहीं मालगाड़ी की छत पर यात्रा करते हुये, भूखे-प्यासे रहकर, अम्बाला और सहारनपुर होते हुये आये। कभी-कभी तो कच्चा बाजरा चबा कर इन्हें अपनी भूख शांत करनी पड़ी। मार्ग में जो कुछ धन इनके पास था वह हड़प लिया गया, अत्यधिक अत्याचार हुये और कुंओं में छलांग लगा दी और अपनी त्रासदीपूर्ण घटनाओं का विवरण देते हुये मोहल्ला पंजाबी कॉलोनी, लखीमपुर के सरदार सुन्दर सिंघ ने बतलाया था कि "यहां तक कि नादिरशाह और औरंगजेब के समय में भी इतनी खूंरेजी और अत्याचार की घटनायें नहीं हुईं जितनी भारतवर्ष के बंटवारे (हिंदोस्तान और पाकिस्तान बनने) के समय हुईं। यहां तक कि मित्र भी सर्वहारा बन गये थे।" सरदार साहिब ने और कहा कि "बटवारे के पश्चात, इस जनपद में आने वाले अधिकांश लोग, पाकिस्तान के गुजरात जिले के हैं। कुछ समय उपरांत जब सब कुछ शांत हो गया तो जिन लोगों ने वहां पर (पाकिस्तान में) अपनी छूटी हुई शेष सम्पत्ति के लिए अपना दावा पेश किया, तो उन्हें मुआवज़े के रूप में बहुत ही कम धन दिया गया।"

८२ वर्ष की आयु पार कर चुके स्थानीय गुरु नानक डिग्री कॉलेज के प्रबंधक स. भाग सिंघ जी ने बतलाया, "जब हम लोग लखीमपुर पहुंचे थे तो हमारे पास नाम मात्र का ही धन था। हम लोगों को उस समय अपनी जीविका के लिए फल और मूंगफली के ठेले लगाने पड़े। सड़क पर फड़ लगा कर कपड़ा बेचते थे। बाद में कपड़े का व्यापार किया और जैसे-जैसे आमदनी बढ़ती गई हमारा कारोबार भी बढ़ता गया।" सरदार भाग सिंघ के कई व्यापारिक प्रतिष्ठान नगर में हैं तथा लखीमपुर नगर में शिक्षा के लिए किये गये इनके प्रयास सराहनीय हैं।

भारत-विभाजन के बाद वर्ष १९४७-४८ ई में इस समुदाय की जनसंख्या जनपद लखीमपुर खीरी के ग्रामीण अंचल में १०२९ तथा शहरी क्षेत्र में १२८६ थी जैसा कि सेंसेस रिपोर्ट सन् १९५१ को देखकर पता चलता है कि इस जनपद की सम्पूर्ण जनसंख्या मात्र १०,५८,३७३ थी। इस समुदाय की जनसंख्या अब जनपद में लाखों में पहुंच चुकी है। इसी कारण से जनपद खीरी

मिनी पंजाब और प्रदेश के तराई अंचल को आधा पंजाब कहा जाता है।

जनपद की खेती में तकनीकी ज्ञान के उपयोग एवं प्रचार का श्रेय इसी समुदाय को है जिससे फसलों की उपज में बढ़ोत्तरी हुयी। साथ ही साथ यह भी कहना अनुचित न होगा कि जनपद के अधिकांश व्यापारिक प्रतिष्ठानों पर वर्चस्व इन्हीं का है। जनपद के लखीमपुर, गोला, मैलानी, वाकेगंज, कुकरा, अलीगंज, भीरा, पलिया, सम्पूर्णा नगर, बिजुआ, रमिया बेहड़, धौरहरां, ईसानगर, निघासन, सिंगाही, तिकुनिया, ऐरा खमरिया, मुहम्मदी, बेलरायां आदि स्थानों पर इस समुदाय के पवित्र भव्य विशाल गुरुद्वारों के भवन और प्रांगण, आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त फार्म हाऊस, हरियाली से परिपूर्ण लहलहाती हुई फसलें इनकी समृद्धता का प्रतीक हैं। महंगापुर, गिरजापुरी, लखीमपुर और गोला के गुरुद्वारे बहुत भव्य एवं शानदार बने हुये हैं। पलिया, गोला और लखीमपुर क्षेत्र में शिक्षा-जगत में इस समुदाय के किये गये प्रयास प्रसंशनीय हैं।

उपरोक्त क्षेत्रों में समय के थपेड़ों को झेलते हुये, विरात ५० वर्षों में इस समुदाय के लोगों ने अपने अथक परिश्रम से अपना ही नहीं जनपद का भी कायाकल्प कर दिया है। "धरती सोना उगलती है" इस कहावत को चरितार्थ कर दिखाया है इस समुदाय के सभी छोटे-बड़े कृषकों ने जिनकी उन्नतिशील कृषि-व्यवस्था के आधार पर जनपद का आर्थिक विकास सम्भव हो सका है। इस श्रृंखला में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं स. केवल सिंघ पलिया, स. बख्शीश सिंघ मिर्जापुर फार्म, स. मोहन सिंघ जानकी नगर निकट बाहरपुर, स. सुरजीत सिंघ मैलानी, स. वीरेन्द्र सिंघ मुस्तफाबाद, स. प्रितेन्द्र सिंघ और स. राजबीर सिंघ बसलीपुर ग्रण्ट, स. कशमीर सिंघ जो गुरु नानक इंजीनियरिंग कॉलेज लखीमपुर के अध्यक्ष भी हैं, स. कुलवत सिंघ (खैरा) मोजयाबाद एवं स. अजीत सिंघ भरकुण्डा आदि ऐसे बड़े किसान हैं जिन्होंने जनपद को आर्थिक दृष्टि से समृद्ध बनाने में अपनी अहम् भूमिका अदा की है।

कविता

स्त्री का सम्मान जरूरी क्यों?

स्त्री का सम्मान करें हम, जागरूक बन जायें हम!
बगैर इसके समाज न चले, आओ विचार करें हम!
वंश चलाने के डर से, दुनिया में न आने देते हम!
बोझ समझते हैं इसको, ऐसा क्यों करते हम?
स्त्री से ही हमने जन्म लिया, उपकार कैसे उतार सकते हम?
स्त्री से ही रिश्ते-विवाह होते, क्यों नहीं विचार सकते हम?
स्त्री ने ही सबको जन्म दिया, क्यों इसको तुच्छ बताते हम?
मां बन बच्चों को न पाले यह, संसार कैसे चलेगा सोचते क्यों न हम?
बेटी, पत्नी, मां तीन अहम किरदार, ये सब भूल क्यों जाते हम?
क्यों रोकते, क्यों टोकते, क्यों दबाते, कदम क्यों न बढ़ाने देते हम?
बेटी को पढ़ायें, बढायें, सम्मान दें, समाज में दे ऊंचा स्थान हम!
जागरूक हो सोचें भविष्य के बारे में, बढ़ायें इसे और अपना कल संवारें हम!

-स. अवतार सिंघ, सस्ता वस्त्र भंडार, नाका-रामनगर रोड, फैजावाद (यू. पी.)-२२४००१

पतितपन से वापसी

*-स. गुरदयाल सिंघ दयाल**

श्री गुरु रामदास जी द्वारा बसाई पवित्र धरती श्री अमृतसर में एक सरदार साहिब अपने कारखाने के दफ्तर में बैठे कारोबार से संबंधित फाइलों में सिर झुका कुछ लिखा-पढ़ी कर रहे हैं। उनका साबत-सुंदर-संवरा दाढ़ा, खूब ढंग से बंधी दस्तार तथा आकर्षक मुख देख कर स्पष्ट दीख रहा है कि वे पूरी रहत मर्यादा वाले अमृतधारी गुरसिख हैं। उनकी उच्च रहनी-बहनी है, आफिस के अंदर के विशेष गर्मामयी-धार्मिकता वाले माहौल को देख कर ऐसा ही प्रतीत हो रहा है। सरदार साहिब अपने काम में इतने तल्लीन हैं कि किसी अनजान व्यक्ति के अंदर प्रवेश करने पर भी उनका ध्यान नहीं बंटता, जिस पर आने वाला ही हलका खांस कर अपने आने का एहसास करवाता है, तब जाकर उनकी सोचों तथा विचारों का क्रम टूटता है और वे टेबल पर रखी फाइलों से नजर हटा कर, आने वाले को पहले बड़े गौर से और फिर बहुत गुस्से से देखते हैं:

अनजान व्यक्ति- वीर जी! सति श्री अकाल।

सरदार साहिब- बई राम राम लाला।

अनजान व्यक्ति- नहीं नहीं, सरदार जी, मैं भी सरदार ही हूं;।

सरदार साहिब- न बई न, तुम सरदार कैसे हो सकते हो? वैसे भी जब दो गुरसिख आपस में मिलते हैं तो गर्ज कर 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतह' गजाते हैं।

अनजान व्यक्ति- क्या, आपने मुझे पहचाना नहीं?

सरदार साहिब- (*पहले वह उसे गौर से देखने, फिर व्यंग्य से पहचानने का प्रभाव देते हैं*) तेरा शुभ नाम शायद राम लाल है, ठीक है न?

अनजान व्यक्ति- नहीं नहीं, आपको भूल हो रही है, मैं राम लाल नहीं, मैं तो शमशेर सिंघ हूं पटियाले वाला, आपका मित्र, आपका सहपाठी! याद करें, हम लोग एक साथ पढ़े, खेले-कूदे और बढ़े हुए। आप इतने भुलक्कड़ कैसे हो गए हैं?

सरदार साहिब- अनजान वीर! तुम शमशेर सिंघ कैसे हो सकते हो, मेरे मित्र पटियाले वाले? वह तो पक्का गुरसिख था। बड़ी संवार के दसतार सजाया करता था। प्यारी दाढ़ी! कितनी प्यारी मूछें! पांच-ककारी रहत का धारणी, सच्चा-सुच्चा नौजवान था वह, तुम्हारे जैसे नशों-विकारों तथा बदकारियों का मारा कमजोर पतित इंसान नहीं। उसकी बात मत कर, वह तो हीरा था हीरा! सिख कौम का हीरा!!

अनजान व्यक्ति- हां हां, वही हूं! आपका हीरा, पंथ का हीरा, शमशेर सिंघ पटियाले वाला, आपका देर का बिछुड़ा यार, आपका जिगरी दोस्त, आपका गुर-भाई!

सरदार साहिब- न न, बिलकुल झूठ, तेरे तो केश ही कत्ल किये हुए हैं, दाढ़ी-मूंछ भी

**गुरुद्वारा साहिब कालोनी, चास, बोकारो (झारखंड)-८२७०१२, मो. ०९७०९२-३७१२७*

सफा-चट्ट है और सिर पर दस्तार भी नहीं, तू मेरा मित्र कैसे हुआ? तू शमशेर सिंघ पटियाले वाला नहीं हो सकता। जा चला जा, मेरा वक्त बर्बाद मत कर। *(वे फिर फाइलें देखने लगते हैं)*

अनजान व्यक्ति- कमाल के बंदे हो आप भी? इधर मैं तो आप की शोभा सुन, पता-ठिकाना पूछ कर आप से मिलने आया हूं परंतु आप मुझसे नजरें मिलाने और बात करने से भी इंकार कर रहे हो! क्या यह ठीक है आपके लिए? देर से बिछुड़े मित्र जब मिलते हैं तो उनकी खुशी का तो कोई ठिकाना नहीं रहता।

सरदार साहिब- सच्चा मित्र वह नहीं जो उसकी कमियों के बारे में न बताए। सच्चा मित्र, अपने मित्र को उसकी कमजोरी अवश्य बताता है। वह उसे सुधारना चाहता है, उसकी काया-कलप करना चाहता है।

अनजान व्यक्ति- ठीक है, अब महसूस हुआ कि आप सही हो और मैं ही गलत हूं। आप ने तो मेरी आंखें खोल दी हैं। सिखी को तिलांजलि देना मेरे लिए सचमुच बुरी बात थी। इसमें मेरा अपना दोष भी था, परंतु हालात ने भी मुझे भ्रम में डाल दिया। शायद मैं इस गलत रूप को न प्राप्त करता, परंतु कुछ हालात ही ऐसे हो गए। आप मुझे इस घिनौने रूप में देख कर पहचानने से इंकार कर रहे हो गुरचरण सिंघ जी! भाई जी, क्या बताऊं, पढ़ाई पूरी होने पर कारोबार के सिलसिले में मैं जब विदेश पहुंचा तो वहां ऐसे लोगों की संगत मिली कि जिनकी सोहबत में रह कर मैं सिखी को संभाल न पाया। धन-दौलत व शोहरत तो खूब कमायी, पर तन-मन करके पूरी तरह हताश हो गया। वैसे मैंने संभलने की कोशिश की, पर मुझ पर खुलेपन वाला विदेशीपन इस कदर हावी था कि उसके आगे गुरु की बात ही भूल गयी, खालसायी रहत और मर्यादा की दिल-दिमाग से याद ही उतर गयी और याद रह गया सिर्फ तो सिर्फ रुपया-पैसा और मौज-मस्ती, जो मेरी भूल थी, बहुत बड़ी भूल।

सरदार साहिब- तुमने दसवें पातशाह साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज के खंडे-बाटे वाले अमृत का अपमान किया है, तुमने गुरु नानक पातशाह की सिखी का अपमान किया है, तुमने सिख गुरु साहिबान एवं गुरु-घर के सभी शहीदों के कुर्बानी भरे इतिहास का अपमान किया है और तो और अमृत छकते वक्त गुरु संग किये वायदों को तोड़ कर तुमने खालसायी इरादों और जज़बातों का अपमान किया है।

अनजान व्यक्ति- वीर गुरचरण सिंघ जी! आप जितना भी कोसना चाहें मुझे कोस लें, जितना भी बुरा-भला कहना चाहें मुझे कह लें, मुझे सिख-पंथ का गद्दार कह लें, मुझे धन-दौलत व शोहरत का लोभी इंसान कह लें और चाहे मुझे नशे-विकारों तथा बदकारियों का शैतानी दिमाग कह लें। आप शत-प्रतिशत सही हो मैं, तो हूं ही इस लायक।

सरदार साहिब- *(अभी भी गुस्से के प्रभाव में तथा कुर्सी से उठते हुए)* फिर लेने क्या आए हो मेरे पास? मैं तुम्हारे जैसे झूठे व फरेबी इंसानों से बात करने को तैयार नहीं और न ही पहचानने को, जो दौलत और शोहरत की खातिर अपने आपको ही बेच दें, अपने धर्म-ईमान को ही बेच दें। *(कहते-कहते वे कार्यालय से बाहर जाने लगते है)*

(शेष पृष्ठ ६८ पर)

गुरबाणी राग परिचय-१८

रागु रामकली

*-स. कुलदीप सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पूर्वाद्ध में सिरीरागु से बैराड़ी राग तक १३ रागों में बाणी संग्रहीत है। इन रागों में राग गउड़ी सबसे विस्तृत राग है। राग गउड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी सुखमनी साहिब में 'रहाउ' की पंक्ति है:

सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु ॥
भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ (पन्ना २६२)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के उत्तरार्द्ध में राग तिलंग से जैजावंती तक १८ रागों में बाणी है। इन रागों में रागु रामकली सबसे महत्त्वपूर्ण है। राग रामकली में श्री गुरु नानक देव जी की दखणी ओअंकार, सिध गोसटि और श्री गुरु अमरदास जी की बाणी अनंदु साहिब सम्मिलित हैं। अनंदु साहिब बाणी के आरंभ में श्री गुरु अमरदास जी सतिगुरु के मिलन के आनंद का वर्णन करते हैं:

सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ (पन्ना ९१७)

श्री गुरु अमरदास जी ने राग रामकली की वार के श्लोक में इसमें इस राग के केन्द्रीय भाव की व्याख्या १० पंक्तियों में की है जिनमें दो हैं:

रामकली रामु मनि वसिआ ता बनिआ सीगारु ॥
गुर कै सबदि कमलु बिगसिआ ता सउपिआ भगति भंडारु ॥ (पन्ना ९५०)

भाई वीर सिंघ जी ने 'रामकली' का अर्थ प्रसन्न करने वाली बुद्धि किया है। आनंदमयी बुद्धि से प्रभु मन में निवास करते हैं, तब जीवात्मा (गुरमुख) का शृंगार होता है। राग रामकली के गायन का समय प्रात: काल माना जाता है।

राग रामकली के शबदों और अष्टपदियों का अध्ययन एक साथ किया जा सकता है। इस राग में श्री गुरु नानक देव जी के ११ शबद और ९ अष्टपदियां हैं। प्रथम तीन शबदों में श्री गुरु नानक देव जी ने अपने मत को स्पष्ट किया है। वे केवल प्रभु के एक नाम को पहचानते हैं :

अब ही कब ही किछु न जाना तेरा एको नामु पछाना ॥ (पन्ना ८७६)

संशय और तृष्णा प्रभु-मिलन में बाधक हैं। संसार में आस्तिक रहित होने से प्रभु-मिलन होता है :

जब आसा अंदेसा तब ही किउ करि एकु कहै ॥
आसा भीतरि रहै निरासा तउ नानक एकु मिलै ॥ (पन्ना ८७७)

शबद चार में योगी के वास्तविक स्वरूप का वर्णन है। मेरी झोली में प्रभु-नाम की भिक्षा तभी पड़ेगी जब वह भिक्षा के योग्य पात्र बनेगी। उसके लिए हृदय में गुरु-शिक्षा का नाद होना चाहिए तथा सुरति शबद में लीन होनी चाहिए:

सुरति सबदु साखी मेरी सिंङी बाजै लोकु सुणे ॥
पतु झोली मंगण कै ताई भीखिआ नामु पड़े ॥ (पन्ना ८७७)

आध्यात्मिक योगी के स्वरूप का वर्णन अंतिम अष्टपदी में भी किया गया है। माया से मोहित मन शबद-विचार से ही बंधन से छूटता

**सी-१२७,गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद-२११०१०६*

है। शरण में आये हुए को प्रभु क्षमा कर देता है और अपने में लीन कर लेता है :

एहु मनु माइआ मोहिआ अउधू निकसै सबदि वीचारी ॥
आपे बखसे मेलि मिलाए नानक सरणि तुमारी ॥
(पन्ना ९०८)

आंतरिक पवित्रता के लिए शरीर की मिट्टी का शोधन सत्कार्यों से करना चाहिए। सत्कार्य इस लोक और परलोक दोनों में साथ देंगे। शोधन के बाद हृदय से तृष्णा की अग्नि को शांत करके आत्म-ज्ञान का द्वीप जलाना चाहिए। इस प्रकार हमारी सुरति प्रभु-चेतना में लीन हो जायेगी और शरीर नाव का रूप हो जायेगा। आत्मिक प्रकाश से दृष्टि दिव्य हो जायेगी :

सुरती सुरति रलाईऐ एतु ॥
तनु करि तुलहा लंघहि जेतु ॥
अंतरि भाहि तिसै तू रखु ॥
अहिनिसि दीवा बलै अथकु ॥
ऐसा दीवा नीरि तराइ ॥
जितु दीवै सभ सोझी पाइ ॥
हछी मिटी सोझी होइ ॥
ता का कीआ मानै सोइ ॥
करणी ते करि चकहु ढालि ॥
ऐथै ओथै निबही नालि ॥ (पन्ना ८७८)

अष्टपदी क्रमांक ५ में उक्त शबद के विचार को स्पष्ट किया गया है। देह का शोधन हठ या निग्रह से नहीं होगा। मन के भीतर संकल्प-विकल्प चूहे की भांति शोर मचाने वाले हैं। उनका निरसन आवश्यक है। प्रभु-कृपा से हरि-भजन की सच्ची सेवा से हरि-नाम प्राप्त होगा:

हठु निग्रहु करि काइआ छीजै ॥
वरतु तपनु करि मनु नही भीजै ॥
राम नाम सरि अवरु न पूजै ॥२॥ . . .
ऊंदर दूंदर पासि धरीजै ॥
धुर की सेवा रामु रवीजै ॥
नानक नामु मिलै किरपा प्रभ कीजै ॥
(पन्ना ९०५)

राग रामकली में श्री गुरु अमरदास जी का एक शबद और पांच अष्टपदियां हैं। शबद में चार युगों—सतयुग, द्वापर, त्रेता और कलयुग में प्रभु-प्राप्ति के साधनों का वर्णन है। कलियुग में प्रभु-नाम-स्मरण ही एक मात्र आधार है। अष्टपदी में हरि-नाम की तलाश शरीर रूपी नगर के अंदर किये जाने का उपदेश है। शरीर की तुलना तराजू की डंडी से की गई है। परमात्मा का भय और भक्ति-भाव इस तराजू के दो पलड़े हैं। गुरु के उपदेश का आश्रय लेने से तृष्णा खण्डित होगी और हृदय-तन्त्री बज उठेगी :

भउ भाउ दुइ पत लाइ जोगी इहु सरीरु करि डंडी ॥
गुरमुखि होवहि ता तंती वाजै इन बिधि त्रिसना खंडी ॥ (पन्ना ९०८)

राग रामकली में पद लालित्य और मिठास से पूर्ण हरि-महिमा में उच्चारित श्री गुरु रामदास जी के छ: शबद हैं :

राम मो कउ हरि जन मेलि मनि भावै ॥
अमिउ अमिउ हरि रसु है मीठा मिलि संत जना मुखि पावै ॥ (पन्ना ८८१)

राग रामकली में श्री गुरु अरजन देव जी प्रथम शबद में शरीर को कच्ची मिट्टी का बर्तन और अवगुणों की खान बताते हैं। हमारा उद्धार प्रभु-कृपा पर निर्भर है, हमारे गुण-अवगुण पर नहीं। फिर हम कर्म में स्वतन्त्र भी नहीं हैं। जैसा प्रभु ने लिख दिया है हम वैसा ही आचरण करते हैं। प्रभु कच्चे बर्तनों को बनाकर अपने अनुग्रह से सहज रूप से सजाता है:

काचे भाडे साजि निवाजे अंतरि जोति समाई ॥
जैसा लिखतु लिखिआ धुरि करतै हम तैसी किरति

कमाई ॥ *(पन्ना ८८२)*

शरीर की रचना मिट्टी, अग्नि और पवन से मिलकर होती है। मृत्यु के समय यह तीनों तत्त्व प्रकृति से सजातीय तत्त्वों में मिल जाते हैं। फिर नाश किसका होता है? जीव का वास्तविक रूप अविनाशी है। आना-जाना प्रभु के हुक्म से होता है :

इहु तउ रचनु रचिआ करतारि ॥
आवत जावत हुकमि अपारि ॥
नह को मूआ न मरणै जोगु ॥
नह बिनसै अबिनासी होगु ॥ *(पन्ना ८८५)*

श्री गुरु अरजन देव जी ने प्रभु के स्वरूप-वर्णन में दो शबदों में इस्लाम और भारतीय परम्परा के शाब्दिक विवाद के भ्रम को दूर करने का प्रयास किया है :

कहु नानक गुरि खोए भरम ॥
एको अलहु पारब्रहम ॥ *(पन्ना ८९७)*

निर्गुण प्रभु-राम घट-घट में रमण करने वाला है। उसकी लीला अलख है। वही कृपालु (रहीम) और क्षमा करने वाला है। वह नारायण नर-हरि है :

कारन करन करीम ॥
सरब प्रतिपाल रहीम ॥ . . .
नाराइण नरहर दइआल ॥
रमत राम घट घट आधार ॥
बासुदेव बसत सभ ठाइ ॥
लीला किछु लखी न जाइ ॥ *(पन्ना ८९६-९७)*

उक्त शबद की प्रथम पंक्ति को किंचित बदल कर दूसरे शबद में प्रयोग किया गया है:

कारण करण करीम ॥
किरपा धारि रहीम ॥ *(पन्ना ८८५)*

उसी एक प्रभु को कोई राम कहता है कोई खुदा। जो प्रभु के हुक्म को पहचान लेता है वही उसका भेद समझता है :

कहु नानक जिनि हुकमु पछाता ॥
प्रभ साहिब का तिनि भेदु जाता ॥(पन्ना ८८५)

उस एक प्रभु की उपासना की विधि नाम-साधना या सरस कीर्तन है। शुभ गुणों को आधार बनाकर जीवन को राग के सात स्वरों में ढाला जाता है। सतिसंगत का सहारा लेना चाहिए, क्योंकि वहां एक प्रभु का कीर्तन होता है:

साधसंगति की जावउ टेक ॥
कहु नानक तिसु कीरतनु एक ॥ (पन्ना ८८५)

श्री गुरु अरजन देव जी ने अष्टपदियों में साध संगत की टेक को हरि की शरण के रूप में ग्रहण किया है :

मोहि दीन हरि हरि ओट लीती ॥ (पन्ना ९१२)

किसी का जीवन योग, तप, पूजा में व्यतीत होता है, कोई रोग, शोक, भ्रमों में फंसा है, किसी का जीवन योग, प्राणायाम को समर्पित है। संत का समय हरि-कीर्तन में व्यतीत होता है :

काहू बिहावै जोग तप पूजा ॥
काहू रोग सोग भरमीजा ॥
काहू पवन धार जात बिहाए ॥
संत बिहावै कीरतनु गाए ॥ *(पन्ना ९१४)*

हरि-नाम को आधार बनाना, हरि-नाम का ध्यान करना, हरि-कीर्तन करना, हरि-यश गायन करना और हरि-रस-पान करना संत की साधना के रूप हैं। इस साधना में अहंकार-त्याग आवश्यक है। कोई भी व्यक्ति न स्वत: मूर्ख है, न स्वत: बुद्धिमान, संत स्वभाव का प्रेरक प्रभु है। जिसे प्रभु स्वयं नाम दान करता है वही इस ओर अग्रसर होता है। उस प्रभु पर बलिहार जाना चाहिए :

जितु को लाइआ तित ही लगाना ॥
ना को मूड़ु नही को सिआना ॥
करि किरपा जिसु देवै नाउ ॥
नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥ (पन्ना ९१४)

शबदों के अंत में श्री गुरु तेग बहादर जी के तीन तिपदे दिये गये हैं। प्रथम शबद में हरि

की ओट लेने का मन को निर्देश दिया गया है। दूसरे शबद में संतों की युक्ति से यम का त्रास मिटाने का संदेश है। तीसरे शबद में हरि-सुमिरन की चिंतामणि अपनाने का आग्रह है जो अंत समय में सहायक होती है।

राग रामकली में श्री गुरु अरजन देव जी के छंदों को विशेष बाणियों के मध्य रखा गया है तथा चार छंद अनंदु और बाबा सुंदर जी की बाणी 'सदु' के बाद दिये गये हैं। छंदों के क्रम का दूसरा भाग 'रुती' शीर्षक के अन्तर्गत है। इस बाणी में छः ऋतुओं के छः पद हैं। आरंभ में उद्‌बोधन और अंत के रूप में एक-एक पद है। छंतु (छंद) की प्रत्येक इकाई से पहले एक श्लोक है, फिर छंद का पद है।

राग रामकली में तीन विशेष बाणियां— अनंदु साहिब, दखणी ओअंकार तथा सिध गोसटि हैं। अनंदु साहिब बाणी की ४० पउड़ियों में गुरमति दर्शन का सार समाया हुआ है। प्रचलित परंपरा के अनुसार इसका सृजन श्री गुरु अमरदास जी ने अपने पौत्र यानी पुत्र बाबा मोहरी के पुत्र के जन्म के समय किया। पौत्र का नाम अनंद रखा गया। विषय का आरंभ सतिगुरु के मिलन से होता है; फिर मिलन के मार्ग की व्याख्या है।

कर्मकाण्ड करने से कभी सहज की आनंद अवस्था प्राप्त नहीं होती। सहज के बिना संशय का नाश नहीं होता। जीव संशय के कारण मलीन है, इसे किस प्रकार निर्मल किया जाए? मन को गुरु-शबद जल से धोवो और प्रभु के नाम में ध्यान लगाएं तब सहज की प्राप्ति होगी:

करमी सहजु न ऊपजै विणु सहजै सहसा न जाइ ॥
नह जाइ सहसा कितै संजमि रहे करम कमाए ॥
सहसै जीउ मलीणु है कितु संजमि धोता जाए ॥
मनु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइ ॥
कहै नानकु गुर परसादी सहजु उपजै इहु सहसा इव जाइ ॥८॥ (पन्ना ९१९)

दखणी ओअंकार बाणी का उच्चारण श्री गुरु नानक देव जी ने दक्षिण में नरबदा नदी के किनारे ओअंकार नाम के तीर्थ स्थान पर किया। यह बाणी वर्णमाला की पद्धति को अपना कर ५४ पउड़ी छंदों में रचित है। ओअंकार शब्द 'अव्' धातु से बना है जिसका अर्थ है रक्षा करना। ओअंकार बाणी में रक्षक परमेश्वर के स्वरूप का वर्णन है। इस बाणी के दार्शनिक पक्ष के मर्म को समझाने का यत्न भाई वीर सिंघ जी ने अपने टीका में किया है।

संसार-बंधन से छुटकारा पाने में संयम, गुरु-उपदेश तथा प्रभु-कृपा सहायक होती है। इसको एक रूपक के माध्यम से स्पष्ट किया गया है—शरीर एक पेड़ है, मन इसमें विहार करने वाला पक्षी है। पांच ज्ञानेन्द्रियां मन के अलावा अन्य पक्षी हैं। ये पांचों परामत्मा से एक होकर तत्व-ज्ञान का दाना चुगते हैं और इन्हें कोई फंदा नहीं डालता। अगर वे आकर्षण में पड़कर अधिक दानों का लोभ करें और जल्दी-जल्दी उड़ें तो फंदे में फंसते हैं और अवगुण के कारण मुसीबत आती है। सच्चे परमात्मा के बिना वे फंदे से नहीं छूट पाते। हरि-गुण रूपी मणि परमात्मा की कृपा से ही प्राप्त होती है। वह स्वामी जिसे चाहे बंधन से मुक्त कर देता है। गुरु की कृपा से प्रभु का प्रसाद मिलता है। प्रभु की इच्छा सर्वोपरि है चाहे जिस पर कृपा करे:

तरवरु काइआ पंखि मनु तरवरि पंखी पंच ॥
ततु चुगहि मिलि एकसे तिन कउ फास न रंच ॥
उडहि त बेगुल बेगुले ताकहि चोग घणी ॥
पंख तुटे फाही पड़ी अवगुणि भीड़ बणी ॥

बिनु साचे किउ छूटीऐ हरि गुण करमि मणी ॥
आपि छडाए छूटीऐ वडा आपि धणी ॥
गुर परसादी छूटीऐ किरपा आपि करेइ ॥
अपणै हाथि वडाईआ जै भावै तै देइ ॥३३॥
(पन्ना ९३४)

सिद्धों से सत्य की खोज के लिए किये गये संवाद के रूप में की गई 'सिध गोसटि' बाणी में धर्म के व्यवहारिक पक्ष की चर्चा है। यह गोष्टी श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी यात्राओं के बाद अचल बटाला में होने वाले समारोह के समय १४ वदी माह फाल्गुन में की। यह बाणी ७३ छंदों में है। चर्चा का उद्देश्य रहाउ से स्पष्ट है :

किआ भवीऐ सचि सूचा होइ ॥
साच सबद बिनु मुकति न कोइ ॥ (पन्ना ९३८)

क्या योगियों की तरह भ्रमण करते रहने से निर्मलता और सत्य प्राप्त हो सकता है? सच्चे शबद की प्राप्ति के बिना किसी की मुक्ति संभव नहीं है।

श्री गुरु नानक देव जी चरपट सिद्ध के प्रश्न के उत्तर में गोसटि के आरंभ में ही विनम्रता से साधना के सहज मार्ग की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं :

जैसे जल में कमल निर्लिप्त रहता है और जैसे मुर्गाबी नदी के ऊपर तैरती है वैसे ही संसार में निर्लेप रहना चाहिए। आत्मा को शबद से जोड़कर प्रभु-नाम-सुमिरन से भव-सागर पार कर जाना चाहिए :

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे ॥
सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ॥ (पन्ना ९३८)

राग रामकली में सिध गोसटि के बाद श्री गुरु अमरदास जी की वार है, जिसमें २१ पउड़ी छंद हैं, जिनके साथ श्री गुरु नानक देव जी के १९ श्लोक संलग्न हैं। श्री गुरु अंगद देव जी के ७ श्लोक हैं तथा श्री गुरु अमरदास जी के २४ श्लोक हैं। श्री गुरु नानक देव जी ने राग रामकली की अष्टपदी क्रमांक १ में कलियुग के सामाजिक पतन का वर्णन किया है। उसी का वर्णन वार में पउड़ी ११ के साथ श्लोक में है। एक अन्य श्लोक में पौराणिक आख्यानों के सन्दर्भ में संसार के दुखमयी होने का चित्र है। इस दुख से छुटकारे का एक ही उपाय है प्रभु के नाम को मान कर आचरण करना।

नानक दुखीआ सभु संसारु ॥
मंने नाउ सोई जिणि जाइ ॥
अउरी करम न लेखै लाइ ॥ (पन्ना ९५४)

श्री गुरु अमरदास जी की इस वार की प्रत्येक पउड़ी में चार पंक्तियों का तुकांत भिन्न है। केन्द्रीय भाव की अंतिम पंक्ति में सभी पउड़ियों का तुकांत एक-सा है।

आत्म-ज्ञान के लिए प्रभु की सृष्टि-रचना को समझना आवश्यक है। यह शरीर नौं दरवाजों का दुर्ग है, दशम द्वार गुप्त है। यह कठिन कपाट गुरु के शबदों द्वारा ही खोला जा सकता है। गुरु के शबद से अनहद ध्वनि सुनाई देती है, जिससे अन्तर्मन में प्रकाश होता है और भक्ति-भाव या नाम-दान मिलता है :

नउ दरवाजे काइआ कोटु है दसवै गुपतु रखीजै ॥
बजर कपाट न खुलनी गुर सबदि खुलीजै ॥
अनहद वाजे धुनि वजदे गुर सबदि सुणीजै ॥
तितु घट अंतरि चानणा करि भगति मिलीजै ॥
सभ महि एकु वरतदा जिनि आपे रचन रचाई ॥
(पन्ना ९५४)

श्री गुरु अरजन देव जी की वार में २२ पउड़ियां हैं। संलग्न श्लोक भी इन्हीं के द्वारा रचित हैं। इस वार के एक श्लोक का उच्चारण वधू के द्वारा वर का पल्ला पकड़ते समय किया जाता है। यह श्लोक जीवात्मा द्वारा प्रभु-शरण

लेने विषयक है :

उसतति निंदा नानक जी मै हभ वञाई छोड़िआ हभु किझु तिआगी ॥
हभे साक कुड़ावे डिठे तउ पलै तैडे लागी ॥
(पन्ना ९६३)

भाई सत्ता और भाई बलवंड की वार में आठ पउड़ियां हैं, जिनमें पांच में गुरु-परम्परा का परिचय दिया गया है तथा श्री गुरु अंगद देव जी की प्रशस्ति है। अगली तीन पउड़ियों में श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी तथा श्री गुरु अरजन देव जी की प्रशस्ति है।

विशिष्ट बाणियों में अनंदु साहिब बाणी के बाद बाबा सुंदर जी द्वारा उच्चारित बाणी 'सदु' है। बाबा सुंदर जी श्री गुरु अमरदास जी के पड़पौत्र थे। श्री गुरु अमरदास जी ने यह उपदेश दिया था कि मृत्यु के समय कीर्तन किया जाये। उनके उपदेश को सदु बुलावा के रूप में बाबा सुंदर जी ने अंकित किया। श्री गुरु अमरदास जी का उपदेश मानते हुए उनके ज्योति जोति समाने के बाद सदु का पाठ किया गया।

भाई सत्ता-बलवंड की वार के बाद राग रामकली में भक्त साहिबान की बाणी अंकित है। इसमें भक्त कबीर जी के १२, भक्त नामदेव जी के ४, भक्त रविदास जी का एक तथा भक्त बेणी जी का एक शबद संकलित है। भक्त कबीर जी के पहले दो शबदों में भक्ति-रस का वर्णन है। दूसरे शबद में हठ योग को नकारा गया है : *"अउधू मेरा मनु मतवारा ॥"* ज्ञान का गुड़ हो, ध्यान का महुआ हो और मन की भावना की भट्टी हो, सुषुणा की नलकी सहज में समाई हो, उससे हरि-रस कोई भाग्यशाली ही पीता है। इस उल्लासमयी हरि-रस को पीकर मेरे लिए तीनों लोक प्रकाशमय हो गये हैं। भक्त कबीर जी के आठवें शबद में मानव-जीवन के प्रयोजन की ओर ध्यान दिलाया गया है :

कवन काज सिरजे जग भीतरि जनमि कवन फलु पाइआ ॥ *(पन्ना ९७०)*

श्री गुरु नानक देव जी ने इसी विषय की सशक्त अभिव्यक्ति राग गउड़ी में की है :

कत की माई बापु कत केरा किदू थावहु हम आए ॥
अगनि बिंब जल भीतरि निपजे काहे कंमि उपाए ॥ *(पन्ना १५६)*

भक्त कबीर जी के शबदों में एक शबद अष्टपदी के रूप में है, जिसमें प्रभु-सुमिरन के महत्त्व को दर्शाया गया है :

ऐसा सिमरनु करि मन माहि ॥
बिनु सिमरन मुकति कत नाहि ॥ (पन्ना ९७१)

प्रभु-सुमिरन के सम्बंध में भक्त नामदेव जी का शबद लोक-जीवन के मनोहर दृष्टांतों से पूर्ण है। सुमिरन की एकाग्रता सहज रूप से एक लय के रूप में है। अन्य कार्यों को करते हुए भी प्रभु चित्तवृत्ति के केन्द्र में रहता है। बच्चे का चित्त बातचीत करते समय पतंग में, राज कुमारी का हास्य विनोद करते समय जल की उठाई गागर में, पांच कोस की दूरी पर चरती गाय का बछड़े में, अंदर-बाहर काम करती माता का मन पलने पर सोए बच्चे में सहज रूप से समाया रहता है।

प्रभु के मिलन में सहज या अनुभव का महत्त्व है। अनुभव के बिना पढ़ने, मानने, करने और मात्र नाम श्रवण करने से प्रभु का दर्शन नहीं होता, बल्कि भक्त रविदास जी के अनुसार विकारों त्याग कर, अहंकार रहित जिज्ञासु के लिए को प्रभु के प्रति जीवन, प्राण एवं धन समर्पण ही मिलन का साधन है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सिध गोसटि में योगियों से योग-चर्चा है, जिसमें हठयोग का

(शेष पृष्ठ ७० पर)

गुरबाणी चिंतनधारा-२९

जापु साहिब की विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

जल थल अमंड ॥ दिस विस अभंड ॥
जल थल महंत ॥ दिस विस बिअंत ॥१६५॥

हे वाहिगुरु! तू जल में, थल में, भाव हर जगह शोभा वाला है। तुझे किसी बाहरी सजावट की आवश्यकता नहीं। तू कण-कण में मौजूद है। 'अभंड' अर्थात् तू स्त्री द्वारा पैदा नहीं हुआ। जल-थल सर्वत्र तेरी मौजूदगी है तथा तू सबसे बड़ा है, सब जगह, हर कोने में तेरा निवास है। अत: जर्रे-जर्रे में तू ही तू समाया हुआ है।

कलगीधर पातशाह की तरह गुरु नानक पातशाह ने भी ईश्वर को 'अभंड' बयान किया है। 'आसा की वार' में आप जी का पावन फरमान है :

नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥
(पन्ना ४७३)

अर्थात् सब जीवों का जन्म मादा द्वारा ही होता है, केवल एक अकाल पुरख ही है जिसे कोई स्त्री जन्म नहीं देती।

अनभव अनास ॥ ध्रित धर ध्रुरास ॥
आजान बाहु ॥ एकै सदाहु ॥१६६॥

हे वाहिगुरु! तू ज्ञान स्वरूप है। तू नाश रहित है। तू पृथ्वी का मालिक है। तू धैर्यवानों में सर्वोत्तम है। इस सांसारिक रचना के समस्त साधन तेरे ही अधीन हैं। तू प्रारंभ से ही एक है। वस्तुत: सारी रचना उसी की है। गुरबाणी में अन्यत्र भी प्रमाण है :

इह जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥ (पन्ना ४६३)

अर्थात् यह संसार सदैव स्थिर प्रभु के रहने का स्थान है और इसमें मालिक प्रभु का निवास है।

ओअंकार आदि ॥ कथनी अनादि ॥
खल खंड खिआल ॥ गुरबर अकाल ॥१६७॥

हे वाहिगुरु! तू प्रत्येक स्थान पर एकरस व्यापक है। तू ही सारे जगत का मूल है। तेरे आदि स्वरूप को कोई बयान नहीं कर सकता। हे प्रभु! तू एक पलक झपकने से भी कम समय में अर्थात् एक ही विचार द्वारा समस्त दुष्टों का नाश कर सकता है। तू सबसे बलशाली और मौत से रहित है।

प्रस्तुत बंद में 'कथनी अनादि' से भाव है कि उस परमेश्वर के मूल को बातों द्वारा नहीं जाना जा सकता, क्योंकि वाक-चातुर्य अर्थात् चालाकियों एवं सियानपों से तो वह प्रभु कोसों दूर है, यथा जपु जी साहिब की बाणी में फरमान है:

सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥ (पन्ना १)

वस्तुत: जीवात्मा और परमात्मा के मध्य ये चतुराइयां ही सबसे बड़ी बाधा हैं। वह प्रभु तो भोले-भाव से मिलता है।

घर घरि प्रनाम ॥ चित चरन नाम ॥
अनछिज्ज गात ॥ आजिज न बात ॥१६८॥

हे वाहिगुरु! समस्त प्राणी घर-घर में तुझे नमस्कार करते हैं। सब दिलों में तेरे चरण-कमल और तेरा पावन नाम बस रहा है। तेरा

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)-३०२००४ मो: ०१४१-२६५०३७०*

स्वरूप कभी पुराना नहीं होता। किसी बात को पूरा करने हेतु तुझे किसी की मोहताजी नहीं, अत: किसी बात (कार्य) को पूरा करने हेतु तुझे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं।

प्रस्तुत बंद में गुरु पातशाह ने उस निराकार के साकार रूप का वर्णन करते हुए स्पष्ट किया है कि हृदय में ध्यान धरने के लिए तेरा नाम ही तेरे चरण हैं। तेरा नूरानी स्वरूप क्षीण नहीं होता। हे प्रभु! तू हर दशा, हर दिशा से चढ़ती कला वाला है।

अनझंझ गात ॥ अनरंज बात ॥
अनटुट भंडार ॥ अनठट अपार ॥१६९॥

हे वाहिगुरु! तेरी हस्ती झगड़े-झमेलों से रहित है। तेरी किसी बात में से क्रोध नहीं झलकता। अर्थात् तेरी प्रत्येक बात रंज (गुस्से) से रहित है। तेरे खजाने सदैव भरपूर रहते हैं। अर्थात् हे प्रभु! तेरे भंडार हमेशा भरे रहते हैं। तुझे कोई भी मूर्त रूप में स्थापित नहीं कर सकता। तू बेअंत है।

उपरोक्त बंद में गुरदेव ने उस परमेश्वर के क्षमाशील एवं अत्यंत मधुर स्वरूप का जिक्र किया है। गुरबाणी में अन्यत्र भी इसी आशय को स्पष्ट किया गया है, यथा :

इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी ॥
हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ॥
(पन्ना १३८४)

यही नहीं गुरु नानक पातशाह ने तो उस परमेश्वर को 'मिठ बोलड़ा' कहा है और मीठा बोलना तथा विनम्रता धारण करना सबसे बड़ा गुण मानते हुए इसे ही समस्त गुणों का सार-तत्व माना है।

आडीठ धरम ॥ अति ढीठ करम ॥
अणब्रण अनंत ॥ दाता महंत ॥१७०॥

हे परमेश्वर! तेरा कानून अदृश्य ढंग से कार्य कर रहा है। तू निर्भय स्वरूप है, अत: तू प्रत्येक कार्य निडरता से करता है। तुझे कोई घायल नहीं कर सकता। तू बेअंत है। तू दातें बख्शने वाला सर्वोत्तम दातार पिता है।

कलगीधर पातशाह के मुखारबिंद से उच्चरित इस बंद का अर्थ प्रो साहिब सिंघ जी ने बहुत सुंदर ढंग से किया है। हे वाहिगुरु! तेरे जैसा फर्ज निभाने वाला कहीं नज़र नहीं आता। तेरे समस्त कार्य बड़े साहसपूर्ण हैं भाव तू जगत-मर्यादा को चलाने का फर्ज इतनी एकाग्रता से पूर्ण कर रहा है कि इसकी मिसाल नहीं मिलती और तू यह सारा कार्य करता भी उत्साह से है, किसी बंधन में नहीं। हे प्रभु! तू बेअंत है, सबको दातें बख्शने वाला है तथा सबसे बड़ा है।

हरिबोलमना छंद ॥ त्व प्रसादि ॥
करुणालय हैं ॥ अरि घालय हैं ॥
खल खंडन हैं ॥ महि मंडन हैं ॥१७१॥

तेरी कृपा से हरिबोलमना छंद में उच्चरित प्रस्तुत बंद में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का फ़रमान है कि हे प्रभु! तू संसार के प्राणियों पर तरस खाने वाला है। तू दया का घर है। तू दुष्टों का संहार करने वाला है तथा धरती को सुसज्जित करने वाला है। अर्थात् तू प्राणियों को सजाने वाला है, वस्तुत: सारे जगत की शोभा तुमसे ही है। गुरबाणी प्रमाण है :

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥
(पन्ना ४६३)

अर्थात् सारी रचना उसी परमेश्वर की है और उसी में ही समा जाती है। प्रकृति के कण-कण में वही रचा-बसा है और वही सर्वत्र सुशोभित हो रहा है।

जगतेस्वर हैं ॥ परमेस्वर हैं ॥
कलि कारण हैं ॥ सरब उबारण हैं ॥१७२॥

हे वाहिगुरु! तू इस जगत का मालिक है। तू परमेश्वर अर्थात् सर्वोच्च स्वामी है। तू सब युद्धों का प्रारंभ करने वाला है तथा तू ही उन सबसे बचाने वाला है।

प्रस्तुत बंद में विचारणीय पहलू है कि वह परमेश्वर कलह-क्लेश का कारण कैसे हो सकता है? उत्तर भी स्पष्ट है कि उस मालिक के हुक्म में ही तो सब कुछ हो रहा है, जैसा कि गुरबाणी का पावन फरमान है :

कारणु करतै जो कीआ सोई है करणा ॥
(पन्ना ११०२)

उसी को खुशी-खुशी स्वीकार करते हुए अपने कर्त्ता भाव को त्यागना है, क्योंकि यही जीव का अहं कलह का कारण बनता है, लेकिन जो कुछ भी होता है, उससे उसी नियंता अर्थात् सब पर हकूमत करने वाले परमेश्वर का ही रिमोट भाव उसकी कला काम कर रही होती है। अत: वही युद्धों आदि का मूल कारण है और वही उनसे बचाने वाला भी है। गुरु कलगीधर पातशाह समस्त क्रिया-कलापों में, कारण, कर्म, फल में सर्वत्र उस परमेश्वर का ही दीदार करते हैं तथा उसी का गुणगान करते हैं।

ध्रित के ध्रण हैं ॥ जग के क्रण हैं ॥
मन मानिय हैं ॥ जग जानिय हैं ॥१७३॥

हे वाहिगुरु! तू धरती का सहारा है। तू ही इस संसार को बनाने वाला है। तू ही सबके हृदयों में मनन करने योग्य है अर्थात् सर्वत्र तू ही पूजनीय हस्ती है। जगत में तू ही सबके लिए जानने योग्य है। अत: सभी तुझे ही नमन करते हैं और तुझे ही जानने का प्रयास करते हैं।

यह बात अलग है कि तुझे मुकम्मल तौर से कोई नहीं जान पाया और न ही तेरा पूर्णतया अंत पाना किसी जीव का मकसद है। बस, तू जितना जिसे समझने की तथा कहने की सामर्थ्य बख्शता है, उतना ही समझ कर कहने योग्य हो सकता है, यथा गुरबाणी प्रमाण है :

आपु आपनी बुधि है जेती ॥
बरनत भिंन भिंन तुहि तेती ॥
तुमरा लखा न जाइ पसारा ॥
किह बिधि सजा प्रथम संसारा ॥ (चौपाई पा: १०)
सरबं भर हैं ॥ सरबं कर हैं ॥
सरब पासिय हैं ॥ सरब नासिय हैं ॥१७४॥

हे वाहिगुरु! तू सबका पालन-पोषण करने वाला है तथा तू ही सबको पैदा करने वाला है। तू सबके निकट बस रहा है। तू ही सबका विनाश करने वाला है।

उपरोक्त बंद में कलगीधर पातशाह ने उस ईश्वर को सबके निकट बसता बयान किया है। वह परमेश्वर व्यापक रूप में प्रत्येक जीव में हर समय और हर जगह समाया हुआ है, जैसा कि श्री गुरु रामदास जी का पावन फरमान है :

तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥ (पन्ना ४४८)

यहां विचारणीय तथ्य है कि वह परमेश्वर हर घट में, हर स्थान पर बस रहा है, लेकिन फिर भी जीव को दिखाई क्यों नहीं देता! वस्तुत: जिस पर उस अकाल पुरख की रहमत होती है उसे ही गुरु-कृपा से सर्वत्र बसता वह परमेश्वर दिखाई देता है, जैसा कि पंचम पातशाह जी की पावन बाणी इसी भाव को दृढ़ करवाती है :

गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥
हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥ (पन्ना २९३)
करुणाकर हैं ॥ बिस्वंभर हैं ॥
सरबेस्वर हैं ॥ जगतेस्वर हैं ॥१७५॥

हे वाहिगुरु! तू दया का सागर है, विश्व

के समस्त जीवों का पालनकर्त्ता है, सबका स्वामी है, वह कुल जहान का मालिक है।

वस्तुत: वह प्रभु रहमतों की खान है। जब वह तरस खाकर किसी को निवाजता है तब उसकी बख्शिशों का अंत नहीं पाया जा सकता, जैसा कि पंचम पातशाह का उस अकाल पुरख के चरणों में कोटि-कोटि नमन है। नम्रता के पुंज श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा जब श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पादना का पुनीत कार्य सम्पन्न हुआ तब उस ईश्वर का शुक्राना करते हुए गुरु पातशाह की बाणी है :

तेरा कीता जातो नाही मैन जोग की तोई ॥
मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥
तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥
नानक नामु मिलै ता जीवां तनु मनु थीवै हरिआ ॥ *(पन्ना १४२९)*

जो इस तथ्य को गुरु-कृपा से समझ लेता है कि मेरी समर्थता कुछ भी नहीं, उस परम-पिता ने तरस खाकर मुझे इस योग्य कर दिया है, उसी का आध्यात्मिक जीवन बुलंदियों को छूता है, वही इस जगत में विचरण करता हुआ सदैव आनंद में रहता है। इसे ही मुक्तावस्था माना गया है। वाहिगुरु ही रहमत करें, विनम्रता का कोई कण हमारे हृदयों में भी बसे, ताकि यह अमोलक जीवन सार्थक हो सके।

पतितपन से वापसी

(पृष्ठ ५८ का शेष)

अनजान व्यक्ति- *(सरदार साहिब को बाहर जाने से रोकता है और उनके गले लग कर फूट-फूट कर रोने लगता है)* मुझे माफ करें सरदार साहिब! मैं आज आपके सुंदर तथा पवित्र सिखी-स्वरूप की कसम खाकर कहता हूं कि कल ही श्री अकाल तख्त साहिब पर पहुंच कर अपनी सारी भूलों को बख्शवाऊंगा तथा अमृत छक कर पुन: साबत सिखी-स्वरूप में लौटूंगा। आप मेरा विश्वास करें। इसके लिए मैं वचन देता हूं, बिलकुल पक्का वचन। नहीं चाहिए ऐसा खोटा धन व सस्ती शोहरत, जो मुझे श्री गुरु ग्रंथ साहिब व गुरु-पंथ से तोड़ कर नशों-विकारों तथा बदकारियों जैसी बुराइयों संग जोड़े। अब मैं ज़िंदगी भर गुरु वाला बन कर ही जीऊंगा तथा मेरा जीना-मरना अब गुरु वाला बना रहकर ही होगा! *(कहता-कहता सरदार साहिब के पैरों पर गिर जाता है)*।

सरदार साहिब- *(पैरों से उठा कर उसे अपने सीने से लगा लेते हैं और गर्ज कर फतह गजाते हैं)* वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतह। पटियाले वाले शमशेर सिंघ! शुक्र है, तेरे अंदर सिखी का अंश अभी तक विद्यमान है, जिसको जगाने की सेवा सतिगुरों ने मुझसे ली। मैं आपके सिखी मार्ग पर चलने के इस संकल्प से बेहद प्रसन्न हूं।

अनजान व्यक्ति- *(बड़ी गर्मजोशी के साथ फतह का जवाब फतह से देता है)* वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतह। सरदार गुरचरण सिंघ जी! मेरे आदरणीय भाई साहिब जी! आपने मुझ भूले को मार्ग दिखाया है। मैं सदैव आपका ऋणी रहूंगा। *(दोनों मित्र खुशी के आंसुओं के साथ एक-दूसरे से गले मिलते हैं)*।

दशमेश पिता के बावन दरबारी कवि-१९

वैरागी प्रवृत्ति वाले कवि : भाई ननुआ जी

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

दशमेश पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के विद्या दरबार के बावन कवि-विद्वानों में एक नाम भाई नानू या भाई ननुआ जी का भी है। कई स्थानों पर आपको ननुआ जी वैरागी कह कर भी संबोधित किया गया है।

भाई ननुआ जी पश्चिमी पंजाब के शहर वजीराबाद के रहने वाले थे। कहते हैं कि आप यहां के एक अमीर घराने के फरजंद थे। आप 'सतमाहे' पैदा हुए थे अर्थात् गर्भ के सातवें महीने में ही आपका जन्म हो गया था, इसलिए आपका शरीर बहुत छोटा था। अत: आपको नानू या ननुआ जी कहा जाने लगा। आपका स्वभाव बड़ा ही त्यागी और वैरागी था, अत: आपके नाम के साथ वैरागी भी जुड़ गया और लोग आपको ननुआ जी वैरागी कहकर पुकारने लगे।

अपनी वैरागी प्रवृत्ति के कारण भाई ननुआ जी ने अमीर घराने से संबंधित होने के बावजूद दरवेश बनना पसंद किया। सिख ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार आप नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी के दरबार में हाजिर हुए और लम्बे समय तक नवम् गुरु जी की सेवा करते रहे। इस हिसाब से भाई ननुआ जी का समय लगभग १६५० से १७१० ई के बीच का बैठता है।

भाई वीर सिंघ कृत 'कलगीधर चमत्कार' में एक प्रसंग दर्ज है कि नवम् पातशाह ने भाई ननुआ जी को अपने एक अन्य प्रेमी सिख लाहौर निवासी 'गदा नारायणी' के पास भेजा। गदा नारायणी जी जन्म से मुस्लिम थे और सूफी रंगत में रंगे थे परन्तु नवम् पातशाह की इन पर विशेष कृपा थी। गुरु-आज्ञा को सिर-माथे धारण करके भाई ननुआ जी लाहौर में गदा नारायणी जी के पास आ गये। गदा नारायणी जी ने भाई ननुआ जी को आते ही कहा, "आ भाई व्यापारिया! . . . हमारे शाह की हुंडी गुमाश्ते के पास लेकर आया है? सतिगुरु मेहर करके अपनी हुंडी आप सकारेंगे . . .।"

भाई ननुआ जी काफी समय तक गदा नारायणी जी के सतसंग में रहे और उनसे उच्च एवं सत् जीवन की दात प्राप्त करके अपने घर वजीराबाद आ रहे।

नवम् पातशाह जी की शहादत के बाद भाई ननुआ जी की श्रद्धा दशमेश पिता के चरणों में समर्पित हो गई। दशमेश पिता ने अपने एक समर्पित सिख भाई कन्हैया जी को दीक्षा लेने के लिए भाई ननुआ जी के पास भेजा था। भाई कन्हैया जी लम्बे समय तक भाई ननुआ जी की सेवा में रहे और प्रेरणाएं तथा आत्मिक-आध्यात्मिक दिशा-निर्देश प्राप्त किये। भाई कन्हैया जी के नाम पर बाद में 'सेवापंथी सम्प्रदाय' का आरंभ हुआ। सेवापंथी सम्प्रदाय के साधुओं में भाई ननुआ जी की रचना बड़े प्रेम और आदर के साथ पढ़ी-सुनी जाती है।

भाई ननुआ जी की रचना छुटपुट छंदों के रूप में मिलती है। आपके रचना-कर्म के विषय में भी एक साखी प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि भाई कन्हैया जी ने आपको रचना रचने के लिए कहा तो आपने उत्तर दिया कि हमें

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना)-१४११०१, मो. ०९४१७२-७६२७१

रचने का हुक्म नहीं है, हुक्म हो तो रचें। भाई कन्हैया जी ने कहा कि यदि मैं आज्ञा ले आऊं तो? . . . आप ने कहा कि 'अच्छा'। भाई कन्हैया जी लाहौर में गदा नारायणी जी के पास आ गये परंतु पूछने का हौंसला ही न पड़ा।

परंतु भाई साहिब के मन में अभी भी भाई ननुआ जी को साहित्य रचने के लिए आग्रह करने का विचार बरकरार रहा। अत: भाई कन्हैया जी के पुन: आग्रह पर भाई ननुआ जी ने गुरु-प्रेम की तरंग में अनेक छंदों की रचना की। इनमें कुछ 'सलोकों' और कुछ 'आसावरियों' के रूप में मिलते हैं। 'सलोक' सधुक्कड़ी भाषा में हैं और 'आसावरियां' ठेठ पंजाबी में रची गई हैं। भाई ननुआ जी की रचना का मुख्य विषय दशमेश पिता के प्रति प्रेम और ज्ञान-चर्चा है। भाई ननुआ जी द्वारा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का महिमा-वर्णन गुरु-घर एवं दशमेश-दरबार के ऐतिहासिक गौरव की सच्ची साखी बयान करता है :

असां साहिब दरस दिखाइआ।
खुली बंदीं डुल्लदे नैणीं, हस्सदा हस्सदा आइआ।
प्यार आपणा भर-भर बुक्कीं, मन-तन साडे पाइआ।
ननुए नूं होर चित्त न काई, धा सिर चरनां 'ते लाइआ।

एक अन्य रचना देखें :

लोइन निपट लालची मेरे।
भुक्खे धावें तिपत न पावें, सदा रहैं गुर मूरत घेरे।
जोड़े हाथ अनाथ नाथ पहि, अपने ठाकुर केरे चेरे।
हेर हेर ननुआ हैराना, गुर मूरत विच हरि जी हेरे।

कहते हैं कि एक बार भाई ननुआ जी की वृत्ति 'जपु जी साहिब' वाले *"घड़ीऐ सबद सची टकसाल"* शबद पर जा टिकी तो आपको एहसास हुआ कि मैंने तो बिना मन की पवित्रता एवं सच्चाई के ही रचना रच दी। तुरंत गदा नारायणी जी से क्षमा-याचना की और स्वयं को रचना रचने लायक न मानते हुए भविष्य में न रचने का अहद किया। गदा नारायणी जी ने भाई ननुआ जी को गले लगाया।

इस प्रकार भाई ननुआ जी ऐसे गुरसिख थे जिन्होंने अपना समस्त जीवन गुरु-आज्ञा एवं गुरसिखी के सिद्धांतों के अनुसार व्यतीत किया।

रागु रामकली

(पृष्ठ ६४ का शेष)

खण्डन किया गया है। राग रामकली के अंत में भक्त बेणी जी की एक अष्टपदी संकलित है। जिस योग-साधना की रूप-रेखा प्रस्तुत की गई है इसमें हठयोग के परिभाषिक शब्दों जैसे इड़ा, पिंगला, सुखमना, दसम दुआर, अनाहद आदि का उपयोग किया गया है। भक्त बेणी जी द्वारा इस साधना, भक्ति और प्रेम का उल्लेख भी किया है :

गुर की साखी राखै चीति ॥
मनु तनु अरपै क्रिसन परीति ॥ (पन्ना ९७४)

निष्कर्ष रूप में गुरु से प्राप्त ज्ञान के द्वारा विकार के दैंत्यों के दलन का वर्णन है। भक्त बेणी जी परमात्मा से केवल नाम की याचना करते हैं :

दलि मलि दैतहु गुरमुखि गिआनु ॥
बेणी जाचै तेरा नामु ॥ (पन्ना ९७४)

इस प्रकार राग रामकली में विशिष्ट बाणियों तथा भावपूर्ण शबदों के द्वारा योग के चिन्तन का विविध काव्य-रूपों में प्रस्फुटन हुआ है।

कौमी नायक जनरल सरदार जगजीत सिंघ

*-स. सुरजीत सिंघ**

भारतीय सेना के गौरवशाली इतिहास में लैफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंघ (अरोड़ा) को सदैव सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित किया जाता हैं क्योंकि वे ऐसे गौरवशाली समय के महानायक हैं जिनमें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की नेतृत्व क्षमता, कूटनीतिक कौशलता, पराक्रम और उदारता के सुनहरे रंग देखे गए हैं। जनरल जगजीत सिंघ का जन्म १३ फरवरी १९१७ को अविभाजित भारत (अब पाकिस्तान) के जेहलम जिले के शहर कालेगुजरां में हुआ। भारतीय सेना की पंजाब रेजीमेंट में वर्ष १९३९ में आप ने सैकण्ड लैफ्टिनेंट का कमीशन प्राप्त किया। द्वितीय विश्व युद्ध के समय रेजीमेन्ट की प्रथम बटालियन की कमान संभालने के उपरांत बर्मा में स. जगजीत सिंघ ने बहादुरी का खूब जौहर दिखाया था।

वर्ष १९४६ में कशमीर सैन्य अभियान में राजौरी जिले के पीर कलेवा क्षेत्र में कुशल नेतृत्व के फलस्वरूप महरू के इनफैन्ट्री स्कूल में डिप्टी कमांडर रहे। जनरल स. जगजीत सिंघ को फरवरी १९४७ में ब्रिगेड की कमान सौंप दी गई और इस प्रकार १९४७-४८ के सैन्य मिशन में नेतृत्व प्रदान किया गया। अपनी प्रभावशीलता, लगन, नेतृत्वक्षमता, पराक्रम, उदारता, कूटनीतिक कौशलता एवं समयबद्धता के लिए विशेष रूप से पहचाने जाने वाले जनरल स. जगजीत सिंघ को कर्नल पद पर पदोन्नत किए जाने से पूर्व कई महत्वपूर्ण सैन्य जिम्मेदारियां सौंपी गई थीं, जिनका आपने विद्वतापूर्वक बाखूबी निर्वाह किया। पूर्वी क्षेत्र में सेना की ३३वीं कोर की कमान संभालने से पूर्व आप सेना मुख्यालय में सैन्य प्रशिक्षण के निर्देशक के पद पर आसीन रहे। वर्ष १९६० में नेशनल डिफैन्स कॉलेज के उपरोक्त जनरल जगजीत सिंघ पूर्वी सेक्टर के बिग्रेडियर जनरल ऑफ कोर हेड क्वार्टर्स पर तैनात किए गए।

फरवरी १९६३ में मेजर जनरल पदोन्नति के पश्चात आपने इनफैन्ट्री डिवीजन की कमान संभाली। जून १९६६ में डिप्टी चीफ आफ आर्मी स्टाफ बनने के साथ ही श्रेष्ठ उपलब्धियों वाले जनरल स. जगजीत सिंघ को लेफ्टिनेंट जनरल की उपाधि से सम्मानित कर दिया गया था। अप्रैल १९६७ तक इसी पद पर बने रहने के उपरान्त आपको कोर हैडक्वार्टर्स के जनरल आफिसर कमाडिंग (जी. ओ. सी.) के रूप में तैनात किया गया। वर्ष १९६९ में पूर्वी कमान के जी. ओ. सी. आफ चीफ की नियुक्ति पाने वाले लेफ्टिनेंट जनरल स. जगजीत सिंघ के सैन्य जीवन की सर्वाधिक बड़ी चुनौती सन् १९७१ में पाकिस्तान के साथ छिड़े युद्ध के रूप में सम्मुख आई।

पाकिस्तान ने ३ दिसंबर १९७१ को भारत के प्रमुख वायु सैनिक अड्डों पर हवाई हमलों के साथ ही खुला युद्ध छेड़ दिया था। अब जनरल स. जगजीत सिंघ ने पाक सेना के खिलाफ सुनियोजित सैन्य अभियान प्रारंभ करते हुए युद्ध-रणनीति के अनुसार थल सेना और वायु सेना की सामूहिक शक्ति का उपयोग कर पाक सेना को पीछे खदेड़ते हुए उनकी घेराबंदी करने हेतु बड़ी संख्या में भारतीय सैनिकों को वायु सेना के विमानों-हेलीकाप्टरों की मदद से पैराशूट द्वारा उतार दिया और साथ ही साथ ढाका सैनिक कूच के लिए हाईवे मार्गों और मुख्य सड़कों के स्थान पर कस्बों और गांवों

**५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राजस्थान)।*

के रास्तों से सशस्त्र सेनाओं को आगे बढ़ाया गया। जनरल स. जगजीत सिंघ की कुशल सैनिक व्यूहरचना के फलस्वरूप ढाका का संबंध चारों तरफ से कट गया और मात्र दो सप्ताह के घमासान में ही पाकिस्तानी सेना ध्वस्त हो गयी। अब पाक सेना के सामने आत्मसमर्पण करने के अतिरिक्त और कोई रास्ता शेष नहीं बचा। विवश एवं हारकर १६ दिसंबर १९७१ को पाकिस्तानी सेना के कमांडर जनरल ए ऐ के नियाजी ने समस्त आयुद्ध हथियारों और ९० हजार सैनिकों के साथ भारतीय सेना के कमांडर जनरल स. जगजीत सिंघ के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया। इस प्रकार *'मनि जीतै जगु जीतु'* आदर्श वाले जनरल जगजीत सिंघ की अगुआई में भारतीय सेना ने देश के राजनीतिक नेतृत्व के इरादों को बंगलादेश का उदय कर विश्वपटल के धरातल पर वास्तविकता को उतार दिया। इस ऐतिहासिक जीत के पश्चात भारत के सपूत जनरल स. जगजीत सिंघ का नाम घर-घर जाना-पहचाना हो गया और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर छा गया, क्योंकि उनका सर्वथा आदर्श रहा है :

देह सिवा बरु मोहि इहै सुभ करमन ते कबहूं न टरों ॥
न डरो अरि सो जब जाइ लरो, निसचै करि अपुनी जीत करों ॥

जनरल स. जगजीत सिंघ जैसे अनुशासित और उदारदिल सेना महानायक विरले ही होते हैं। भारी दबाव के बावजूद जनरल स. जगजीत सिंघ ने आत्मसमर्पण किए हुए ९० हजार पाक सैनिकों को सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान की थी, यद्यपि बंगला मुक्ति वाहिनी और स्थानीय जनता पाक सैनिकों के खून की प्यासी थी, किन्तु गुरमति आशय के अनुरूप 'तेरे भाणे सरबत्त दा भला' चाहने वाले जनरल स. जगजीत सिंघ ने किसी पाक सैनिक के शरीर पर खरोंच तक नहीं लगने दी थी। विशेष खूबियों भरे व्यक्तिगत जनरल जगजीत सिंघ 'सादा जीवन उच्च विचार' के अनुरूप अपने सहयोगी जवानों के बीच खूब घुलमिल जाते थे, किन्तु सदैव आगे आकर नेतृत्व प्रदान करने के सिद्धांत में दृढ़ विश्वास रखते थे। पद्मभूषण एवं परम विशिष्ट सेवा मेडल से सम्मानित जनरल स. जगजीत सिंघ सेना से १९७३ में सेवानिवृत्त होकर समाज-सेवा में जीवन-यापन करने लगे।

वर्ष १९८६ में जनरल स. जगजीत सिंघ भारत की राज्यसभा के लिए चुन लिए गए। दैनिक जीवन में पूर्ण ईमानदारी एवं पारदर्शिता अपनाने वाले जनरल स. जगजीत सिंघ का सादा जीवन सदैव खुली किताब की भांति रहा है, जहां लक्ष्य-प्राप्ति के लिए सीधे रास्ते पर चलकर गलत कृत्यों का खुलकर विरोध हुआ है। श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर में घटित ऑपरेशन ब्लू स्टार का विरोध करने वाले जनरल स. जगजीत सिंघ ने १९८४ के पाश्विक क्रूर कत्लेआम के पीड़ितों को न्याय एवं सहायता दिलाने का भरसक प्रयास किया था। यह भी संयोग ही है कि जनरल स. जगजीत सिंघ एवं जनरल नियाजी अविभाजित भारत के शहर क्वेटा के एक ही कॉलेज के सहपाठी रहे थे।

सेना का यह चमकता महानायक ८९ वर्ष की आयु में ३ मई २००५ को परलोकगामी हो गया, किन्तु पाकिस्तानी जनरल नियाजी द्वारा आत्मसमर्पण करने, अपनी पिस्तौल सौंपने और समझौते पर हस्ताक्षर करने के दृश्य, सम्मान की उच्च परम्पराओं का प्रतीक बन सदियों तक भारतवासियों में उत्साह और जोश भरते रहेंगे। जनरल स. जगजीत सिंघ इतिहास के ऐसे शिल्पकार हैं जिन्होंने भारत को अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर प्रतिष्ठा दिलाई है। भारत और बंगलादेश की संसद में जनरल स. जगजीत सिंघ की उत्कृष्ट राष्ट्रीय सेवाओं का स्मरण बड़े गर्व और सम्मान के साथ किया गया है। आज वे भले ही हमारे बीच सशरीर नहीं रहे किंतु जब भी भारतीय सेना के पराक्रम और शौर्य का वर्णन होगा, जनरल स. जगजीत सिंघ का स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया नाम हमेशा-हमेशा के लिए स्मरण किया जाता रहेगा।
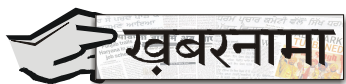
भारत के उप-राष्ट्रपति जनाब एम. हामिद अंसारी श्री हरिमंदर साहिब में नत्मस्तक हुए

अमृतसर : १२ जनवरी। भारत के उप-राष्ट्रपति जनाब एम. हामिद अंसारी श्री हरिमंदर साहिब में नत्मस्तक हुए। उनके साथ पंजाब के मुख्यमंत्री स. प्रकाश सिंघ बादल भी उपस्थित थे। श्री हरिमंदर साहिब के सूचना केन्द्र में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने उप-राष्ट्रपति तथा उनकी पत्नी श्रीमती सलमा अंसारी को श्री हरिमंदर साहिब के माडल और सिरोपा के साथ सम्मानित किया। इस अवसर पर जत्थेदार अवतार सिंघ ने 'सिख रेफ्रेंस लायब्रेरी' में से सिख धर्म से सम्बंधित हस्तलिखित धार्मिक ग्रंथों के खरड़े और अन्य दुर्लभ पुस्तकें, जो जून १९८४ के साके के दौरान भारतीय फौज उठाकर ले गई थी, वापिस करने, फ्रांस में सिख बच्चों को स्कूलों में दस्तार सजाने पर लगाई पाबंदी हटाने के लिए योग्य कार्यवाही करने, अलग-अलग देशों में बसते सिखों के प्रतिनिधियों के रूप में शिरोमणि कमेटी के लिए १० सदस्य नामजद करने और शिरोमणि कमेटी के अध्यक्ष तथा अन्य पदाधिकारियों का कार्यकाल ढाई वर्ष किए जाने के लिए एक मांग-पत्र भी पेश किया।

इस अवसर पर पंजाब सरकार के मंत्री साहिबान के अलावा राज्य सभा सदस्य स. तरलोचन सिंघ, स. राजमोहिंदर सिंघ मजीठा एवं शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के सदस्यगण, सचिव स. दलमेघ सिंघ, स. जोगिंदर सिंघ तथा अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

शिरोमणि कमेटी विद्या के प्रसार के लिए बड़े साधन जुटाएगी : जत्थेदार अवतार सिंघ

चंडीगढ़ : २ फरवरी। विद्या के बिना मनुष्य अधूरा है और ज्ञान-विहीन मनुष्य देश, कौम या धर्म की उन्नति के लिए योगदान नहीं डाल सकता। इसलिए भविष्य के वारिसों को विद्या देने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी विद्या के प्रसार के लिए अपने सारे साधन लगा रही है। इन विचारों का प्रकटावा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने स्थानीय कलगीधर निवास की बेसमेंट में श्री गुरु ग्रंथ साहिब विश्व यूनीवर्सिटी (फतेहगढ़ साहिब) के योजना विंग के उद्घाटन के पश्चात एक प्रेस विज्ञप्ति में किया।

उन्होंने कहा कि शिरोमणि कमेटी ने गत दो वर्षों में पंजाब भर में लगभग तेरह उच्च स्तर के स्कूल स्थापित किए हैं, जो सफलतापूर्वक चल रहे हैं। उन्होंने बताया कि आज यूनीवर्सिटी के योजना विंग की आरंभता की गई है, जहां प्रोजेक्ट इंजीनियर, डीन अकादमिक, असिस्टेंट डीन अकादमिक, प्रशासनिक अधिकारी, वित्त अधिकारी, लेखाधिकारी और उनका सहयोगी स्टाफ बैठकर यूनीवर्सिटी के कामकाज की देखभाल कर सकेंगे। इस अवसर पर यूनीवर्सिटी के उप-कुलपति डॉ जसबीर सिंघ ने जानकारी देते हुए बताया कि नवनिर्मित इस काम्पलेक्स में

यूनीवर्सिटी के योजना विंग से सम्बंधित सारे अधिकारी एवं कर्मचारी आधुनिक सुविधाओं सहित अपने-अपने कार्य निभाएंगे। उन्होंने कहा कि इस सम्बंध में विदेशों की उच्च-स्तरीय शिक्षण संस्थाओं के साथ तालमेल जारी है और अगले वर्ष विदेशों में भी यूनीवर्सिटी के केंद्र चालू हो जाएंगे।

रेड क्रास द्वारा आयोजित कैंपों में भ्रातृत्व-भाव पैदा होता है : स. जोगिंदर सिंह

अमृतसर : २ फरवरी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक ने गुरुद्वारा प्रबंध के साथ-साथ विद्या तथा स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी अहम कदम उठाए हैं तथा इसके प्रबंध अधीन शिक्षण संस्थाओं में पढ़ते बच्चों को अकादमिक विद्या के साथ-साथ बुद्धि एवं शारीरिक विकास के लिए भाषण प्रतियोगिता, कुइज, ड्राइंग, संगीत तथा सभ्याचारक मुकाबले भी कराए जाते हैं और रेड क्रास द्वारा आयोजित किए जाने वाले कैम्प में भी शमूलियत की जाती है। इन विचारों का प्रकटावा शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के सचिव स. जोगिंदर सिंह ने श्री गुरु नानक गर्ल्स सीनियर सेकंडरी स्कूल, टाऊन हाल को इंडियन रेड क्रास सोसायटी द्वारा 'माडल रेड क्रास स्कूल' चुनने पर आज इसके उद्घाटनी समारोह दौरान एकत्र जनसमूह को संबोधित करते हुए किया। उन्होंने कहा कि रेड क्रास द्वारा आयोजित कैंपों के दौरान जहां विद्यार्थियों को जरूरतमंदों की सहायता किए जाने की शिक्षा मिलती है वहां विद्यार्थियों में आपसी प्रेम-प्यार भी बढ़ता है। इस अवसर पर पंजाब रेड क्रास चंडीगढ़ के राज्य सचिव श्री वी. के. पुरी ने कहा कि इस स्कूल द्वारा रेड क्रास कैंपों के समय की गई शानदार प्राप्तियों का सदका ही इंडियन रेड क्रास सोसायटी द्वारा 'मॉडल रेड क्रास स्कूल' चुना गया है। यह ज्ञात हो कि 'मॉडल रेड क्रास स्कूल' के रूप में चुने गए स्कूलों में इंडियन रेड क्रास फस्ट-एड सोसायटी द्वारा एक फस्ट-एड बाक्स तथा एक बेड मुहैया किया जाता है। स्कूल के एक अध्यापक जिसने 'फस्ट-एट' तथा 'होम नर्सिंग' की ट्रेनिंग प्राप्त की हो, को विद्यार्थी मेडिकल सेवाओं के लिए इंचार्ज नियुक्त किया जाता है। ऐसे स्कूलों को रेड क्रास सोसायटी वर्ल्ड रेड क्रास डे, भाई घनईया जी डे, एच. आई. वी. डे और जागरूकता के लिए कैंप आदि आयोजित किए जाने की सूचना मुहैया करती है और इन कैंपों में मुकाबलों के लिए माडल स्कूलों के बच्चों को शामिल करने के प्रबंध करती है।

८२ वर्षीय महिला ने मरणोपरांत कइयों को जीवन दिया

२९ जनवरी २००९ के अजीत (पंजाबी) समाचार पत्र में प्रकाशित समाचार के अनुसार नयी दिल्ली की ८२ वर्षीय बजुर्ग महिला ज्ञानंत कौर के परिवार ने उसके मरणोपरांत शरीर के अंग दान करके कइयों को जीवन-दान दिया है। इतनी बड़ी आयु में शरीर के अंग दान करने वाली वे देश की प्रथम महिला हैं। गुरपुरवासी लेफ्टिनेंट स. तरलोक सिंह की विधवा ज्ञानंत कौर की मृत्यु उपरांत कल उसका लीवर एक सैनिक अधिकारी के पिता, जिनका लीवर दूषित हो चुका था, में परिवर्तित किया गया। इसी तरह दो मरीजों को माता जी की आंखों से प्रकाश मिला है।